अंक : 95
(अक्तूबर-दिसम्बर, 2001)

राजभाषा भारती

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

राजभाषा भारती

वर्ष : 23 अंक : 95
दिसम्बर, 2001
निःशुल्क वितरण के लिए

संपादकीय

राजभाषा भारती का अक्तूबर-दिसम्बर, 2001 अंक अपने सुधी पाठकों को प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। विभाग का सर्वदा यह प्रयास रहा है कि राजभाषा भारती में ज्ञान-विज्ञान के अर्वाचीन और अत्याधुनिक विषयों पर लेखों का संकलन किया जाए। वर्ष 2000 में राजभाषा स्वर्ण जयंती विशेषांक के प्रकाशन के बाद राजभाषा भारती के सभी प्रकाशित अंकों पर हमें अपने पाठकों के सुझाव और प्रतिक्रियाएं बराबर प्राप्त होती रही हैं। पाठकों से प्राप्त सुझावों से निश्चित ही हमारा उत्साहवर्धन हुआ है।

प्रस्तुत अंक में विज्ञान, मानविकी और साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लेख संकलित किए गए हैं। श्री हरिकृष्ण निगम का लेख "भयंकर जैविक युद्ध के संभावित अस्त्र" में लेखक ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि किस प्रकार अनुत्तरदायी और क्रूर आतंकवादी रासायनिक या जैविक एजेंट की मार द्वारा दुनिया के किसी भी कोने में मृत्यु या विनाश का तांडव थोप सकते हैं । डा. शाम सुंदर का लेख 'गुर्दे का खराब होना और उसके निदान' अत्यधिक ज्ञानवर्धक है। बीमारी के कारणों का निरूपण करते हुए लेखक ने बताया है कि प्रत्यारोपण ही इसका स्थायी इलाज है। बीमारी को जड़ से तो नहीं उखाड़ा जा सकता परन्तु 'भोजन नियंत्रण' और 'डायलिसिस' से जीवनकाल को बढ़ाया जा सकता है।

डा. अमर सिंह वधान के लेख "डिजिटल सूचना प्रणाली: स्वरूप और अनुप्रयोग" में यह उल्लेख किया गया है कि डिजिटल सूचना प्रणाली में हम त्वरित सूचना के माध्यम से अपने उत्पाद की बिक्री, अपने सहयोगियों की गतिविधियों और अपने ग्राहकों की समस्याओं आदि के बारे में तेजी से अपनी प्रतिक्रिया जाहिर कर सकते हैं। डा. सुशीला गुप्ता के लेख "साहित्य की राहें" में लेखिका ने इस तथ्य को उजागर किया है कि रचनाकार अपने समय

3899 HA/2001—1

की धड़कन पहचानता है और समाज तथा देश की परिस्थितियों के अनुसार अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने की भूमिका अदा करता है।

डा. (श्रीमती) बिनय राजाराम का लेख ''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल'' में लेखिका ने निज भाषा को महत्व देते हुए यह निरूपित किया है कि भाषा किसी देश की अस्मिता की द्योतक होती है। उनका मत है कि हिंदी सहज, ग्राह्य और वैज्ञानिक भाषा है जो भारत जैसे विशाल देश में आसानी से सम्पर्क भाषा का काम कर सकती है। ज्योतिभाई के लेख ''हिंदी में विज्ञान कथा साहित्य'' में यह सिद्ध किया है कि इन कथाओं में कल्पना की उड़ान जरूर हो सकती है लेकिन यह कल्पना वैज्ञानिक नियमों की अवहेलना नहीं करती। ये कथाएं आमतौर पर विज्ञान को आधार बनाकर लिखी जाती हैं। ये कथाएं अत्यधिक रोमांचक और रोचक होती हैं।

डा. त्रिभुवन नाथ शुल्क के लेख ''तुलसी का मूल बोध : विश्वास, श्रद्धा और मंगल के साक्ष्य पर'' में लेखक ने तुलसी के मूल्य-बोध की चर्चा करते हुए यह उल्लेख किया है कि भारतीय भाषाओं में बहुत कम रचनाकार ऐसे हैं जिन्होंने मूल्यों को ग्रहण करने और अपनी रचना के माध्यम से उन्हें समाज में प्रतिष्ठित किया है।

गणेश ताम्रकर का लेख ''भारतीय ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य धरोहर वास्तुशास्त्र'', प्यारेलाल श्रीमाल ''सरस पंडित'' का लेख ''लोक संगीत : लक्षण एवं स्वरूप तथा दीपक कुमार अज्ञात का लेख ''''जीव और प्राणी के उद्‌भव और विकास में पर्यावरण का योगदान'' अत्यधिक सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक हैं।

प्रस्तुत अंक में राजभाषा संबंधी गतिविधियों का भी समावेश किया गया है।

हमारा विश्वास है कि हमें अपने पाठकों से नियमित रूप से प्रतिक्रियाएं और उनके सुझाव प्राप्त होते रहेंगे, जिनसे हम राजभाषा भारती के आगामी अंकों को अधिक उपयोगी, पठनीय और ज्ञानवर्धक बनाने में सक्षम हो सकेंगे।

उप संपादक :
(सुरेंद्र लाल मल्होत्रा)
दूरभाष : 4698054

संपादक :
(विजय पी. गोयल)
दूरभाष : 4617807

(पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

पत्र-व्यवहार का पता :

संपादक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, लोकनायक भवन (दूसरा तल) खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

राजभाषा भारती

अंक-95 (अक्तूबर-दिसम्बर, 2001)

विषय-सूची

क्रम सं.	लेख	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	भयंकर जैविक युद्ध के संभावित अस्त्र	हरि कृष्ण निगम	1
2.	गुर्दे का फेल होना और उसके निदान	डा. शाम सुंदर	6
3.	डिजिटल सूचना प्रणली : स्वरूप और अनुप्रयोग	डा. अमर सिंह वधान	15
4.	साहित्य की राहें	डा. सुशीला गुप्ता	20
5.	निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल	डा. (श्रीमती) बिजय राजाराम	25
6.	हिंदी में विज्ञान कथा साहित्य	ज्योतिभाई	30
7.	तुलसी का मूल्यबोध : विश्वास, श्रद्धा और मंगल के साक्ष्य पर	डा. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	31
8.	भारतीय ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य धरोहर: वास्तु शास्त्र	गणेश ताम्रकर	45
9.	लोक संगीत : लक्ष्य एवं स्वरूप	डा. प्यारेलाल श्रीमाल ''सरस पंडित''	52
10.	जीव और प्राणी के उद्‌भव और विकास में पर्यावरण का योगदान	दीपक कुमार अज्ञात	58
	राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां		
i	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें		65
ii	हिंदी कार्यशालाएं		68
iii	लीला हिंदी प्रवीण साफ्टवेयर का प्रमोचन		72
iv	राजभाषा संगोष्ठी		73
v	शान्ति निकेतन में 14वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन		74
vi	हिंदी दिवस,सप्ताह,पखवाड़ा		76
vii	मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों और संस्थाओं आदि द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाएं		76
viii	इंटरनेट साइट में हिंदी भाषा का प्रचार		79
ix	आदेश-अनुदेश		83
x	पाठकों के पत्र		84

भयंकर जैविक युद्ध के संभावित अस्त्र

—हरि कृष्ण निगम

आज जहां अफगानिस्तान पर अमेरिका के लड़ाकू विमानों द्वारा विस्फोटों के साथ जैसे एक ज्वालामुखी लावा उगल रहा है वहां अनामी आतंकवादियों की धीरे-धीरे सुलगने वाली रणनीति प्रतिकार के रूप में रासायनिक-जैविक युद्ध की छिटपुट शुरुआत कर रही है। इस दहशत के असली रूप का अनुमान अभी सामान्य जनता को नहीं है पर ऐसे आसार नजर आते हैं कि अनुत्तरदायी और क्रूर आतंकवादी रासायनिक या जैविक एजेन्ट की मार द्वारा दुनिया के किसी भी कोने में मृत्यु या विनाश का ताण्डव थोप सकते हैं।

वैसे रासायनिक अस्त्रों के प्रयोग के कई उदाहरण हैं पर जैविक अस्त्रों का प्रयोग बड़े पैमाने पर नहीं किया गया है। उनके उपयोग के अब तक इक्के-दुक्के उदाहरण ही मिले हैं। आतंकवादियों की कूटनीतिक दृष्टि से जैविक अस्त्र ज्यादा उपयोगी सिद्ध होंगे क्योंकि उनका निर्माण कम खर्च में किया जा सकता है। साथ ही साथ उनका पहचान में आना मुश्किल होता है और उनकी थोड़ी सी मात्रा का उपयोग काफी प्रभाव डालता है और दहशत फैला सकता है। जैविक अस्त्र एक आदमी से दूसरे आदमी में अथवा एक पशु से दूसरे पशु तक अथवा एक पौधे से दूसरे पौधे में स्वत: फैल सकता है और दहशत की एक शृंखला बना देता है। यही कारण है कि आज अमेरिका ऐसी कुछ घटनाओं के बाद अपने को अत्यन्त असुरक्षित महसूस कर रहा है।

आखिर जैविक युद्ध के उपकरण क्या हैं, इस विषय पर आज के चर्चित ऐन्थ्रैक्स के अलावा इनका एक पूरा संसार है। वैसे जैविक-युद्ध के कुछ एजेन्ट और उनकी विशिष्टताओं की चर्चा होती है जबकि 160 ऐसे संक्रामक रोगों का ज्ञान उपलब्ध है जो मनुष्य पर आक्रमण कर सकता है। ये रोग अनेक प्रकार के सूक्ष्म, एक-कोशीय, जीवाणुओं, विषाणुओं अथवा रोगाणुओं से पैदा होते हैं और अनेक व्याधियां उत्पन्न करते हैं। ये रोगाणु जैविक युद्ध के वाहक बन सकते हैं।

जिन जीवाणुओं से हम परिचित भी हैं उनकी नस्ल बदलने और अधिक तीव्रता से रोगजनक बनाने का काम वैज्ञानिक कर सकते हैं। लगभग सभी जीवाणुओं को अनेक किस्म के उप-वर्गों में पैदा किया जा सकता है और प्रत्येक वर्ग के जीवाणुओं के गुण अलग-अलग होते हैं। अनेक बीमारियों के टीके इसी विधि से तैयार किए जाते हैं। कमजोर स्ट्रेनों को अधिक शक्तिशाली बना कर ही अनेक संक्रामक बीमारियों से छुटकारा दिलाया जाता है। कमजोर जीवाणुओं को शक्तिशाली

बनाने की यही प्रक्रिया इस तरह दोहराई जाती है कि उनका उपयोग जैविक युद्ध में किया जा सके।

उदाहरण के लिए 'पोलियोमायोलेटिस' पैदा करने वाला विषाणु इतना शक्तिशाली बनाया जा सकता है कि वह बड़े पैमाने पर लोगों को अशक्त कर दे। इसी तरह अनेक दूसरे रोगाणुओं को भी शक्तिशाली बना कर रोग उत्पन्न करने में लगाया जा सकता है। 1959 में ही प्लेग पैदा करने वाले जीवणु 'पास्च्युरेला पेस्तिस' की 140 किस्में मालूम हो चुकी थीं। यही एक उदाहरण यह सिद्ध करता है कि 140 किस्म का प्लेग जनता पर बरसाया जा सकता है।

सूक्ष्म-जैविकीविद् (माइक्रोबायलोजिस्ट)जीवाणुओं अथवा विषाणुओं के प्रकार आसानी से बदल सकने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। सूक्ष्म-जीवाणुओं के गुणों को बदलने की अनेक विधियां विकसित की गई हैं। जैविक अस्त्र कितने प्रभावशाली ढंग से मनुष्य को हानि पहुंचा सकते हैं यह तीन बातों पर निर्भर है—रोग पैदा करने के लिए अनिवार्य जीवाणुओं की संख्या, मनुष्य पर जैविक अस्त्र का चिकित्सीय प्रभाव और संक्रामक रोग फैलाने की अस्त्र की क्षमता।

वैसे तो किसी एजेन्ट का केवल एक जीवाणु सन्दूषण उत्पन्न करने के लिए काफी है। केवल एक जीवाणु खरगोश में चेचक पैदा कर सकता है। इसी तरह केवल एक जीवाणु आदमी में क्यू-ज्वर पैदा कर सकता है। प्लेग के लिए 3000 और ऐन्थ्रैक्स के लिए 20,000 जीवाणु अनिवार्य हैं। व्यक्तियों में उनके स्वास्थ्य को देखते हुए कम या ज्यादा संख्या में जीवाणुओं की जरूरत पड़ सकती है।

इसके अलावा जीवाणुओं के शरीर में प्रवेश की विधि भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए 'बाट्यूलिनस टाक्सिन' मानव-शरीर में दो तरीकों से पहुंच सकता है—सांस द्वारा और भोजन द्वारा। यह जीवाणु जब सांस लेने पर शरीर के भीतर पहुंचता है तब दूसरी विधि की अपेक्षा 1000 गुना अधिक सन्दूषणजनक होता है। आज लगता है आतंकवादियों ने जैविक युद्ध में प्रयुक्त एजेन्टों का चुनाव बहुत सोच-समझ के किया है। स्पष्ट है कि ऐसे किन्हीं भी जीवाणुओं का उपयोग वे नहीं करना चाहेंगे जिनके कारण महीनों में रोग लक्षण उत्पन्न हों और वर्षों बाद रोग का पूरा प्रभाव पड़े। जैविक आतंकवाद के कुशल खिलाड़ी इसीलिए तत्काल प्रभाव वाले ऐन्थ्रैक्स जैसे पदार्थ का प्रयोग कर रहे हैं जिसमें भय पैदा हो। इसी कारण हैजा जैसी बीमारियों के जीवाणुओं का उपयोग जैविफ-आतंकवाद में नहीं हो सकता है क्योंकि वे केवल भोजन द्वारा शरीर में पहुंचते हैं।

असली प्रश्न यह है कि जैविक युद्ध के लिए चुने गए एजेन्ट में बड़े स्तर पर संक्रामक रोग उत्पन्न करने की क्षमता है या नहीं । फिर चाहे रोग एक आदमी से दूसरे आदमी तक फैले, चाहे

दूसरे जन्तुओं के द्वारा। संक्रामक रोगों के फैलने की प्रक्रिया की जानकारी विशेषज्ञों के पास है पर जनता इससे सामान्य रूप से अनभिज्ञ है।

जीवाणु रोगों में आंगार व्रण बैसिलस ऐन्थ्रैसिस नामक जीवाणु के द्वारा सांस द्वारा या इसके त्वचा के छूने से होता है और श्वास प्रणाली के लिए घातक होता है और इसकी जैविक युद्ध में उपयोगिता हो सकती है। इसी तरह प्लेग में पास्च्युरेला पेस्तिस जीवाणु सांस, भोजन या पिस्सुओं द्वारा होता है और भयानक प्रभावकारी होता है और आतंकवादी इससे न्यूमोनियाजनक प्लेग फैला सकते हैं।

विषाणु रोगों के वर्ग में डेंग्यू विषाणु द्वारा हड्डी-तोड़ बुखार फैलाया जा सकता है जिसका संचार सांस में भीतर पहुंचे या मच्छर के डंक मारने पर होता है। इसी तरह पोलियोमाइलेटिस भोजन द्वारा या नम हवा में सांस लेने से होता है और स्थायी रूप से रोगी को अशक्त बना सकता है और कभी-कभी घातक भी होता है। चेचक का रोग 'पाक्सवाइरस वैरिओली' के जीवाणुओं से सांस या भोजन द्वारा फैलता है और भयानक असर करता है। सूखा रोगों के वर्ग में क्यू-फीवर काक्सियल बनेटी नामक जीवाणु द्वारा सांस या भोजन द्वारा और लगभग एक सप्ताह तक रोगी को ज्वर से पीड़ित करता है। रोग वर्ग के अन्तर्गत 'बाट्यूलिनम' नामक रोग 'क्लास्ट्रीडियम बाट्यूलिनम' नामक जीवाणु सांस या भोजन द्वारा फैलता है और भयानक विष फैलाने वाला है और मृत्यु दर 70 प्रतिशत तक हो सकती है। जैविक युद्ध में इसका उपयोग अत्यधिक है। ये केवल कुछ ही प्रमुख रोग हैं, जबकि वैज्ञानिकों को आज लगभग 200 से अधिक संक्रामक रोगों का ज्ञान है जो मनुष्य को प्रभावित करते हैं। कोई संक्रामक रोग-जनक रोगाणु अपने लक्ष्य में कितना सफ़ल होता है इसकी सम्भावना क्योंकि सुरक्षा विशेषज्ञ जानते हैं इसलिए पश्चिमी विश्व में भय का माहौल है। उदाहरण के लिए अमेरिकी पत्र 'साइंस इलेस्ट्रेटेड' में कुछ दिनों पहले यह सूचना प्रकाशित की गई थी कि 'बॉट्यूलिनस टाक्सिन' नामक एक रसायन की एक इंच घन की मात्रा अमेरिका और कनाडा की सारी जनसंख्या का विनाश करने को पर्याप्त है। यह स्वीकार किया जा रहा है कि रासायनिक-जैविक युद्ध भविष्य का प्रलयंकर युद्ध है।

आज अमेरिका में ऐन्थ्रैक्स के भय से व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य परीक्षण हो रहे हैं और अनेक लोग सिर्फ सन्देह में ही एन्टीबायटिक दवा भी ले रहे हैं जो उनके स्वास्थ्य पर असर डाल सकता है। साथ ही पूरी की पूरी नई शब्दावली भी सामने आ रही है जिनमें अस्त्रों के स्तर के जीवाणु—वेपन्स ग्रेड माइक्रोब—आनुवांशिकी उत्प्रेरित जीवाणु—जेनेटिकली इन्जीनियर्ड—दवाओं के प्रभाव से मुक्त बैक्टीरिया—ड्रग रेजिस्टेन्ट बैक्टीरिया—आदि आदि हैं। कुछ भी हो आज के विश्वव्यापी माहौल ने सिद्ध कर दिया है कि अनेक वैज्ञानिक खोजों के बावजूद जैवकीय युद्ध के भय से मनुष्य कितना असहाय या असुरक्षित महसूस कर सकता है।

अमेरिका में इस अनिश्चितता की दिनचर्या में डाक-व्यवस्था के अंस्तव्यस्त होने के साथ-साथ मीडिया और समाचारपत्रों के कार्यालयों में भी हड़कम्प मची हुई है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को डाक की आवाजाही के 'मेल रूम' इस तरह देखें जा रहे हैं जैसे उनमें विस्फोटक हों।

आज रासायनिक एवं जैविक हथियारों के प्रयोग को उत्तर-आधुनिक युग के शस्त्रास्त्र कहा जा रहा है। सन् सत्तर से शुरू होने वाले दशक में यूरोप में चेचक की महामारी फैली थी जबकि उस समय तक यह रोग मात्र एशियाई और अफ्रीकी देशों में सामान्य माना जाता था। सन् 1979 में एक रूसी जैविकीय प्रयोगशाला में ऐन्थ्रैक्स के विषाणु एक दुर्घटनावश फैल गए थे। 1989 से 1995 के बीच लगभग तीन बार टोक्यो और वहां के अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर बोट्यूलिनम नामक विषाणु से दहशत फैलाने के लिए हमले किए गए थे। बोट्यूलिनम से बोट्यूलिज्म नामक रोग पैदा होता है जिसमें सांस लेने की पेशियों को लकवा मार जाता है और व्यक्ति की 24 घन्टे के अंदर मौत हो जाती है। ऐन्थ्रैक्स और बोट्यूलिनम के अलावा प्लेग, चेचक, इन्फ्लुएंजा और ज्वर भी व्यापक रूप से जनसंख्या में फैल जाता है। इन नए आतंकवादी खतरों से निपटना सरल नहीं है क्योंकि यह बहुआयामी है। अमेरिका में ऐन्थ्रैक्स को डाक द्वारा फैलाया जा रहा है। इन के पीछे जो गिरोह है उनका न कोई ठिकाना हो सकता है और न ही वे भौगोलिक या राजनीतिक सीमाओं से बंधे हैं। इसीलिए आतंकवाद का यह बदला रूप काफी भयावह माना जा रहा है।

हाल में वाशिंगटन स्थित कैपिटल हिल का अमेरिकी संसद भवन पांच दिनों के लिए बन्द कर दिया गया। सिनेटर टाम डाश्ले के स्टाफ के दो दर्जन से अधिक लोगों पर ऐन्थ्रैक्स से प्रभावित होने का शक हुआ। अमेरिकी प्रजातंत्र के हृदय का यह भवन खाली करा लिया गया और अमेरिकी सीनेट की सारी कार्रवाई अवरुद्ध हो गई। डाक से भेजा हुआ यह ऐन्थ्रैक्स रसायन घातक था और इसके स्रोत की खोज सरगर्मी से हो रही है।

जैव आंतकवाद आज अमेरिका की सर्वोच्च प्राथमिकता बन चुका है। यद्यपि निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा रहा है कि यह दहशत बिन-लादेन के नेटवर्क द्वारा फैलाई गई है। 11 सितम्बर 2001 के हादसे के बाद राष्ट्रपति बुश ने मंत्रिमंडल के सदस्य के स्तर का एक नया पद स्थापित किया है जिस पर टॉम रिज है और वे व्हाइट हाउस के साथ-साथ अन्दरूनी सुरक्षा के निदेशक भी हैं। वे संदिग्ध लोगों की जांच काफ़ी सरगर्मी से करवा रहे हैं। जैव आतंकवाद के विरुद्ध अब चिकित्सकीय युद्ध चालू है जिससे अनेक वैज्ञानिक भी जुड़े हुए हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को नए सिरे से बदल कृमि-आक्रमण से निपटने के लिए कोशिशें हो रही हैं। प्रभावित लोगों को संक्रामक रोगों से अन्य लोगों को बचाने के लिए पृथक रखने के अलावा आवश्यक दवाओं के भण्डारण की व्यवस्था भी व्यापक रूप से की जा रही है। ऐन्थ्रैक्स और चेचक के लिए यूरोप के साथ-साथ अब भारत से भी अमेरिका उपयुक्त दवाओं को भारी मात्रा में आयात कर सकता है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि ऐन्थ्रैक्स के अलावा दूसरे अनेक

संक्रामक विषाणु भी हैं जिनके लिए कार्यशालाओं में अभी भी विशेष दवाइयां विकसित और व्यावसायिक स्तर पर प्रयुक्त होना बाकी है। पेन्टागन के सलाहकार पैनल के एक अनुमान के अनुसार सिर्फ आठ तरह की वैक्सीनों को अन्तिम रूप देने और बाजार में लाने के लिए तीन बिलियन डालर खर्च करने होंगे। यह तो वे खतरे हैं जिनकी अपेक्षा हो रही है पर इसके अलावा दूसरे अनामी और अप्रत्याशित खतरे भी हैं जिनको जैव-युद्ध के दौरान महसूस किया जा रहा है पर खुलकर चर्चा नहीं हो रही है। यह नया प्रतिरक्षा युद्ध बायोटेक्नोलाजी व जेनोमिक्स के द्वारा सूक्ष्मतम विषाणुओं के अध्ययन से किया जाएगा।

हार्वार्ड मेडिकल स्कूल के वैज्ञानिकों के एक समूह ने एक ऐसे परिवर्तनीय 'जीन' की खोज की है जिससे ऐन्थ्रैक्स के विषाणु या 'टाक्सिन' नियंत्रित किए जा सकते हैं। पर यह सब अभी शोध के स्तर पर है। इसलिए अमेरिकी प्रशासन बड़े स्तर पर कर पाएगा इस विषय पर कुछ कहा नहीं जा सकता है। जैवकीय हमले में 'पैथोजन' को कैसे पहचाना जाए इस पर भी अन्तिम रूप से शोध पूरा नहीं हुआ है। अब 'पेन्टागन' ने स्वयं इस शोध पर रुचि दिखाते हुए अनेक संगठनों को सहायता देना शुरू किया है। आधुनिक सुरक्षा शोध एजेंसी परियोजना—डिफेंस एडवान्स्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेन्सी—के अन्तर्गत गोपनीयता के पर्दे में अनेक शोध कार्य चल रहे हैं। चिन्ता का विषय यह है कि जब तक इन जीवणुओं के चिह्न रोगी पर प्रकट होते हैं तब तक यह भयावह संक्रामक रोग लाइलाज हो जाता है। स्टैनफोर्ड, मिचिगन, मोनटाना, केलिफोर्निया और न्यूयार्क एक विश्वविद्यालयों से जुड़े अनेक शोध संस्थानों की और अमेरिकी सरकार बड़ी उत्सुकता से नज़र लगाए हुए है क्योंकि जैविकीय और रासायनिक हमलों के विरुद्ध उन्हीं से हल सामने रखने की अपेक्षा की जा रही है।

पर इस बीच अमेरिकी सरकार ने आवश्यक एन्टीबायटिक दवाओं की एक करोड़ खुराक खरीदने की पेशकश की है जिससे वह एक करोड़ से अधिक लोगों को कम से कम कुछ दिनों तक इलाज कर सके। सरकार ने चेचक की चालीस लाख खुराकें दो वर्ष पहले ही तैयार करने के आदेश दिए थे। लगातार संदिग्ध डाक की चेतावनियों से सामान्य जनजीवन में एक अव्यक्त आशंका का माहौल है।

61, जीवन आकाश, फोरजेट हिल, दीनानाथ मंगेशकर मार्ग, मुंबई-36

3899 H.A./2001—2A

गुर्दे का फेल होना और उसके निदान

—डा. शाम सुंदर

गुर्दे क्या होते हैं ?

आमतौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में दो गुर्दे होते हैं। ये सेम के आकार के होते हैं और हमारी रीढ़ की हड्डी के दोनों ओर लघुकुटि के ऊपर की तरफ स्थित होते हैं। प्रत्येक गुर्दे की लम्बाई 10 से 12 सेंटीमीटर और भार 160 ग्राम के लगभग होता है।

गुर्दे के मुख्य कार्य

(1) गुर्दे हमारे रूधिर को लगातार 24 घंटे साफ करने का कार्य करते हैं।

(2) वे विषैले पदार्थों तथा व्यर्थ और अतिरिक्त पानी को पेशाब के रास्ते बाहर निकालते हैं।

(3) वे अम्ल, पोटाशियम और सोडियम जैसे रसायनों का संतुलन हमारे रक्त में बराबर बनाए रखते हैं।

(4) वे अतिरिक्त अम्ल को निकाल देते हैं।

(5) वे हार्मोन उत्पन्न करते हैं और लाल रक्त कोशिकाएं बनाने में अस्थिमज्जा की सहायता करते हैं।

(6) वे हमारे शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाते हैं जिसके लिए वे केल्शियम और फास्फेट का संतुलन बनाए रखते हैं।

(7) वे हमारे शरीर के रक्त चाप को नियंत्रण में रखते हैं।

विषैले या व्यर्थ पदार्थ क्या हैं ?

हम जो भोजन करते हैं उसमें कुछ न कुछ प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और फैट्स की मात्रा होती है। कार्बोहाइड्रेट और फैट्स रासायनिक क्रिया के बाद कार्बन डायक्साइड और पानी में परिवर्तित होकर फेफड़ों के माध्यम से हमारे शरीर से बाहर निकल जाते हैं। जब शरीर अपनी आवश्यकता के अनुसार भोजन ले लेता है तो व्यर्थ पदार्थ रक्त में चले जाते हैं। यदि गुर्दे इन व्यर्थ पदार्थों अर्थात् यूरिया आदि जैसे विषैले पदार्थों को रक्त से बाहर नहीं निकाल पाते तो वे रक्त में इकट्ठा होने लगते हैं और शरीर को क्षतिग्रस्त करने लगते हैं।

3899 H.A./2001—2B

रक्त को छानने की वास्तविक प्रक्रिया हमारे गुर्दों के भीतर छोटी-छोटी इकाइयों में होती हैं जिन्हें नेफ्रान्स कहते हैं। एक गुर्दे में लगभग एक लाख नेफ्रान्स होते हैं। नेफ्रान्स अक्सर किसी भी बीमारी के कारण विषाक्त हो जाने से बहुत जल्द क्षतिग्रस्त हो जाते हैं जिससे उनकी छानने की क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है और यूरिया तथा क्रिटिनाइन जैसे विषैले पदार्थ रक्त में जमा होने लगते हैं।

गुर्दे क्यों फेल होते हैं ?

गुर्दे से होने वाली ज्यादातर बीमारियां नेफ्रान्स को प्रभावित करती हैं जिससे उनकी छानने की क्षमता कम होने लगती है। नेफ्रान्स अक्सर विभिन्न बीमारियों के लगने या विषाक्त हो जाने से बहुत जल्दी क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। परन्तु गुर्दे की अधिकांश बीमारियां नेफ्रान्स को धीरे-धीरे और सहजता से क्षतिग्रस्त कर देती हैं। गुर्दे की बीमारी के दो आम कारण हैं—मधुमेह और उच्च रक्तचाप। इसके अलावा यदि आपके परिवार में किसी को गुर्दे की कोई बीमारी रही हो तो आपको भी गुर्दे की बीमारी होने का खतरा हो सकता है। आमतौर पर रोजमर्रा ली जाने वाली कुछेक दवाइयां यदि लम्बे समय तक ली जाती हैं तो वे आपके गुर्दे के लिए खतरनाक हो सकती हैं। दर्दनिवारक दवाइयां और एस्प्रीन जैसी कुछेक दवाएं गुर्दे के लिए अत्यधिक घातक हैं। यदि आप दर्द दूर करने की दवा नियमित लेते हैं तो आप अपने डाक्टर से परामर्श करके आश्वस्त हो जाएं कि कहीं आप अपने गुर्दों को खतरे में तो नहीं डाल रहे।

गुर्दे के फेल होने से क्या अभिप्राय है ?

गुर्दे फेल होने से अभिप्राय उस स्थिति से है जब गुर्दे अपना सामान्य कार्य करने में विफल हो जाते हैं। किसी व्यक्ति को स्वस्थ रखने के लिए गुर्दे का अपनी कार्य क्षमता का 20% कार्य करना पर्याप्त है। इस अवस्था में हमारे रक्त में बहुत से जहरीले पदार्थों जैसे यूरिया और क्रिटिनाइन की मात्रा बढ़ जाती है। इन जहरीले पदार्थों का रक्त से निकास होना आवश्यक होता है। रक्त में इनका स्तर बढ़ जाने से व्यक्ति में थकान, कमजोरी, भूख कम लगना और उल्टी होने जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

जब रक्त में क्रिटिनाइन की मात्रा 900 umol/L के स्तर तक पहुंच जाती है तो मरीज को डायलिसिस शुरू कर देना चाहिए।

गुर्दे फेल होने के लक्षण

गुर्दे फेल होने के सामान्य लक्षण निम्नलिखित हैं :—

(1) चेहरे का पीला पड़ना

(2) हर समय थका-थका महसूस करना

(3) सांस लेने में तकलीफ होना

(4) शरीर में खारिश होना

(5) भूख कम लगना, मिचली होना और उल्टी आना

(6) चेहरे और टांगों पर सूचन आना

(7) पेशाब का बार-बार आना और पेशाब की मात्रा कम हो जाना

(8) कमर और शरीर में दर्द होना

(9) मिरगी जैसे दौरे का आना और

(10) अंत में, मरीज का बेहोश हो जाना

इसकी पहचान है रक्त में यूरिया और क्रिटिनाइन का लगातार उच्च स्तर बने रहना (सामान्य मात्रा - रक्त यूरिया > 40 मि.ग्रा. % और क्रिटिनाइन > 0.8 से 1.2 मि.ग्रा. %)

गुर्दे फेल होने की किस्में

गुर्दे फेल होने की दो किस्में हैं :—

(1) तीव्र वृक्कीय (गुर्दे का) फेल होना

(2) शनैः-शनैः वृक्कीय (गुर्दे का) फेल होना

दस्त, आंत्रशोथ, बुखार और किसी भी इन्फेक्शन से, ज्यादा रक्त बह जाने तथा रक्तचाप कम हो जाने से पहले सामान्य रूप में कार्य कर रहे गुर्दे अचानक खराब हो जाते हैं। संभवतः यह प्रतिवर्ती स्थिति होती है जो गुर्दों में रक्त के कम बहाव, शरीर में पानी की अत्यधिक कमी, इन्फेक्शन, मलेरिया, ड्रग्स, सांप के काटने, शरीर में जहर फैलने और गर्भपात आदि जैसी विभिन्न बीमारियों के बाद आती है। इस स्थिति में व्यक्ति के शरीर में रक्त में अद्वितीय जैव रासायनिक परिवर्तन होते हैं और रोगी गंभीर रूप में बीमार हो जाता है। अधिकांश रोगियों का अचानक पेशाब बंद हो जाता है, बार-बार उल्टी आने लगती है, सांस रुक-रुक कर आता है, शरीर में सूजन आ जाती है और व्यक्ति बेहोश भी हो जाता है, आदि। अस्पताल में दाखिल 1.5% से 2% तक मरीज तीव्र वृक्कीय (गुर्दे के) फेल होने की वजह से होते हैं। अधिकांश मरीजों को 2 से 3 सप्ताह तक डायलिसिस की आवश्यकता हो सकती है और इसके बाद वे पूरी तरह सामान्य हो जाते हैं।

शनैः-शनैः वृक्कीय (गुर्दे का) फेल होना

इस स्थिति में नेफ्रान्स कई महीनों से वर्षों के बीच धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त होते हैं। आमतौर पर देखा गया है कि किसी व्यक्ति के 80% से भी अधिक गुर्दे क्षतिग्रस्त हो जाने के बाद ही उस व्यक्ति में गुर्दे खराब होने के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। मरीजों को तब तक कुछ पता ही नहीं

चलता जब तक कि गुर्दा अंतिम अवस्था तक फेल न हो गया हो। ऊपर बताए गए लक्षणों को बड़ी गंभीरता से लेना चाहिए और उस अवस्था में गुर्दे की पूरी तरह जांच आवश्यक है ताकि गुर्दे की बीमारी के कारणों का जल्द पता लगाया जाए और उसका निदान करके गुर्दे को क्षतिग्रस्त होने से बचाया जा सके।

कारण : गुर्दा मधुमेह, उच्च उक्तचाप, गुर्दे में क्रोनिक इन्फेक्शन, गुर्दे में पत्थरी होने की बीमारी, दर्द दूर करने की दवाइयों के अत्यधिक सेवन और पैतृक गुर्दा-रोग आदि जैसी बीमारियों से धीर-धीरे क्षतिग्रस्त हो जाता है। 40% से ज्यादा क्रोनिक बीमारियां मधुमेह और उच्च रक्तचाप से होती हैं। यदि इनका पूरी तरह से निदान किया जाए तो गुर्दे की बीमारियों से बचा जा सकता है।

प्रसंग

ऐसा अनुमान है कि भारत में प्रतिवर्ष 1 लाख व्यक्तियों को अंतिम अवस्था की वृक्कीय (गुर्दे) की बीमारी हो जाती है जोकि 10 लाख की जनसंख्या के पीछे 160 व्यक्तियों की दर से है।

निदान

यदि किसी व्यक्ति को गुर्दे की बीमारी प्रारम्भिक अवस्था में है तो उसे दवाइयों और कुछ अन्य परहेजों से नियंत्रित किया जा सकता है और इस प्रकार डायलिसिस को कुछ समय तक टाला जा सकता है। रोगी को चाहिए कि यदि उसे उपर्युक्त दिए गए लक्षणों में से कोई भी लक्षण दिखाई देता है तो उसे तुरंत अपने डाक्टर से सम्पर्क कर आवश्यक जांच करानी चाहिए। आमतौर पर डाक्टर सर्वप्रथम रक्त और पेशाब के नूमने प्रयोगशाला में भेजता है। जांच करने पर यदि रक्त में क्रिटिनाइन या यूरिया की मात्रा बहुत अधिक है और पेशाब में प्रोटीन है तो आपके गुर्दे काफी क्षतिग्रस्त हो चुके हैं।

अतिरिक्त टेस्ट

वृक्कीय (गुर्दे की) इमेजिंग

यदि रक्त और पेशाब के जांच परीक्षणों से यह संकेत मिलता है कि गुर्दे पूरी तरह से काम नहीं कर रहे तो आपका डाक्टर बीमारी के कारण का पता लगाने के लिए अतिरिक्त टेस्ट कराने की सिफारिश कर सकता है। जांच के लिए वृक्कीय इमेजिंग, गुर्दे का रंगीन एक्सरे, अल्ट्रासाउंड, कैट स्कैनिंग और एम.आर.आई. जैसी पद्धतियां शामिल हैं।

वृक्कीय (गुर्दे की) बायोप्सी

आपका डाक्टर माइक्रोस्कोप से आपके गुर्दे के ऊतक (टिशु) का एक छोटा सा टुकड़ा देख सकता है। इस ऊतक का नूमना प्राप्त करने के लिए डाक्टर को वृक्कीय (गुर्दे की) बायोप्सी करनी पड़ सकती है।

गुर्दे की बीमारी होने पर क्या करना चाहिए ?

बदकिस्मती से, गुर्दे की बीमारी को दूर नहीं किया जा सकता। पर, यदि गुर्दे की बीमारी प्रारम्भिक अवस्था में है तो आप कुछ कदम उठा कर गुर्दों को लम्बे अर्से तक कायम रख सकते हैं।

- यदि आप मुंधमेह से पीड़ित हैं, तो इसे नियंत्रण में रखने के लिए अपने 'ब्लड शूगर' की मात्रा पर नजर रखें।
- अपने रक्तचाप की नियमित रूप से जांच कराएं। अपने रक्तचाप को नियंत्रित रखने के लिए सर्वोत्तम दवा लेने के लिए अपने डाक्टर की सलाह लें। (इसका सामान्य स्तर है : 125/75)
- कोई भी दवा जो आपके गुर्दे को क्षतिग्रस्त कर सकती है उसका सेवन नहीं करना चाहिए। कोई भी दवा लेने से पहले अपने डाक्टर की सलाह अवश्य लें।

भोजन

जिन व्यक्तियों के गुर्दे पूरी तरह काम नहीं करते उन्हें यह जानकारी होनी चाहिए कि सामान्य भोजन में कुछ ऐसी वस्तुएं भी होती हैं जो गुर्दे को जल्दी से फेल करती हैं। इसलिए, सही भोजन लेने के लिए रोगी को अपने डाक्टर या आहार विशेषज्ञ की सलाह लेनी चाहिए।

(i) प्रोटीन

शरीर के लिए प्रोटीन बहुत आवश्यक है। यह शरीर में उत्तकों की क्षतिपूर्ति करता है। प्रोटीन ज्यादातर मीट से मिलता है। जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है स्वस्थ गुर्दे रक्त में से विषैले पदार्थ निकाल देते हैं परन्तु प्रोटीन को बने रहने देते हैं। खराब गुर्दे इन विषैले उत्पादों में से प्रोटीन अलग करने में असमर्थ रहते हैं। कुछ डाक्टर अपने मरीजों को भोजन में प्रोटीन की मात्रा कम लेने की सलाह देते हैं ताकि उनके गुर्दों को कम काम करना पड़े।

(ii) कोलेस्ट्रोल

एक अन्य कारक जो आपके गुर्दे की बीमारी को और बढ़ा सकता है वह है आपके रक्त में कोलेस्ट्रोल की अधिक मात्रा। रक्त में उच्च कोलेस्ट्रोल की मात्रा उच्च चिकनाईयुक्त भोजन लेने से होती है।

(iii) सोडियम

सोडियम एक ऐसा रसायन है जो अन्य भोजनों में मिलता है। आपके भोजन में सोडियम आपके रक्तचाप को बढ़ा सकता है, इसलिए आपको ऐसा भोजन कम करना चाहिए जिसमें

सोडियम की मात्रा बहुत अधिक हो। उच्च सोडियमयुक्त भोजनों में फ्रोजन फूड और हॉट डाग जैसे बंद डिब्बा या संसाधित फूड शामिल हैं। गुर्दे के जिन मरीजों में सूजन आ जाती है, उनको भोजन में नमक का सेवन बहुत कम करना चाहिए। ऐसे मरीजों के भोजन में सोडियम की मात्रा 2 ग्राम से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(iv) पोटाशियम

पोटाशियम एक ऐसा खजिन है जो आलू, केला, सूखे मेवों, सूखे सेब, सूखे मटर और मूंगफली जैसे फलों और सब्जियों में मिलता है। स्वस्थ गुर्दे रक्त में पोटाशियम की फालतू मात्रा को निकाल देते हैं। बीमार गुर्दे रक्त में से अतिरिकत पोटाशियम निकालने में असमर्थ रहते हैं जिससे दिल पर असर पड़ता है।

(v) अनीमिया

अनीमिया उस स्थिति को कहते हैं जब उक्त में पर्याप्त मात्रा में लाल रक्त सैल नहीं होते। ये सैल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये सारे शरीर में आक्सीजन ले जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति अनीमिया से ग्रस्त है तो उसे बहुत जल्दी थकान होगी और वह पीला दिखाई देने लगेगा। स्वस्थ गुर्दे इपीआ हार्मोन बनाते हैं जो लाल रक्त सैल बनाने के लिए हड्डियों को उद्दीपित करते हैं। यदि आपके गुर्दे क्षतिग्रस्त हैं तो वे पर्याप्त मात्रा में ईपीओ नहीं बना पाते।

पिछले एक दशक से गुर्दे फेल होने से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या लगभग दुगनी हो गई है और गुर्दे के शनैः-शनैः फेल होने के निदान में महत्वपूर्ण विकास हुआ है। गुर्दे के पूरी तरह फेल हो जाने पर डायलिसिस और गुर्दे के प्रत्यारोपण के द्वारा मरीज का जीवनकाल बढ़ाया जा सकता है। मरीज के जीवनकाल को बढ़ाने के लिए डायलिसिस एक अस्थायी आधार है। गुर्दे का डायलिसिस प्रत्यारोपण कराने में समर्थ होते हैं। यदि आपके गुर्दे पूरी तरह फेल हो जाते हैं तो आपके शरीर में अतिरिक्त पानी और विषैले पदार्थ जमा हो जाएंगे। इस स्थिति को यूरेमिया या अंतिम दौर के गुर्दे का रोग कहते हैं। यदि इसका तत्काल उपचार नहीं किया जाता तो रोगी को दौरा पड़ सकता है या वह कोमा में जा सकता है। परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो जाती है। रोग का निदान है डायलिसिस या गुर्दे का प्रत्यारोपण

डायलिसस दो प्रकार की होती है—(1) हीमोडायलिसिस (2) पेरिटोनियल डायलिसिस।

1. हीमोडायलिसिस

इस प्रक्रिया में कृत्रिम गुर्दे (हीमोडायलिसिस) की सहायता से रक्त साफ किया जाता है। हीमोडालिसिस से रक्त साफ करने के लिए एक मशीन की आवश्यकता होती है जिसे डायलिसिस मशीन कहते हैं। डायलिसिस मशीन एक तरफ से शरीर से रक्त को कृत्रिम गुर्दे से पम्प करती है और रक्त को साफ करके शरीर में वापिस भेजती है। डायलिसिस की इस प्रक्रिया से रक्त से

विषैले पदार्थ और अतिरिक्त पानी निकाल दिया जाता है। एक व्यक्ति सप्ताह में दो या तीन बार इस प्रक्रिया को अपना सकता है क्योंकि एक बार किए गए डायलिसिस का प्रभाव अस्थायी होता है।

हीमोडायलिसिस के दो विकल्प है :—

(क) गृह हीमोडायलिसिस और (ख) केन्द्र में या क्लीनिक में की जाने वाली हीमोडायलिसिस। परन्तु आमतौर पर हीमोडायलिसिस क्लीनिक में किया जाता है।

नोट : जो मरीज डायलिसिस कराते हैं उन्हें अपने भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए और ऐसा भोजन खाना चाहिए जिसमें पोटाशियम की मात्रा बहुत कम हो। पानी बहुत कम मात्रा में लेना चाहिए।

2. पेरिटोनियम डायलिसिस

पेरिटोनियल डायलिसिस द्वारा रक्त शुद्धि शरीर के अंदर होती है। इस पद्धति में पेरिटोनियल झिल्ली फिल्टर का कार्य करती है। इस चिकित्सा में एक नलिका जिसे कैथेटर कहते हैं, शल्य चिकित्सा द्वारा उदर में स्थापित की जाती है। रक्त साफ करने वाला द्रव (cleaning fluid) कैथेटर द्वारा पेरिटोनियल में प्रवाहित किया जाता है। विषैले पदार्थ और अतिरिक्त द्रव रक्त से निकल जाते हैं। ये पदार्थ पेरिटोनियल झिल्ली में से होकर रक्त शुद्ध करने वाले द्रव में पहुंच जाते हैं और बाद में इन्हें पेरिटोनियल झिल्ली में से निकाल लिया जाता है।

सीएपीडी (Continuous Ambulatory Peritoneal Membrane)

पेरिटोनियल डायलिसिस में सीएपीडी (सतत् एम्बुलटरी पेरिटोनियल डायलिसिस) सबसे सामान्य पद्धति है। इस प्रक्रिया में डायलिसिस हर रोज 24 घंटे चलता है। पेरिटोनियल मेमरेन पर्याप्त मात्रा में रक्त की आपूर्ति कर सकता है जिनमें अत्यधिक सूक्ष्म सुराख होते हैं जिनमें से विषैले पदार्थ निकाल कर फैंके जा सकते हैं। सीएपीडी में डाक्टर प्लास्टिक की एक नरम ट्यूब जिसे कैथेटर कहते हैं, नाभी के नीचे पेट में डाल देते हैं। यह ट्यूब हमेशा पेट के अंदर रहती है। इस ट्यूब के द्वारा पेरिटोनियल फ्ल्यूड (Cleaning Fluid) पेट की झिल्ली में डाला जाता है जो 6 से 8 घंटे उसमें रहने दिया जाता है। इसके पश्चात् गुरूत्वाकर्षण से इस द्रव (Fluid) को डायलिसिस थैली में शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है। 6 से 8 घंटे डायलिसिस प्रक्रिया के दौरान विषैला और अतिरिक्त द्रव पेरिटोनियल की रक्त कोशिकाओं से गुजरता हुआ पेट की झिल्ली में जाता है, जिसे बाद में शरीर से निकाल दिया जाता है। सीएपीडी की प्रक्रिया दिन में तीन से चार बार की जा सकती है।

एपीडी (Automatic Peritoneal Dialysis)

सोने से पहले पेरिटोनियल फ्ल्यूड (Cleaning Fluid) को पेट की झिल्ली में डाल कर कैथेडर को एपीडी मशीन के साथ जोड़ दिया जाता है। यह मशीन रक्त शुद्धि का कार्य करती रहती है।

गुर्दा प्रत्यारोपण

प्रत्यारोपण उपचार की एक अन्य पद्धति है। इस पद्धति द्वारा किसी स्वस्थ व्यक्ति के काम कर रहे गुर्दे को ऐसे व्यक्ति के गुर्दे में बदल दिया जाता है जिसका गुर्दा फेल हो गया हो। गुर्दे का प्रत्यारोपण सफल हो जाने पर मरीज को डायलिसिस कराने की आवश्यकता नहीं होती। गुर्दे के प्रत्यरोपण के पश्चात् व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है।

प्रत्यारोपण के लिए गुर्दे तीन स्रोतों से प्राप्त हो सकते हैं :—

1. परिवार का कोई जीवित सदस्य—पति,पत्नी, भाई, बहन आदि अपना एक गुर्दा दे सकते हैं;
2. उस व्यक्ति से जो अपनी मृत्यु के पश्चात् अपने अंगदान करने का इच्छुक हो;
3. मरीज से भावात्मक लगाव रखने वाला कोई व्यक्ति।

किसी गैर व्यक्ति द्वारा गुर्दा दान करना उपचार कानून के खिलाफ है। जो व्यक्ति अपना एक गुर्दा दान करता है वह एक गुर्दे के साथ सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है। प्रत्यारोपण की प्रक्रिया के दौरान एक स्वस्थ दान किए हुए गुर्दे को, जो मरीज के गुर्दे से मेल खाता हो, मरीज के कूल्हे की हड्डी के पास स्थापित किया जाता है। गुर्दे के फेल होने पर 'गुर्दे का प्रत्यारोपण' सबसे प्राकृतिक इलाज है। गुर्दे का सफल प्रत्यारोपण हो जाने पर मरीज को जीवन भर कुछ दवाएं लेनी पड़ती हैं ताकि जो बाहरी अंग शरीर में स्थापित किया गया है, शरीर उसे अस्वीकार न कर दे।

स्मरण रखने योग्य बातें

आपके गुर्दे शरीर के महत्वपूर्ण अंग हैं जो आपके रक्त को साफ करते हैं और शरीर में रासायनिक पदार्थों का संतुलन बनाए रखते हैं।

- गुर्दे की बीमारी की गति को कम किया जा सकता है परन्तु इसे जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता।
- अंतिम अवस्था के गुर्दे की बीमारी (ईएसआरडी) में गुर्दे पूरी तरह फेल हो जाते हैं।

- अंतिम अवस्था के गुर्दे की बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति डायलिसिस और प्रत्यारोपण से अपना जीवनकाल बढ़ा सकते हैं।
- मधुमेह और उच्च रक्तचाप गुर्दे फेल होने के दो मुख्य कारण हैं।
- यदि आपको वृक्कीय (गुर्दे की) बीमारी है तो आप नियमित रूप से अपने 'नेफ्रालोजिस्ट' से सम्पर्क करें।
- यदि आपके गुर्दे की बीमारी प्रारंभिक अवस्था में है तो आप निम्नलिखित के द्वारा आंशिक रूप में काम कर रहे गुर्दे को बचा सकते हैं :—
  - अपने रक्त में शुगर की मात्रा को नियंत्रित करके
  - अपने रक्तचाप को नियंत्रण में रख कर
  - कम प्रोटीन युक्त भोजन लेकर
  - अपने रक्त में कोलेस्ट्रोल का सामान्य स्तर बनाए रख कर
  - धुमपान न करके।

वरिष्ठ नेफ्रालोजिस्ट, डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली

डिजिटल सूचना प्रणाली : स्वरूप और अनुप्रयोग

—डॉ० अमरसिंह वधान

विचार की गति के इस युग में वही देश शक्तिशाली माना जाता है, जिसके पास त्वरित सूचना बल है और मजबूत सूचना-तंत्र है। भारत में वैश्वीकरण, अर्थिक उदारीकरण और निजीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह सोचना अनिवार्य हो गया है कि यदि आम लोगों को इस सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ पहुंचाना है तो इसे भारतीय भाषाओं में सुलभ कराना आवश्यक है। यदि कोई भाषा इस दौड़ में पिछड़ जाती है तो उसके नि:शेष होने के खतरे भी बढ़ जाएंगे। आश्चर्य नहीं की रोमन लिपि के बढ़ते प्रभाव के कारण विश्व की अनेक लिपियां समाप्त हो गई हैं। इसे सुखद ही कहा जाएगा कि सी-डैक, आई.एस.सी.आई.आई., एम.एस. डॉस, आर. के. कंप्यूटर्स, सॉफ्टेक, आई.आई.टी., कानपुर, टाटा आई.बी.एम. कंपनियों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने इस क्षेत्र में अंकुरित चुनौती को स्वीकार करते हुए भारतीय भाषाओं के संदर्भ में मल्टी मीडिया वीडियो कार्यों की एक पूरी श्रृंखला विकसित कर दी है।

लेकिन यह भी सच है कि आगमी 10-15 वर्षों में विश्व स्तर पर व्यवसाय में इतना जबर्दस्त परिवर्तन आने वाला है, जो संभवत: गत 50 वर्षों में भी नहीं आया था। नि:संदेह, यह डिजिटल युग का ही करिश्मा है जो बुनियादी तौर पर व्यवसाय, व्यापार आदि को बदल देगा। सूचना प्रौद्योगिकी के पन्ने उल्ट कर देखें तो मालूम होगा कि 1980 तक गुणवत्ता एक प्रमुख घटक रहा, 1990 पुन: इंजीनियरिंग के विषय में महत्वपूर्ण रहा। इन्हीं त्वरित सूचना संदर्भों मे कितनी शीघ्रता से कारोबार में परिवर्तन हुआ और कितनी तीव्रता से लेन-देन बदला है। उपभोक्ताओं की जीवन-शैली तथा उनकी व्यावसायिक अपेक्षाएं भी बहुत परिवर्तित हुई हैं। यही नहीं, गुणवत्ता तथा व्यवसाय-प्रक्रिया में भी तेजी से सुधार हुआ है।

उल्लेखनीय है कि जब व्यवसाय की गति में वृद्धि होती है तो व्यवसाय का स्वरूप भी बदलता है। सप्ताहों में होने वाली बिक्री घंटों में ही हो जाती है और उत्पाद का स्थान सेवा ले लेती है। कहना न होगा कि ये सभी तीव्रतम परिवर्तन केवल डिजिटल सूचना प्रवाह के कारण ही हैं। डिजिटल नर्वस सिस्टस अर्थात् डिजिटल सूचना प्रवाह एक सामूहिक प्रकिया है, जो मानव स्नायु-तंत्र के समतुल्य है। यह प्रणाली सही समय पर संगठन के सही भाग में सुएकीकृत सूचना प्रवाह प्रदान करती है। इस प्रणाली में डिजिटल प्रक्रिया निहित रहती है, जो किसी संगठन या कंपनी को वातावरण विशेष का अवलोकन करने, ग्राहक आवश्यकताओं एवं प्रतिद्वंद्वी की चुनौतियों को महसूस करने तथा ससमय उनका उत्तर देने में सक्षम बनाती है। इस प्रणाली में

हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर दोनों के संयोजन की आवश्यकता पड़ती है। यह कंप्यूटरों के नेटवर्क से बिल्कुल भिन्न है, क्योंकि इसकी परिशुद्धता, अविलंबता एवं समृद्ध सूचना कर्मचारियों के ज्ञान में वृद्धि करके उनकी अन्तर्दृष्टि व पारस्परिक सहयोग को संभव बनाती है।

एक अन्य कोण से देखा जाए तो यह प्रणाली एक प्रकार से अभिप्रेरणा भी है। यह कर्मचारियों को प्रौद्योगिकी के संभाव्य के बारे में उत्प्रेरित करती है ताकि वे त्वरित सूचना प्रवाह से अपने कारोबार को बेहतरीन ढंग से संचालित कर सकें। सूचना प्रवाह पर किया गया कोई भी सद्कार्य किसी भी व्यवसाय के समाधानों को निकालने में मददगार सिद्ध होता है। चूंकि डिजिटल सूचना प्रवाह संगठन के व्यवहार को पुनर्निश्चित किया जा सकता है। इससे नई कार्य संस्कृति एवं नए कार्य परिवर्तन की गुंजाइश रहती है। डिजिटल सूचना प्रवाह का लक्ष्य कर्मचारियों-अधिकारियों को अपेक्षित प्रोत्साहन देकर व्यवसाय कार्य-नीति का विकास एवं क्रियान्वयन करना है। यह संगठन के लिए एक बुनियादी लाभ है।

मोटे तौर पर किसी भी संगठन के तीन प्रमुख नैगम कार्य होते हैं- वाणिज्य, ज्ञान प्रबंधन तथा व्यवसाय परिचालन। देखा जाए तो आज वेब जीवन-शैली वाणिज्य की हर चीज को बदल रही है। यह परिवर्तन संगठनों के ज्ञान प्रबंधन एवं व्यवसाय परिचालन की पुनर्संरचना ही करेगा ताकि प्रगति एवं विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

वाणिज्य परिचालन

* डिजिटल लेन-देनों से सभी आपूर्तिकर्ताओं एवं सहयोगियों के नेमी समय में आवश्यकतानुसार कमी की जा सकती है।

* डिजिटल डिलिवरी से ग्राहक लेन-देनों के बीच पड़ने वाले दलालों को दूर रखा जा सकता है। इससे ग्राहक सेवा की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता में वृद्धि होगी।

* डिजिटल उपकरणों से ग्राहकों की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। साथ ही जटिल एवं उच्चमूल्य ग्राहक आवश्यकताओं की ओर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सकता है।

ज्ञान प्रबंधन

* यदि ई-मेल के माध्यम से संगठन में संप्रेषण प्रवाहित होता है तो सूचना का प्रतिवर्त गति से क्रियान्वित होगा।

* संगठन कर्मचारियों को प्रत्येक ग्राहक की व्यक्तिगत सेवा एवं अन्य प्रवृत्तियों को समझना चाहिए। सेवा डाटा रूपरेखा के अध्ययन से कई पद्धतियों एवं अंशों को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

* व्यवसाय विश्लेषण के लिए पी. सी. का अधिक से अधिक इस्तेमाल करके उत्पाद, सेवा एवं लाभप्रदता के बारे में कर्मचारियों के ज्ञान को उच्चस्तरीय विचार-विमर्श तथा विचार-कार्य में बदला जा सकता है।

* प्रति विभागीय वास्तविक दल तैयार करने के लिए डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए । इससे पारस्परिक ज्ञान का आदान-प्रदान करके व्यापक स्तर पर यथार्थ समय में एक-दूसरे के विचारों को सुनिर्मित किया जा सकता है। हरेक के उपयोग के लिए नैगम इतिहास की जानकारी के लिए डिजिटल प्रणाली का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है।

* हर कागजी प्रक्रिया यदि डिजिटल प्रक्रिया में परिवर्तित होती है तो इससे प्रशासनिक अवरोध विसंगतियां दूर होंगी।

व्यवसाय परिचालनः

* डिजिटल उपकरणों से एकल कार्य प्रक्रियाओं को मूल्योन्मुख प्रक्रियाओं में परिवर्तित किया जा सकता है । इससे कर्मचारियों की कार्य-निपुणता में वृद्धि होगी।

* डिजिटल पुनर्निवेशन से भौतिक प्रक्रियाओं, उत्पाद गुणवत्ता तथा ग्राहक सेवा में जबर्दस्त सुधार किया जा सकता है। इस मापीय नुस्खे से प्रत्येक कर्मचारी को अवगत होना चाहिए।

* ग्राहक शिकायतों को तत्काल दूर करने के लिए डिजिटल प्रणाली बहुत उपयोगी है। इससे उत्पाद अथवा सेवा में सुधार किया जा सकता है।

* व्यवसाय की प्रकृति तथा व्यवसाय के आसपास के माहौल को पुनर्परिभाषित करने के लिए भी डिजिटल संप्रेषण अत्यंत उपयोगी है। ग्राहक स्थिति के अनुसार इस प्रणाली को अधिक विस्तृत एवं वास्तविक बनाया जा सकता है।

यूं तो हम गत 30 वर्षों से सूचना युग में रह रहे हैं। लेकिन व्यवसाय से संबंधित अधिकतर सूचनाएं ज्यादातर कागजों में ही रही हैं। क्रय-विक्रय की प्रक्रिया में भी कोई खास परिवर्तन नहीं आया। यद्यपि कई संगठन एवं कंपनियां अपने बुनियादी परिचालनों को नियंत्रित करने, उत्पादन प्रणालियों को चलाने, ग्राहक बीजकों को तैयार करने, लेखा-कार्य करने, कर अदा करने आदि कार्यों के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर रही हैं, लेकिन ये सभी प्रयोग पुरानी प्रक्रिया से ही संबंधित हैं। ऐसे बहुत कम संगठन हैं, जो अपनी प्रक्रियाओं में डिजिटल प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे हैं, जबकि यह पाया गया है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी कार्य में सुधार लाने, कर्मचारियों की क्षमताओं का पूर्ण लाभ प्राप्त करने तथा उच्च गति व्यवसाय की दुनिया में साथ-साथ चलने में बहुत सहायक है। ये तीव्रतम उपकरण आज सर्वत्र उपलब्ध हैं। देखा जाए तो

व्यवसाय की अधिकतम संस्थाएं सूचना से संबंधित समस्याएं ही होती हैं। फिर भी, सूचना का भलीभांति उपयोग नहीं किया जा रहा है। कई वरिष्ठ प्रबंधक एवं कार्यपालक ससमय सूचना के प्रति प्राय: उदासीन रहते हैं। ऐसे क्षण भी गुजरे हैं कि लोगों को पता ही नहीं चला कि उन्होंने महत्वपूर्ण क्षणों को यों ही दरगुजर कर दिया।

आज सूचना प्रौद्योगिकी पर निवेश की अत्यंत आवश्यकता है। लेकिन निवेश से अच्छे परिणाम भी मिलने चाहिएं। अनुभव बताते हैं कि जिन संगठनों और कंपनियों ने उत्पादकता अनुप्रयोग के लिए पी. सी. संप्रेषण हेतु नेटवर्क एवं ई-मेल तथा मूल व्यवसाय अनुप्रयोगों पर 80 प्रतिशत निवेश किया है, वे मात्र 20 प्रतिशत ही लाभ प्राप्त कर रही हैं। इस प्रकार व्यय एवं प्राप्ति के मध्य एक अंतराल आ जाता है, जो, दरअसल, नहीं आना चाहिए।

माना कि समृद्ध सूचना प्राप्त करना काफी महंगी प्रक्रिया है। पर यह भी सच है कि डिजिटल प्रणाली ने एक नए एवं विशिष्ट ढंग से सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुगम बना दिया है। यह स्थिति 1980 तक तथा 1990 के आरंभ तक नहीं थी। पहली बार सभी प्रकार की सूचना को डिजिटल रूप में रखा जा सकता है, जिसे कोई भी कम्प्यूटर संग्रहीत, प्रोसेस तथा फार्वर्ड कर सकता है। कह देना होगा कि माईक्रोप्रोसेसर क्रान्ति ने पी.सी. को बहुत शक्तिशाली बना दिया है। इस डिजिटल युग में संयोजन भी एक व्यापक अर्थ ग्रहण कर चुका है। इस संदर्भ में इंटरनेट ने सूचना साझेदारी, सूचना सहयोग एवं वाणिज्य में एक नया सार्वभौमिक स्थान बना लिया है। यह एक नया मीडिया प्रदान करके टी वी एवं टेलीफोन को इतनी गहराई तथा व्यापकता से जोड़कर संप्रेषण प्रौद्योगिकी की त्वरता एवं प्रवाहमयता को गत्यात्मकता प्रदान करता है। सूचना प्राप्त करने की क्षमता और उसे लोगों की रुचियों के अनुसार ढाल देना, सचमुच एक नई एवं अद्भुत चीज़ है।

इससे दो राय नहीं कि हार्डवेयर, साफ्टवेयर तथा संप्रेषण मानकों का आविर्भाव निश्चित रूप से व्यवसाय एवं उपभोक्ता व्यवहार को एक नया आकार देगा। आश्चर्य नहीं कि आने वाले समय में अधिकतर लोग कार्य करते समय तथा घर में पी.सी. का नियमित रूप से उपयोग करेंगे। ये सभी चीजें इंटरनेट के साथ संबद्ध होंगी तथा वे डिजिटल साधनों द्वारा उनकी व्यक्तिगत और व्यावसायिक सूचनाओं को उपलब्ध कराएंगे। नए उपभोक्ता साधन भी सामने आएंगे, जो टैक्स्ट, नंबर, स्वर, फोटो, वीडियो आदि हर प्रकार के डाटा को डिजिटल रूप में संभालेंगे। इन डिजिटल संयोजकों से कर्मचारियों एवं उपभोक्ताओं के प्रभाव को 'वेब वर्कस्टाइल' तथा 'वेब लाइफस्टाइल' के रूप में समझा जा सकेगा। आज हम डेस्क पर कार्य करते हुए जिस सूचना से आमतौर पर बंधे हुए हैं, वह इंटरनेट के साथ एक तार से संबद्ध है। लेकिन भविष्य में पोर्टेबल डिजिटल साधन हमें अन्य प्रणालियों तथा अन्य लोगों के निरंतर संपर्क में रखेंगे। इतना ही नहीं, पानी एवं बिजली मीटर, सुरक्षा प्रणालियां तथा ऑटोमोबाइल्स जैसे दैनिक साधन भी डिजिटल सूचना के साथ जुड़

जाएंगे। लेकिन यह उनकी स्थिति एवं उपयोग पर निर्भर करेगा। भावी नवीनतम डिजिटल सूचना का अनुप्रयोग हमारी जीवन-शैली तथा व्यवसाय की दुनिया में आमूल परिवर्तन करेगा।

देखा जाए तो वेब वर्कस्टाइल व्यवसाय की माइक्रोसॉफ्ट तथा अन्य कंपनियों के स्तर पर काफी बदल रहा है। कागज प्रक्रिया का स्थान सहयोगी डिजिटल प्रक्रियाओं ने ले लिया है। नतीजे के तौर पर परिचालन प्रक्रियाओं तथा समय में कटौती हुई है। निष्पादन और परिणाम की दृष्टि से यह निश्चित रूप से एक स्वस्थ लक्षण है। जहां कर्मचारी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का एक साथ उपयोग कर रहे हैं, वहीं अत्यंत अभिप्रेरित दल हर व्यक्ति के विचारों तथा अनुमतों से लाभान्वित भी हो रहे हैं। स्पष्ट है कि त्वरित सूचना के माध्यम से हम अपने उत्पाद की बिक्री, अपने सहयोगियों की गतिविधियों तथा अपने ग्राहकों की समस्याओं व उनके अवसरों के प्रति अधिक तेजी से अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर कर सकते हैं।

यह भी कि डिजिटल युग में कार्य करने के लिए नई-नई डिजिटल सुविधाएं भी विकसित कर ली गई हैं। अब तो बैंकों, वित्तीय संस्थाओं, संगठनों और कंपनियों ने भी डिजिटल सूचना प्रणाली के महत्व को भली-भांति समझ लिया है। डिजिटल सूचना प्रणाली से पुरानी व्यवसाय पद्धति छिन्न-भिन्न होकर एक नए परिवर्तन-प्रभात में आंख खोलेगी। इससे व्यवसाय विचार की गति से चलेगा तथा मूल्यवान, उपयोगी एवं आवश्यक सूचना शीघ्र उपलब्ध हो सकेगी।

सिंडिकेट बैंक, राजभाषा प्रभाग, प्रधान कार्यालय, मणिपाल-576119 (कर्नाटक)।

साहित्य की राहें

—डॉ. सुशीला गुप्ता

रोमां रोलां ने कहा था, "जो विचार क्रियाशील नहीं है, वह विचार दरअसल विचार नहीं हैं, वह तो कोई स्थिर चीज है, मुर्दा है। हमारे समाज के विशेष व्यक्ति जिस सौन्दर्य-उपासना का ढोंग करते हैं और विचारों का उद्देश्य विचार बतलाते हुए कार्य-क्षेत्र से भागते हैं, वह सौन्दर्योपासना वास्तव में बांझ है और वह पतन के गड्ढे के किनारे पर ही है। उसमें मुर्दे की सड़ांध आने लगती है। जो क्रियाशील है, वही जीवित है।"

क्रियाशीलता का यह सन्देश साहित्यकार को जीवन से जोड़ता है। जीवन से जुड़ने का मतलब है, जीवन की वास्तविकताओं, कुरुपताओं और विसंगतियों के बीच में से कर्मण्यता की तलाश और अकर्मण्यता का तिरस्कार, जीवन की जो चादर हमें नियति ने प्रदान की है, उसे खून-पसीने से सुगन्धित करने की चाहत। दीपावली की मंगलकामना के रूप में किसी जीवनकर्मी ने अपने परिचितों को सन्देश भेजा, "आपका जीवन श्रम-सीकर से फले-फूले।" किसी व्यक्ति ने इस शुभकामना-सन्देश पर एतराज किया कि दीपावली-पर्व पर परिश्रम का यह अभिशाप क्यों। ज़ाहिर है, श्रम से भागने वालों की हमारे समाज में कमी नहीं, लेकिन श्रम से, श्रम-वारि से यदि रचनाकार भागेगा तो वह सृजन क्योंकर कर पायेगा। जीवन से दूर जाकर अपने शीशमहल के संकुचित दायरे में अपने आपको कैद करके जो साहित्यकार सृजन करता है, उसका लेखन शब्द-जंजाल ही हो सकता है, उसे सृजन नहीं कहा जा सकता। 'ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे' जैसी पंक्ति को जब जयशंकर प्रसाद ने शब्दबद्ध किया तो उन्होंने थोड़े विश्राम के लिए ऐसी अभिलाषा की होगी। उनकी पलायन की मंशा बिल्कुल नहीं थी, वे तो एक जीवनधर्मी और राष्ट्रवादी रचनाकर थे। 'बादल राग' और 'राम की शक्ति-पूजा' के लेखक निराला दरअसल श्रम और ऊर्जा के कवि थे।

श्रमजीवी साहित्यकार के रूप में हमें माखनलाल चतुर्वेदी का स्मरण हो आता है। खंडवा में उनका अभिनन्दन-समारोह आयोजित किया गया था। अस्वस्थ होने के कारण उस समारोह में उन्हें एम्बुलेंस में जाना पड़ा। वे बोलने में असमर्थ थे, इसलिए उपस्थित श्रोताओं को उनका टेप सुनाया गया, "जहां कहीं मनुष्य का अपने अभिमत के प्रति समर्पण है, जहां कहीं जीवन की कर्म से आराधना है, जहां कहीं उत्सर्ग और बलिदान के मोम-द्वीप अंधकार को भगाने में अपनी बलि दे रहे हैं, जहां कहीं नगण्यता गणमान्यता को चुनौती दे रही है, जहां कहीं हिमालय की रक्षा में सिरों को हथेलियों पर लेकर मरण-त्यौहार मनानेवाली जवानियां हैं और जहां-कहीं पसीना ही

नगीना बना हुआ है, वहीं पर, केवल वहीं पर आपका माखनलाल न दीखते हुए भी उपस्थित रहना चाहता है।''

जीवन-धर्म निभाते-निभाते यदि लेखनी मचल उठे और 'कागद कारे' होने लगे तो सृज़न-धर्म का पालन स्वयंमेव हो जाता है। इस दृष्टि से महात्मा गांधी को सबसे सफलता और सशक्त रचनाकार माना जा सकता है। सत्य का प्रयोग करके उन्होंने अपनी आत्मकथा तो लिखी ही, जिसका संसार की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, उनकी एकमात्र कविता, जिसे उन्होंने वर्धा में दिनांक 19-9-34 को लिखा था, साहित्य की अमर कृतियों में स्थान पाने की हकदार है, क्योंकि उसमें जीवनधर्मिता है, जीवन का अमर सन्देश है और वह विचारशीलता का कर्मरूप है।

गांधीजी के हृदय में जो करुणा थी, जन-सेवा की भावना थी, उदात्त भावनाओं को जीवन में उतारने की ललक थी, उससे प्रभावित हुए थे दिनकर जी। उन्हें समय की धड़कन सुनने की कोशिश में बलिदानियों की पुकार सुनाई देती थी। उन्होंने लिखा है, ''रूपक की भाषा में कहूं तो मैं अपने समय के हाथ में निश्छल बंसी बनकर पड़ गया। मेरी कविताओं के भीतर जो अनुभूतियां उतरीं, वे विशाल भारतीय जनता की अनुभूतियां थीं, वे उस काल की अनुभूतियां थीं, जिसके अंक में बैठकर मैं रचना कर रहा था, जो भारत के पांच सहस्र वर्ष प्राचीन उस गौरवपूर्ण इतिहास की अनुभूतियां थीं, जो सौभाग्यवश हमारे ही काल में आकर फिर से जीना चाह रहा था। ..... कवि होन की समर्थ्य मुझमें नहीं थी। यह क्षमता मुझमें भारतवर्ष का ध्यान करने से जाग्रता हुई, यह शक्ति मुझमें भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात कराने से स्फुरित हुई। मैं तो वायु और वह्नि से बना हुआ यंत्र मात्र था। फूंक उसमें काल ने मारी और झंकारें भी उसमें काल ने ही उठाई हैं।''

रचनाकार अपने समय की धड़कन पहचानता है, अपने युग को मन-प्राण से जीता है। जब देश संकट के दौर से गुजर रहा होता है तो कलम का सिपाही बन्दूक का सिपाही भी बन जाता है। ईरान-इराक युद्ध के दौरान नासिरा शर्मा ईरान में थीं, वहां उन्हें ईरानी भाषा और संस्कृति के अध्ययन के लिए आमंत्रित किया गया था। एक बार वे 'बगदाद आब्ज़र्वर' के कार्यालय में गईं तो उन्हें बताया गया कि पत्रकार महोदय गायब हैं। पूछने पर उन्हें पता लगा कि वे रणक्षेत्र गए हैं। नासिराजी ने पूछा, ''रिपोर्टिंग से कब तक लौटेंगे?'' जवाब मिला कि 'वे रिपोर्टिंग करने नहीं, लड़ने गए हैं।' नासिराजी का यह संकेत स्पष्ट है कि जब देश में आग लगी हो तो उसे बुझाने के काम में रचनाकर भी अग्रणी भूमिका निभा सकता है। बनारसीदास चतुर्वेदी कवि-सम्मेलनों में अच्छा जमते थे। उनके शहर में जिन दिनों प्लेग फैला था, उन्हीं दिनों एक कवि-सम्मेलन का भी आयोजन था। जाहिर है, उन्हें भी निमंत्रित किया गया, लेकिन उन्होंने वहां जाने से इन्कार कर दिया। किसी सज्जन ने उनसे कहा, ''आप भी अजीब आदमी हैं। इस नगर में रहते हुए भी आप

3899 H.A./2001—3A

स्थानीय कवि-सम्मेलन में भाग नहीं लेते ? मालूम होता है कि आप में साहित्य-प्रेम का बिल्कुल ह्रास हो गया है।'' चतुर्वेदीजी ने कहा, जनाब, यह तो फरमाइए कि जब शहर में चूहे मर रहे हों, उस वक्त क्या मुनासिव है—कवि-सम्मेलन करना या चूहे पकड़ना। उस सज्जन को यह प्रश्न नामवार गुजरा । वे बोले 'तो क्या आप कवियों से चूहे पकड़वाएंगे ?'चतुर्वेदी जी ने छूटते ही कहा, 'इसमें हर्ज ही क्या है ?' कविता क्या जीवन से और मनुष्यत्व से भी ऊंची चीज़ है ? उन्होंने यह बात निर्भीकता के साथ कही कि 'साहित्य की सेवा जीवन की अपेक्षा करके नहीं की जा सकती।'

'कर्मण्येवाधिकारस्ते'·····के संदेश से रचनाकार विमुख क्यों हो ? उसके सामने सृजन यदि साध्य के रूप में दृष्टिगत होता है तो जीवन से जुड़ने, उसे समझने, उसे भोगने और उसमें अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने की भूमिका उसका साधन-पक्ष क्यों नहीं हो सकती। साधन के निष्कलुष होने पर साहित्यकार बहुत सारी दुविधाओं से बच सकता है, शीघ्रतिशीघ्र यश और लोकप्रियता हासिल करने के कुचक्रों से स्वयं को मुक्त कर सकता है, येनकेन प्रकारेण पुरस्कार प्राप्त करने के हथकंडों से अपने को दूर रख सकता है। लेखक का प्रमुख धर्म तो पाठकों को अपने साथ संवेदनात्मक धरातल पर जोड़ना होता है।

पाठकों को साहित्य में गहराई की खोज होती है, निखालिस लेखन को वे बड़ी सहजता से पकड़ लेते हैं। दरअसल जो रचनाकार पाठकों की कमी का रोना रोते हैं, उन्हें अपने गरेबां में झांककर देखना चाहिए कि उनके पास पाठकों को देने के लिए क्या है। प्रभाकर क्षोत्रिय का कहना है कि विश्वसनीय यथार्थ रच पाना किताबी काम नहीं है, इसके लिए लेखक को खुद अपनी असाधारणता से संघर्ष करते हुए साधारण होना होता है। वे प्रेमचन्द की कथाओं के सादापन को धरती की परत जैसा मानतें हैं जिसके भीतर यथार्थ का ज्वलित, मार्मिक और जटिल संसार होता है। उस जटिलता को व्यक्त कर पाना सबके बस का नहीं होता। उसे वही व्यक्त कर सकता है जिसकी अभिव्यक्ति में गहराई होती है। राम, सीता और लक्ष्मण के वन-मार्ग में नंगे पांव चलने की कल्पना से तुलसीदास को ही व्यथा हुई होगी, उसकी अभिव्यक्ति की गहराई सहज ही महसूस की जा सकती है, पायन तो पनही न पयादेहिं क्यों चलिहें सकुचात मही है। धरती माता का यह संकोच कि वे पैदल क्योंकर चल पाएंगे तुलसीदास की लेखनी ही व्यक्त कर सकती थी।

सुधा अरोड़ा की एक कहानी है अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी जिसमें उन्होंने गहराई में डूबकर स्त्री की व्यथा का वर्णन किया है। अन्नपूर्णा के महाकाली की गुफाओं वाले फ्लैट के फर्श पर केंचुए ही केंचुए रेंगते हैं—वहीं अन्नपूर्णा यह यकीन कर बैठती है कि उसके गर्भ में पल रहे शिशु ने बरसाती केंचुए की शक्ल अख्तियार कर ली है। जुड़वां बच्चियां पैदा हुईं तो वे उसे गिजगिजी लाल केंचुए जैसी दिखीं। उस कहानी को पढ़कर एक प्रबुद्ध पाठक ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की कि क्या अपनी कहानी को आपने केंचुओं से भर दिया है। वही कहानी जब

3899 H.A./2001—3B

सुधाजी ने नारी केन्द्र (वकोला) में सुनाई तो सभी महिलाएं रोमांचित हो उठीं और उन्होंने एक स्वर से कहा कि आपने तो हमारी जिन्दगी की सही तस्वीर खींच दी है। उन्होंने यह साबित कर दिया कि वे प्रबुद्ध पाठकों से कहीं अधिक समझदार हैं। समझदार पाठक खोज-खोज कर अच्छी रचनाएं पढ़ते है और तल्लीन होकर उनमें डूबने का सुख पाते हैं। रचनाकार गहराई में डूबकर लिखता है और अधिकारी पाठक रचना में डूबकर उसका आन्नद प्राप्त करता है।

आत्म-विश्लेषण के क्षणों में मन्नु भंडारी महसूस करती हैं कि कोई घटना कहीं घटे और लेखक को वह अपनी कहानी नज़र आए, यह भी हो सकता है, होता है। उनकी सज़ा कहानी की विडम्बना पड़ोस के सजायाफता परिवार में घटी थी। मन्नुजी को यह बात कचोटती रही कि किसी की सारी जिन्दगी दांव पर लगी हो, कोई अपने जीवन के भयंकर क्राइसिस से गुज़र रहा हो और कोई उस पर बैठकर कहानी लिखे, लेकिन तब उन्होंने यह भी महसूस किया कि यह हर व्यक्ति के साथ होता है कि उपलब्ध को भोगने की अक्षमता उपलब्धि को निहायत निरर्थक बना देती है। कहने का मतलब कि यथास्थिति से टकराकर ही साहित्यकार सृजन की क्षमता अर्जित कर पाता है, शर्त यह है कि यथास्थिति से टकराने और उसे महसूस करने में गहराई हो। डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कितनी सटीक बात कही है कि जिस जटिलता के सामने सहज आस्था के बावजूद मेरा सिर चकराने लगता है, उसे कुछ आधुनिक किस्म के लोग किसी मामूली से फार्मूले से सिद्ध करने का दम्भ भरते हैं। साहित्यकार का काम गहराई तक जाना है, फिर वह चाहे आस्था के सहारे उतरे, चाहे मेधा के । जो परम सत्य के उत्स से निकला हो, जो आवरण भेद करके चैतन्य का विकास करने में समर्थ हो, वही साहित्य है, बाकी सब कूड़ा है।

ज्ञानपीठ पुरुस्कार विजेता डा. उमाशंकर जोशी मानवता और मानवीय मूल्यों के पक्षधर थे। उनका विश्वास था कि इस विशाल देश के निवासियों के दिल छोटे न हों। संकीर्ण न हों। जितना विशाल अपने देश का भूगोल है, उसके जनतंत्र का विस्तृत विधान है, जितनी सहिष्णुता भारतीय मानस में है, वैसी ही मानवता और मानवीय मूल्य यहां पनपे। "जोशी जी गांधीवादी प्रखर सर्जक थे। उनकी दृष्टि में लेखन सिर्फ लेखन नहीं, वह मानव के उद्धार और उदात्तीकरण के लिए है।"

वर्तमान युग में हम अनेक विसंगतियों से गुजर रहें हैं, अनेक नकारात्मक मूल्यों से आक्रान्त हैं, अनेक प्रलोभनों के शिकार हैं। एक बार सई परांजपे का एक धारावाहिक दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था। उसमें जानवरों के जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई थी। उस धारावाहिक में जानवर जब आपस में लड़ते-झगड़ते हैं और गाली देते हैं तो कहते हैं आदमी कहीं का। आदमी जब एक दूसरे को गाली देते हैं तो अक्सर कह उठते हैं जानवर कहीं का। लेकिन जानवरों के मुंह से आदमी को निकृष्ट साबित करके सई परांजपे ने ज़माने की सही तस्वीर पेश की है।

आज हम अपनी गरिमा की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं। साहित्यकारों को यह मानना होगा कि मानवीय गरिमा की रक्षा की सामर्थ्य उनमें है। वे ही हमें बेहतर जिन्दगी की तस्वीर दिखा सकते हैं। सुप्रसिद्ध लेखिका राजी सेठ कहती हैं कि वे दिन जरूर नहीं रहे जब सामाजिक चिन्तन में नैतिक फैब्रिक को कायम रखने की चिन्ता सर्वोपरि मानी जाती थी। यथार्थ और आदर्श की बंटी-बंटी कैटेगरीज होती थी। व्यवहार में यदि यह भेद-विभेद सम्भव न भी हो पाए, पर विचार में इसकी परिनिष्ठता बनी रहती थी। इस यथार्थ और आदर्श को वे मनुष्य के जीवन की और मनुष्य के स्वप्न की संज्ञा देती हैं। इसे वे मनुष्य की स्थिति और संभावना का नाम देती हैं। इसे होने और चाहने के बीच के रचनात्मक फैसले के रूप में देखती हैं। वे कहती हैं "आदर्श की परिकल्पना मनुष्य के मन में बेहतर जीवन की परिकल्पना है, जिसके परिवृत्त में वह उन सब चिंताओं सम्भावनाओं, उत्प्रेरकों को शामिल करना चाहता है, जो उसकी बेहतरी के हक में हो। यदि हम चिन्तन की पूरी परम्परा को समग्रता में रखकर देख सकें तो थोड़ा आश्चर्य होगा कि यह सारी उठा-पटक, चिन्तन-मनन उत्तरोत्तर विकास-मानता के स्वप्न को लेकर ही है, साहित्य-कर्म को समाज के दर्पण की यथा तथ्यता में रिड्यूस कर देने के लिए नहीं।" मनुष्य से बड़ा कोई नहीं है उस मनुष्य के जीवन को संवारने की दिशा में रचनाधार्मिता का कार्य प्रत्येक लेखक की प्रतिबद्धता होनी चाहिए।

मानद निदेशक महात्मा गांधी रिसर्च सेंटर, महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग, 7 नेताजी सुभाष रोड, मुंबई-400002

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

—डा० (श्रीमती) बिनय राजाराम

स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रारंभिक दौर में "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" के रूप में भारतेन्दु ने आजादी का एक ऐसा मूल मंत्र दिया था, जिसको यदि ठीक से साध लिया जाता तो संभावत: आज हमारे देश में जो स्थिति है वह ऐसी न होती। अपनी भाषा के प्रति हमारी जो बेकदरी रही, अपनी भाषा का जैसा अनादर और अपमान हमने किया है, आज उसी का फल है कि हम अपनी भाषा में न तो अपना इतिहास-भूगोल पढ़ते हैं, न ही विज्ञान या गणित।

अपनी भाषा में शिक्षा न प्राप्त करने का गुणात्मक ख़ामियाजा हम अनायास ही भुगतते हैं। यह ख़ामियाजा प्रत्यक्ष न होने पर भी बहुआयामी एवं गहराई से मार करने वाला होता है, जिसका असर पीढ़ियों बाद दिखाई देता है।

आज उच्च शिक्षा के स्तर पर डॉक्टरी, यांत्रिकी, भौतिकी एवं प्राणी विज्ञान जैसे विज्ञान विषयों के अतिरिक्त अन्य अनेक ऐसे विषय हैं, जिनकी पढ़ाई में अंग्रेजी को माध्यम बनाया जाता है । विज्ञान आदि विषयों की शिक्षा में अंग्रेजी-माध्यम को अपनाने के पीछे दलील यह दी जाती है कि तकनीकी विषयों की शिक्षा के योग्य हमारे पास पुस्तक आदि संसाधनों का अभाव है । यही नहीं, यदि जैसे-तैसे पुस्तकें आ भी गई हैं तो वे अपूर्ण एवं अपरिपक्व हैं। शैक्षिक संसाधनों की आपूर्ति में यह अपूर्णता, अपरिपक्वता, अस्पष्टता एवं लापरवाही आख़िर क्यों ?

हमारे सामने तुर्किस्तान का उदाहरण है जहां के राजा कमाल पाशा ने अपनी नवगठित सरकार को दृढ़ता से विश्वास में लेकर तत्काल प्रभाव से तुर्की भाषा में राजकाज प्रारंभ कर दिया था। वहां पूर्व में प्रिटोरिया सरकार के चलते अंग्रेजी भाषा का बोल-बाला था। अभी हाल ही का वाक्या है, जब इज़राइल जैसे छोटे से देश ने अपनी मृत भाषा हिब्रू को पुनरूज्जीवित करके अपने देश-वासियों को गौरव से जीने का मौका दिया है।

हमारे भारत में एक नहीं, अनेक समृद्ध भाषाएं हैं, उनका पारंपरिक महत्व तथा विशाल वाङ्मय है। हिंदी जैसी सहज, ग्राह्य एवं वैज्ञानिक भाषा है, जो आसानी से संपर्क भाषा का काम कर सकती है। संस्कृत के समान व्याकरण-सम्मत प्राचीन भाषा का अकूत शब्द-सागर हमारी भाषायी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए हमारे सामने उपस्थित है। अनेक देशज भाषाओं के प्रचलित शब्द-भंडार के साथ-साथ तमाम आवश्यकतानुरूप विदेशी शब्दों को आसानी से पचा जाने की क्षमता भी हमारी भाषाओं में, विशेषकर हिंदी में मौजूद है, फिर भी न जाने क्यों हममें यह हीन भावना घर कर गई है कि हम उससे उबर कर भाषायी दृष्टि से स्वावलंबी बन पाने में आज आज़ादी के बावन वर्षों के बाद भी सक्षम नहीं हो पाए हैं।

वस्तुत: समग्र रूप से इच्छा शक्ति एवं आत्मविश्वास का जब इस देश में संचार होगा तब संभवत: हम भाषा की दृष्टि से स्वावलम्बी होंगे और तब निश्चित ही हमारा देश मातृभाषा के एक मजबूत आधार के साथ फ्रांस, जर्मनी या जापान की तरह प्रत्येक क्षेत्र में अपनी संपूर्ण ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेगा।

भाषा किसी देश की अस्मिता की धोतक होती है। भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर समूची संस्कृति को स्पष्ट करने का आईना भी होती है। भाषा न केवल विचारों के आदान-प्रदान का साधन भर है, अपितु वह पूरी की पूरी परंपरा की संवाहक भी होती है।

हर देश की जमीन से जुड़ी भाषा के अपने मुहावरे होते हैं, अपनी किंवदन्तियां और लोकोक्तियां होती हैं, जिनके सहज प्रयोग से भाषा की जो जीवन्त अभिव्यक्ति होती है, वह अन्य किसी भाषा के प्रयोग से निश्चित ही संभव नहीं हो सकती। स्वप्न में, अर्द्ध जागृत अवस्था में अथवा मानसिक द्वन्द्व की स्थिति में व्यक्ति सदैव अपनी स्वयं की भाषा का ही प्रयोग करता है। स्पष्ट है कि भाषा गहराई के साथ व्यक्ति के मानसिक विकास से जुड़ी होती है। इस समीकरण से यह भी स्पष्ट है कि व्यक्ति के सर्वांगीण मानसिक विकास में "निज" की भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है।

जो देश शिक्षा के क्षेत्र में किसी अन्य देश की भाषा पर निर्भर नहीं रहते हैं, वे देश अपनी संपूर्ण ऊर्जा के साथ न केवल अपना विकास करते हैं, अपितु प्रत्येक क्षेत्र में आत्म-निर्भर होकर स्वाभिमानी जीवन भी जीते हैं।

फ्रांस, जर्मनी, रूस, जापान जैसे विकसित देश तथा चीन जैसा विकासशील देश इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इन देशों में स्कूल-शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की पढ़ाई उनकी स्वयं की भाषा में ही होती है, जिसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ तो यह होता है कि बालक की, बालक के साथ-साथ देश की ऊर्जा का एक बड़ा भाग सहज ही बच जाता है, जिसे हम जैसे देश बिना किसी जोड़—भाग के अनायास गंवा देते हैं।

बच्चा अपनी भाषा में ज्ञान प्राप्त करता है, तो वह उसके विकास की सहज प्रक्रिया होती है। जब कोई अन्य भाषा उस पर थोपी जाती है, तो बच्चे की प्रारंभिक प्रखर ऊर्जा उस नई भाषा को सीखने में ही समाप्त हो जाती है। फलत: वह एक यान्त्रिकी रटंत विद्या की ओर उन्मुख होता जाता है, जो उसके मानसिक विकास में बाधा ही डालता है।

फ्रांस, जर्मनी या ग्रीस जैसे छोटे देश तो सहज ही "एक भाषा" का अनुगमन करके समग्र शिक्षा में एक भाषा एवं एकरूपता को आसानी से चरितार्थ करते हैं। क्या भारत जैसे विशाल देश में यह संभव हो सकता है? यह कोई मामूली प्रश्न नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसकी आड़ लेकर हमारे देश की तमाम नेता, राजनेता एवं बुद्धिजीवी मातृभाषा में शिक्षा को दरकिनार करते हुए एक नितान्त विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। अंग्रेजी माध्यम

में शिक्षा के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर को छूने की वकालत करने वाले हमारे विचारक यह भूल जाते हैं कि इसकी अनेकानेक गुणात्मक हानियां भी हैं।

अंग्रेजी माध्यम की रटंत विद्या के चलते भारत के विद्यार्थियों का एक बड़ा प्रतिशत "सामान्य ज्ञान" की सीमा में ही रह जाता है। विषय विशेष में विशेषज्ञता हासिल करने वाले विद्यार्थी वर्ग का प्रतिशत कम ही होता है, बल्कि उनकी विशेषज्ञता भी उस श्रेणी की नहीं होती, जिस श्रेणी की होनी चाहिए। दरअसल विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया के चलते देश के बहुत बड़े युवा-वर्ग की सहज प्रतिभा कुंठित हो जाती है। प्रतिभा का स्तर एवं प्रतिभा की संख्या दोनों ही इस कुंठा की चपेट में आते हैं। निश्चित ही कुंठा-ग्रस्त नई पीढ़ी देश के निर्माण में अपनी संपूर्ण सामर्थ्य के साथ आगे नहीं आ पाती है।

भारत में अनेक भाषाएं हैं, जैसे योरोप के देशों में है। फ्रांस, इटली, जर्मनी, ग्रीस, इंग्लैंड की तरह भारत में ओड़िया, बंगला, मराठी, कन्नड़, मलयालम आदि विभिन्न भाषाएं हैं और अपने संपूर्ण दमखम के साथ संपूर्ण प्राचीन वाङ्मय के खजाने के साथ हैं। उन सभी भाषाओं का आदर करते हुए स्कूली शिक्षा में मातृभाषा को पूरा महत्व दिया जाना एक स्वस्थ शैक्षिक परंपरा का निर्वाह करना होता। रोजी-रोटी की खातिर हो अथवा अपनी प्रतिभा की खातिर, जो विद्यार्थी अन्य भाषा की ओर जाना चाहे, उसे उसकी पूरी छूट होनी चाहिए, जैसे जर्मनी, हंगरी अथवा आयरलैंड के विद्वान संस्कृत सीखते हैं।

० ० ०

हम भारतीयों ने अंग्रेजी भाषा को अपना प्रारब्ध स्वीकार कर लिया है, जिसके परिणाम स्वरूप अपनी भाषाओं के प्रति बेरूखी बढ़ती चली गई है। अपनी भाषा के प्रति बेरुखी और अंग्रेजी भाषा के प्रति आग्रह का एक लम्बा इतिहास भी है।

जब भारत में ईष्ट इंडिया कंपनी ने अपने पांव जमाने शुरू किए, तब अपने आप को शक्ति-संपन्न बनाने के लिए उसने एक भाषा-नीति बनाई थी। अपने सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए कंपनी ने "ओरिएण्टल सेमिनरी" की स्थापना की थी। आगे चल कर यही संस्था फोर्ट विलियम कॉलेज के रूप में प्रसिद्ध हुई। भारत के कॉलेजों की शिक्षा-नीति का केन्द्र भी यही था।

4 मई 1800 ईस्वी को स्थापित "ओरिएण्टल सेमिनरी" के प्रथम अध्यक्ष थे गिल क्राइस्ट जो उर्दू के पक्षधर थे। अतः उन्होंने हिंदी के नाम पर उर्दू को अपनाया। दरअसल अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक चाल के तहत भारत में तत्कालीन राजकाज की भाषा फारसी को अपदस्थ करके अंग्रेजी को राजभाषा तथा संभ्रांत भारतीयों के लिए संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दे दी। केवल निचली अदालतों में प्रादेशिक भाषाओं को स्वीकृति देकर अंग्रेजों ने भाषा के माध्यम से अपने सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विस्तार को बढ़ावा दिया।

अंग्रेजों की भाषा—नीति शैक्षिक हितों और आदर्शों के स्थान पर राजनीतिक हित-साधन का माध्यम बनी। अंग्रेजों ने इसी नीति के तहत हिंदी के नाम पर उर्दू को प्रोत्साहित किया, जिसका परिणाम यह निकला कि हिंदी और उर्दू भाषियों के मध्य खींचतान और सांप्रदायिक तनाव बढ़ा। इन्हीं सब वैमनस्यों के मध्य अंग्रेजी का वर्चस्व स्वतः स्थापित होता चला गया। यही अंग्रेजों की कूटनीतिक चाल भी थी, कि दो की लड़ाई में वे अपना फायदा उठाते रहें।

संपूर्ण देश में अंग्रेजी माध्यम के मिशनरी स्कूलों का जाल बिछता गया, भारत की क्षेत्रीय भाषाएं किनारे कर दी गई , हिंदी का महत्व घटता चला गया, और भारत का जन-मानस न केवल राजनीतिक स्तर पर, अपितु भाषा एवं संस्कृति के स्तर पर भी गुलामी की जकड़ में जक्कड़ता गया।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिंदी को संपूर्ण भारत में जन-भाषा का रूप प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधा गांधी जी ने भी भारत में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में खूब बढ़ावा दिया। स्वतन्त्रता संग्राम का दौर ऐसा था जब हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का भेद समाप्त हो गया था। आम बोली जाने वाली भाषा को सबने हिंदी के रूप में स्वीकार कर लिया था। उस समय हिंदी राष्ट्रीय पुनर्जागरण की भाषा थी और सभी राष्ट्रीय नेता यह मानते थे कि अखिल भारतीय स्तर पर जनता का संपर्क हिंदी में ही हो सकता है।

भाषा के प्रति यही रवैया जारी रहता तो बात कुछ और होती। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने जब 1950 में संविधान लागू किया, तब राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकृति तो दी, किन्तु एक शर्त के साथ। शर्त यह थी कि "संविधान लागू होने के पहले अंग्रेजी जिन प्रयोजन-क्षेत्रों की राजकीय व्यवहार की भाषा थी, संघ के उन सारे प्रयोजन-क्षेत्रों में संविधान के लागू होने की तिथि से लेकर 15 वर्षों की अवधि तक (अर्थात् 1965 तक) अंग्रेजी का व्यवहार जारी रहेगा"।

तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू पर अनेक राजनेताओं के हिंदी विरोधी दबावों के चलते 1963 में पुनः राजभाषा नियम में बदलाव लाया गया और प्रकारान्तर में अंग्रेजी भाषा का स्थान इससे स्वतः पुख्ता होता गया। नेहरू ने राजभाषा अधिनियम को शिथिल करते हुए कहा कि "जब तब लोग जरूरत महसूस करते रहेंगे अंग्रेजी वैकल्पिक राजभाषा बनी रहेगी एवं उसे हटाने का निर्णय मैं हिंदी भाषी जनता पर नहीं अहिंदी भाषी जनता पर छोड़ता हूं।"

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के साथ जो यह शिथिलता आई तो उसने न केवल हिंदी का नुकसान किया, अपितु हमारे भारत जैसे विकासशील देश की समूची शिक्षा-नीति एवं शिक्षा-नीति के साथ-साथ समूची नई पीढ़ी की मानसिकता को संक्रमित किया। भाषायी स्तर पर अत्यन्त सामान्य प्रतीत होने वाले इस मुद्दे ने आज हमारी संपूर्ण नई पीढ़ी को अपनी चपेट में ले रखा है।

आज हमारे पास नए से नए पारिभाषिक शब्दों का भंडार है, भाषान्तर के नए से नए विकसित तकनीक हैं, कम्प्यूटर हैं, छपाई के अत्याधुनिक साधन हैं, किन्तु राष्ट्रीय इच्छाशक्ति के

अभाव के कारण विज्ञान ही नहीं, उच्च शिक्षा के विविध विषयों के प्रशिक्षण में हिंदी का अथवा अन्य भारतीय भाषाओं का लगभग कोई स्थान नहीं है।

वस्तुत: किसी भी भाषा के प्रति कोई दुराग्रह होना ठीक नहीं है। अंग्रेजी भाषा के प्रति भी ऐसा कोई दुराग्रह क्यों हो ? भाषा तो जितनी भी सीखें, उतना अच्छा होता है। उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी ही क्यों, यदि फ्रांसिसी, यूनानी, जर्मन या चीनी भाषा भी सीखनी पड़े तो उसे सीखना ही चाहिए। किन्तु अपनी भाषा को छोड़ कर किसी अन्य भाषा में ही पढ़ने की अनिवार्यता निश्चित ही मानसिक स्तर को कुंठित करती है, इसमें सन्देह नहीं है।

जिस अंग्रेजी भाषा को हम आदर्श भाषा के रूप में सम्मोहन की स्थिति तक आत्मसात् किए हुए हैं, उस भाषा में भी रोमन और ग्रीक जैसी प्राचीन योरोप की भाषाओं के शब्दों को अपनाकर अपने आप को समृद्ध किया है, योग्य बनाया है। चिकित्सा विज्ञान के लगभग शत-प्रतिशत पारिभाषिक शब्द ग्रीक भाषा से लिए गए हैं। भौतिकी तथा अन्य वैज्ञानिक विषयों के भी अनेकानेक पारिभाषिक शब्द मूलत: ग्रीक अथवा लेटिन भाषा से लिए हुए हैं। फिर क्या कारण है कि हम अपनी भाषा को विगत 52 वर्षों में भी इस प्रकार से विकसित नहीं कर पाए कि उसके माध्यम से हमारी उच्च शिक्षा अधिक आसान और ग्राह्य बन जाती, जो निश्चित ही युवा पीढ़ी की छलकती ऊर्जा को सही दिशा देने में सार्थक भूमिका का निर्वाह भी करती।

अपनी भाषा के प्रति बेरुखी, विदेशी के प्रति आस्था, और शिक्षा-नीति के पुराने ढर्रे के कारण हमारे भारत का आज का युवा क्या उस स्थिति तक पहुंच सका है, जहाँ से उसके लिए हम यह कह सकें कि देश का युवा देश का अगुआ होता है ?

एफ 42/10, दक्षिण तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003

हिंदी में विज्ञान कथा साहित्य

ज्योति भाई

माइकल क्रिचटन ने एक उपन्यास लिखा ''जुरासिक पार्क''। इस वैज्ञानिक उपन्यास पर स्पीलबर्ग ने जो फिल्म बनाई उसने सारी दुनिया में तहलका मचा दिया। हिंदी भाषी क्षेत्रों में सम्भवत: यह पहली विदेशी फिल्म है, जिसे लाखों लोगों ने देखा और सराहा। विज्ञान कथा पर आधारित इस फिल्म ने साबित कर दिया है कि आज आदमी साहित्य और फिल्म के परम्परागत ढर्रे से अलग कुछ और जानना समझना तथा देखना चाहता है।

जुरासिक पार्क के पूर्व भी विदेशों में विज्ञान कथाओं पर दर्जनों फिल्में बनी हैं और उनमें अनेक लोकप्रिय भी हुई हैं। एचजी वेल्स के लिखे कथानक पर 'टाइम्स मशीन' स्टेनले कब्रिक के 'स्पेश ओडिसी' तथा एडगर एलन पो के चर्चित कथानकों पर रोचक फिल्में बनी हैं। उसी तरह 'लौलेरिस', स्टार वार्स, द क्लोज एनकाउंटर्स आव थर्ड काइन्ड एवं अन्तरिक्षवासियों पर बनी कुछ फिल्मों ने पश्चिमी जगत में अच्छी खासी लोकप्रियता हासिल की। विज्ञान जगत पर आधारित इन फिल्मों की लोकप्रियता का कारण फिल्म निर्माण की कोई विशिष्ट शैली नहीं थी, अपितु वहां उपलब्ध प्रचुर विज्ञान कथा साहित्य और जनता में विज्ञान के प्रति बढ़ती ललक ही इसका प्रमुख कारण रहा है।

हमारे यहां हिंदी में भिन्न स्थिति है। हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकार अभी इसी पचड़े में पड़े हैं कि विज्ञान लेखन को साहित्य माना जाए या नहीं। कहानी, कविता, उपन्यास लिखने वाले बड़े-बड़े पुरस्कारों से सम्मानित होते हैं, जबकि अच्छे से अच्छे विज्ञान लेखक की साहित्य के क्षेत्र में चर्चा तक नहीं होती।

जहां साहित्य में विज्ञान लेखन की यह स्थिति है वहां विज्ञान कथाओं का सृजन भला कैसे संभव होता? यदि विज्ञान—कथाएं लिखी भी जाएंगी तो साहित्य में उन्हें कितना स्थान मिलेगा। सहज ही कल्पना की जा सकती है।

प्राय: विज्ञान कथा (साइंस फिक्सन) और फंतासी (साइंस फैंटेसी) को लोग एक ही अर्थ में लिया करते हैं। लेकिन दोनों में काफी अन्तर है। महान विज्ञान कथाकार आसिमोव ने कथाओं को दो वर्गों में विभाजित किया है। यथार्थवादी तथा अतियथार्थवादी। यथार्थवादी कथाओं का कथानक हमारे वर्तमान या अतीत के ज्ञात परिवेश के इर्द-गिर्द विकसित होता है। अतियथार्थवादी कथाओं में ऐसे अज्ञात परिवेश की घटनाएं वर्जित होती हैं जिनके बारे में हमारा ज्ञान अत्यन्त सीमित या न के बराबर होता है। ये कथाएं आमतौर पर विज्ञान को आधार बनाकर लिखी जाती हैं। इन कथाओं को दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। विज्ञान कथा (साइंस फिक्शन या

साईफाई) तथा फंतासी (साइंस फैंटेसी)। फैंटेसी शब्द जिस ग्रीक मूल से उत्पन्न है उसका अर्थ है कल्पना। अत: आज जब हम किसी कथा को फैंटेसी कहते हैं तो हमारा मतलब ऐसी कथाओं से होता है जो विज्ञान के नियमों से सीमाबद्ध न होकर पूर्णत: रचनाकार की कल्पना पर सृजित की जाती हैं।

लेकिन विज्ञान कथा, फैंटेसी से काफी भिन्न है। विज्ञान कथा ठोस वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होती है। इसमें कल्पना की उड़ान जरूर हो सकती है लेकिन यह कल्पना वैज्ञानिक नियमों की अवहेलना नहीं करती। उदाहरणस्वरूप यदि किसी कथाकार ने गुब्बारे पर बैठाकर अपने कहानी के नायक को चन्द्रमा की यात्रा करवा दी, तो यह कभी विज्ञान कथा हो ही नहीं सकती। क्योंकि गुब्बारे से अन्तरिक्ष की यात्रा संभव ही नहीं है। यह तो सर्वज्ञान तथ्य है कि चन्द्रयात्रा अन्तरिक्ष यान से ही संभव है। गुब्बारे से चन्द्रयात्रा करवाने वाली कहानी अच्छी फंतासी भी नहीं कही जा सकती क्योंकि आज के विकसित वैज्ञानिक युग में हाईस्कूल स्तर का छात्र भी जानता है कि गुब्बारे से चन्द्रयात्रा नहीं हो सकती। लेकिन यही फंतासी आज से करीब दो सौ साल पहले काफी लोकप्रिय हो सकती थी क्योंकि तब तक न तो अन्तरिक्ष यान बने थे और न लोग अन्तरिक्ष के रहस्यों को ही जानते थे। बाबू देवकीनन्दन खत्री ने अपने उपन्यासों में अनेक तिलिस्मी घटनाओं का वर्णन किया है। इन घटनाओं के पीछे वैज्ञानिक तथ्य बहुत कम हैं कल्पना की उड़ान अधिक है। इन्हें फंतासी की ही श्रेणी में रखा जाएगा।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान कथाकार डा० जे०वी० नार्लीकर ने एक रोचक विज्ञान कथा लिखी है 'धूमकेतू'। कथा के अनुसार धूमकेतु बड़ी तेजी से पृथ्वी की ओर बढ़ा आ रहा था। वैज्ञानिकों की गणना के अनुसार इसका धरती से टकराना तय था। धरती से टकराने के बाद धरती की वही स्थिति होने वाली थी जो करीब साढ़े पांच करोड़ साल पहले डायनासोरो के युग में हुई थी। धरती पर भीषण-तबाही और सर्वनाश की आशंका सर्वत्र व्याप्त हो गई। धरती को इस संभावित ख़तरे से मुक्त करने के लिये निश्चय किया गया कि धूमकेतू को धरती पर पहुंचने के पहले ही अन्तरिक्ष में विस्फोट से उड़ा दिया जाए। ऐसा ही किया गया। धूमकेतू को उड़ा दिया गया। यह छोटे-छोटे टुकडों में होकर धरती के वायुमण्डल में आया और जलकर खाक हो गया। जिस समय वैज्ञानिक धरती को बचाने के लिए यह सारा उपक्रम कर रहे थे ठीक उसी समय पंडितों पुरोहितों ने भी पूजा पाठ शुरू कर दिया और जब धरती धूमकेतू के खतरे से मुक्त हो गई तो पंडितों ने भी अपनी पीठ ठोंकी। इस कथा में लेखक ने कहीं विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों की अवहेलना नहीं की। यह हिंदी की एक आदर्श विज्ञान कथा (अनुवादित) कही जा सकती है। दरअसल डा० नार्लीकर ने अपनी विज्ञान कथाएं मराठी में लिखी हैं जिनका हिंदी अनुवाद किया गया है।

हिंदी में विज्ञान कथाओं की वर्तमान स्थिति की विवेचना करने के पूर्व आइए जरा अपने अतीत में भी झांक लें। हमारे प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में अनेक ऐसी घटनाएं वर्णित है जो आज के विकसित वैज्ञानिक युग में एक-एक कर सच साबित हो रही हैं। हजारों साल पहले जब जमीन पर

आधुनिक विज्ञान के चरण भी नहीं पड़े थे हमारे मनीषियों के दिमाग में ऐसी ऊंची कल्पनाओं को जन्म लेना आश्चर्यजनक लगता है। भगवान राम का लंका से पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या लौटना, युद्ध के समय ब्रह्मास्त्रों एवं अन्य घातक अस्त्र शस्त्रों को उपयोग, महाभारत में संजय द्वारा धृतराष्ट्र को युद्ध का आंखों देखा हाल बताना, गांधारी के गर्भ पिण्ड द्वारा सौ पुत्रों का जन्म, भगवान शंकर द्वारा अपने पुत्र गणेश के सिर में हाथी का सिर रोप देना जैसी घटनाएं हमारे पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित हैं। तब का पुष्पक विमान और आधुनिक वायुयान, तब का ब्रह्मास्त्र और आधुनिक मिसाइल और परमाणु बम, तब के गर्भपिण्ड द्वारा शिशु जनन तथा आधुनिक परखनली शिशु तथा तब गणेश के सिर में हाथी के सिर का रोपण और आधुनिक सर्जरी में कितनी समानता हैं। इन सब के बावजूद इन्हें विज्ञान कथाओं की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। क्योंकि तत्कालीन समाज की विज्ञान और प्रौद्योगिकी इतनी उच्च नहीं थी जहां इस तरह की घटनाएं संभव हो सकती। लेकिन ये कल्पनाएं अति उच्च स्तर की हैं। इन्हें फंतासी तो कहा जा सकता है।

जहां तक हिंदी में आधुनिक विज्ञान कथा साहित्य की बात है इसकी शुरूआत बाबू देवकीनन्दन खत्री के तिलिस्मी उपन्यासों से मानी जाती है। खत्री जी के उपन्यासों ने हिंदी में विशाल पाठक वर्ग बनाया। यही नहीं इन उपन्यासों से हिंदी की एक नई विद्या विकसित होनी शुरू हो गई । इस विधा को विकसित करने में खत्री जी के बाद उनके पुत्र दुर्गा प्रसाद खत्री, हरे कृष्ण जौहर तथा किशोरी लाल गोस्वामी आदि ने विशेष योगदान दिया। इन लोगों ने रहस्य, रोमांच से परिपूर्ण अनेक तिलिस्मी उपन्यास लिखे जिनमें अनेकों की पृष्ठभूमि में विज्ञान सम्बन्धी चमत्कार भी शामिल थे ।

यह वह समय था जब विदेशों में ठोस वैज्ञानिक तथ्यों पर विज्ञान कथाएं लिखी जाने लगी थीं और उनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही थी। ठोस वैज्ञानिक तथ्यों पर हिंदी में विज्ञान कथाएं साठ के दशक से लिखी जानी शुरू हुई। शुरूआत 1953 में डा० सम्पूर्णानंद ने अपने लघु उपन्यास 'पृथ्वी से सप्तर्षि मंडल' से किया। 1956 में ओम प्रकाश शर्मा का बड़ा उपन्यास ''मंगल यात्रा'' प्रकाशित हुआ। हिंदी का यह पहला उपन्यास था जो विदेशी वैज्ञानिक उपन्यासों की टक्कर का था। उक्त के अलावा डा० शर्मा ने जीवन और मानव, पांच यमदूत, समय के स्वामी आदि उपन्यास लिखे। इस दशक में आचार्य चतुरसेन के ''खग्रास'' तथा राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास ''विस्मृति के गर्भ'' भी उल्लेखनीय हैं।

डॉ० ओम प्रकाश शर्मा के बाद विज्ञान कथाओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य डॉ० नवल बिहारी मिश्र ने किया। उन्होंने सरस्वती और विशाल भारत में विज्ञान कथाएं लिखीं। बाद में विज्ञान लोक तथा विज्ञान जगत में उन्होंने नियमित कथाएं लिखी। 1962:63 में उनका उपन्यास ''अपराध का पुरस्कार'' विज्ञान जगत में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। डॉ० मिश्र के प्रमुख विज्ञान कथा संग्रह हैं ''अधूरा आविष्कार, आकाश का राक्षस, हत्या का उद्देश्य (1970)। उनकी प्रमुख कहानियां : शुक्र ग्रह की यात्रा, पाताल लोक की यात्रा, उड़ती मोटरों का रहस्य, सितारों के आगे और भी जहां, अदृश्य शत्रु आदि 60 ओर 70 के दशक में विष्णु दत्त शर्मा और रमेश वर्मा भी

उल्लेखनीय विज्ञान लेखक रहे। रमेश वर्मा ने ''अंतरिक्ष स्पर्श'' (1963) सिंदूरी ग्रह की यात्रा, अंतरिक्ष के कीड़े (1966) लिखी।

अस्सी और नब्बे के दशक में रमेश दत्त शर्मा ने अनेक रोचक विज्ञान कथाएं लिखीं। प्रमुख हैं— ''प्रयोग शाला में उगते प्राण, हरा मानव'' हंसोड़ जीन आदि। इस बीच दैनिक और मासिक पत्रों में अनेक विज्ञान कथाएं प्रकाशित हुईं, अनेक नए विज्ञान कथाकार प्रकाश में आए। इनमें प्रमुख हैं : बाल फोंइके, अरविन्द मिश्र, प्रेमानन्द चन्दोला, श्यामसरन ''विक्रम'', विष्णुदत्त शर्मा, यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक', डा. नवल बिहारी मिश्र, शुकदेव प्रसाद, सुधा मस्करा और सुशील कपूर आदि। इन लेखकों ने हिंदी में विज्ञान कथा साहित्य को स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। हिंदी की कई पत्रिकाओं ने समय-समय पर विज्ञान कथा विशेषांक निकाले जो काफी चर्चित हुए। इनमें प्रमुख हैं, ''नन्दन'' (1969), पराग (1975), विज्ञान प्रगति (1978), धर्मयुग (1980), मेला (1981), विज्ञान (नवम्बर 1984, जनवरी 1985) तथा विज्ञान (फरवरी 1985), पराग (1984), सारिका (सितम्बर प्रथम पक्ष—1985) सोवियत लिटरेचर (जून 85) तथा चंपक (जून 1999) आदि।

हिंदी में विज्ञान कथा लेखन के क्षेत्र में उचित वातावरण बनाने में अनूदित साहित्य ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। ''सारिका'' के सितम्बर 1985 के अंक में अरुण साधू लिखित ''विस्फोटक'' (मराठी) और मोहन संजीवन लिखित ''मैं मरना चाहता हूं'' (तमिल) के हिंदी अनुवाद प्रकाशित हुए। राशेल कार्सन के प्रसिद्ध उपन्यास ''द साइलेंट स्प्रिंग'' का हिंदी अनुवाद प्रेमानन्द चंदोला द्वारा नवनीत में छपा। गुणाकर मुले ने आसिमोव का 'शिशु रोबोट' तथा विक्टर कोमारोव का दूसरी धरती तथा रमेशचन्द्र शर्मा ने गोर बिडाल के ''छुद्रग्रह'' उपन्यासों का हिंदी रूपान्तर किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. जयंत विष्णु नार्लीकर के वैज्ञानिक उपन्यास ''धूमकेतु'' और ''वयं रक्षाम:'' (मराठी) के हिंदी अनुवाद हिंदी जगत में काफी लोकप्रिय हुए हैं।

हिंदी की अपेक्षा अन्य कुछ भारतीय भाषाओं में विज्ञान कथा साहित्य ज्यादा समृद्ध है। टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में खगोल भौतिकी के प्रोफेसर डा. जयंत विष्णु नार्लीकर ने अपने वैज्ञानिक उपन्यास मराठी में लिखे हैं। इन उपन्यासों के हिंदी अनुवाद बहुत लोकप्रिय हुए हैं। आज मराठी, बंगला, तमिल, तेलगू की पत्र पत्रिकाओं में हिंदी की अपेक्षा अधिक विज्ञान कथाएं लिखीं और पढ़ी जा रही हैं।

मराठी में विज्ञान कथा को बढ़वा देने में ''नवल'' नामक पत्रिका की अच्छी खासी भूमिका रही है। इसके संपादक अनंत अंतरकर मराठी विज्ञान कथा के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी प्रेरणा से मराठी में कई विज्ञान कथाकार पैदा हुए जिनमें डी. पी. खवटे काफी चर्चित हैं। उनका कथा संग्रह ''मांझ नाव रमाकांत पालवकर'' मराठी विज्ञान कथा साहित्य की नींव कहा जाता है। बंगला में पहली विज्ञान कथा ''ह-ज-ब-ल-र'' मानी जाती है, जिसे प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक सत्यजित राय के पिता सुकुमार राय ने लिखा था। यह कथा लेविस कैरोल की ''एलिस इन वंडरलैण्ड''

से प्रभावित थी। सुकुमार राय की "प्रोफेसर हेशोराम होशियार" की काफी चर्चित विज्ञान कथा रही है। इसके बाद प्रेमेन्द्र मिश्र की खोनाडा नामक धारावाहिक विज्ञान कथा काफी चर्चित रही। राय इन्स्टीट्यूट बम्बई के प्रोफेसर सुकुमार विश्वास ने "ओ कलकत्ता" में अन्तरिक्ष में मानव बस्ती की अवधारणा पर अच्छा उपन्यास लिखा।

आज के वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक तथ्यों को समझने में विज्ञान और तकनीकी की भावी दिशा और आशंकाओं की परख के लिए विज्ञान कथाएं बहुत उपयोगी माध्यम हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से जटिल से जटिल वैज्ञानिक सिद्धांत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षण के क्षेत्र में भी विज्ञान कथाओं का विशेष महत्व है। विज्ञान कथाओं की उपयोगिता के संदर्भ में आसिमोव अपने बचपन की याद करते हैं। आसिमोव के अनुसार उनके पिता आसिमोव को पाठ्यक्रम के अलावा केवल "अमेजिंग स्टोरीज" ही पढ़ने की छूट दी थी। यह विश्व की पहली विज्ञान कथा पत्रिका थी। यह छूट आसिमोव को उनके पिता ने इसलिए दी थी क्योंकि विज्ञान कथाएं केवल कथाएं ही नहीं थीं वरन् उनमें विज्ञान भी मौजूद था। विज्ञान कथा में अपनी बढ़ती हुई रुचि के लिए आसिमोव पत्रिका की क्विज प्रतियोगिता को श्रेय देते हैं जिसके हल के लिए उन्हें अरुचिकर विज्ञान कथाएं भी पढ़नी पड़ती थी।

बच्चों और किशोरों को वैज्ञानिक तथ्यों से परिचित कराने के लिए विज्ञान कथाओं से अच्छा और कोई माध्यम हो भी नहीं सकता। उदाहरण के लिए पचास के दशक में छपी आसिमोव की दो विज्ञान कथाएं "लकी स्टार व ओशन्स आव वीनस" को शुक्र ग्रह पर व्याख्यान देने से पहले बच्चों को पढ़ाने हेतु दिया जा सकता है। पचास के दशक में, जब ये विज्ञान कथाएं लिखी गईं, उपलब्ध ज्ञान के अनुसार शुक्र एक गर्म पर जल—आप्लावित ग्रह था, जिसमें पृथ्वी के "डायनासोर युग" के प्राणियों के रहने की कल्पना की गई थी पर अब यह एक स्वीकृत तथ्य है कि शुक्र जहरीले बादलों से आवृत एक लाल तप्त ग्रह है, जिस पर जीवन तो क्या एक बूंद पानी भी सम्भव नहीं है। अब यदि यह विज्ञान कथा बच्चों को पढ़ने को दी जाए तथा अगले दिन कक्षा में (या घर पर ही) उन्हीं से पूछा जाए कि क्या शुक्र पर समुद्र है? सम्भव है, बच्चों का उत्तर हां में हो। तब बच्चों को यह बताया जा सकता है कि वैज्ञानिकों के अनुसार इस समय शुक्र पर 600 डिग्री फारेनहाइट (600°F) ताप है। क्या इतने ताप पर भी आसिमोव की विज्ञान कथा में वर्णित सागर में पानी सम्भव है? ऐसे ही अनेक रोचक प्रश्न किए जा सकते हैं और प्राप्त उत्तरों को ध्यान में रखते हुए विषय से सम्बन्धित नई वैज्ञानिक जानकारियां दी जा सकती हैं।

हिंदी साहित्य में यदि विज्ञान कथाओं को प्रतिष्ठित करना है तो हमें कई स्तरों पर प्रयास करने होंगें। विज्ञान की विविध शाखाओं के लिए अपनी विशिष्ट तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली है। लेकिन यह शब्दावली अभी विज्ञान कथा के क्षेत्र में नहीं बन पाई है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग को इस बारे में ध्यान देना चाहिए। पारिभाषिक शब्दावली के अभाव में हिंदी का

रचनाकार अभी अंग्रेजी शब्दों से ही अपना काम चला रहा है। अंग्रेजी के रचनाकारों ने विज्ञान कथा के क्षेत्र में नए-नए शब्दों की खोज की है और उन्हें गढ़-गढ़ कर काफी लोकप्रिय बना दिया है । उदाहारण स्वरूप मानव जैसे गुलाम के लिए दो शब्द आए एन्ड्रायड (Android) से तथा रोबोट (Robot), एन्ड्रायड की उत्पत्ति ग्रीक मूल के शब्द एन्ड्रोज (Andros) तथा रोबोट की व्युत्पत्ति चेक के रोबोटा (Robota) से हुई है। एन्ड्रायड और रोबोट दोनों शब्दों का उपयोग ऐसी मानवाकृति के लिए किया गया जो मानव तो नहीं था लेकिन मानव के इच्छानुसार कार्य करता था। दोनों शब्दों का एक ही अर्थ में उपयोग से भ्रम की स्थिति बन सकती थी । शीघ्र ही विज्ञान कथाकारों ने इसका हल निकाल लिया । रोबोट उस मानवाकृति को कहा गया जो पूर्णतया धातुनिर्मित थे। जबकि एन्ड्रायड, मानवीय ऊत्तकों से मिलते-जुलते पदार्थों से निर्मित कृत्रिम मानव के लिए कहा गया। हिंदी के रचनाकार अपनी कथाओं में रोबोट शब्द का धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन रोबोट की जगह अब इसका सन्निकट रोबो और हिंदी का शब्द 'यन्त्रमानव' भी खूब प्रयोग हो रहा है। लेकिन एन्ड्रायड के लिये अभी भी हिंदी के रचनाकार कोई लोकप्रिय शब्द नहीं ढूढ़ पाए हैं।

विज्ञान कथाओं में पात्रों का चारित्रिक विकास न हो पाना एक दूसरी समस्या है। दूसरे शब्दों में, हम यों कह सकते हैं कि विज्ञान कथा में कथानक और कथोपकथन के सिवा और कुछ नहीं होता। ऐसा लगता है कि विज्ञान कथाकारों को पात्रों के चरित्र-निर्माण का अवसर ही नहीं मिल पाता। बात कुछ हद तक सही भी है। खुद आसिमोव यह स्वीकार करते हैं कि विज्ञान कथा का अधिकांश कथानक तो उस अपरिचित परिवेश से पाठकों का तादात्म्य (परिचय) स्थापित करने में ही 'खर्च' हो जाता है। विज्ञान कथा एक ऐसे परिवेश की परिस्थितियों और घटनाओं का वर्णन करती है, जिसके बारे में पाठकों का ज्ञान अबोध शिशु के ही सदृश होता है। यही कारण है कि विज्ञान कथा में पात्रों का चारित्रिक विकास दर्शाने का समय कथाकार को नहीं मिल पाता। पर यदि कोई विज्ञान कथाकार चाहे और वह कर सके तो इस पक्ष को पर्याप्त महत्व मिल सकता है। हमारे देश में तो नैतिक मूल्यों और चरित्र का बड़ा महत्व है। संभव है पाश्चात्य विज्ञान कथा की इस कमी को दूर करने को श्रेय हमें ही मिलना हो।

लेखन एक कला है जो निरंतर अभ्यास से निखरती है। कहानियां लिखने के लिये तथ्यों के अलावा सामाजिक सम्बधों का ताना बाना बुनने की कला भी आनी चाहिए। बात यदि विज्ञान कथा की है तो इसमें केवल लेखन कला से ही काम चलने वाला नहीं है। इसके लिए विज्ञान की जानकारी भी आवश्यक है। बिना विज्ञान की जानकारी के लेखक फंतासी तो लिख सकता है लेकिन विज्ञान कथा नहीं । लेखक यदि विज्ञान की किसी शाखा में विशेषज्ञ हो या वैज्ञानिक हो तब तो वह और भी अच्छी विज्ञान कथा लिख सकता है। डा. नार्लीकर उच्च कोटि की विज्ञान कथाएं इसीलिए लिख पाए क्योंकि वे खुद भी उच्च कोटि के वैज्ञानिक हैं।

हमारे कहने का यह आशय कदापि नहीं है कि जिसके पास विज्ञान की डिग्री नहीं है वह विज्ञान कथाकार नहीं बन सकता। लेकिन उस कथाकार को कम से कम उतना विज्ञान तो जानना

ही होगा जितना उस कथा के विकास के लिए आवश्यक हो। उदाहरणस्वरूप कथा का नामक अन्तरिक्ष यान से यदि 'टिटान' उपग्रह पर पहुंचता है तो कथा का विकास ऐसे ढंग से किया जाना चाहिए कि टिटान के बारे में अब तक की सभी जानकारी से वह मेल खाए। जो बातें अज्ञात हैं उन पर कल्पना की जा सकती हैं। लेकिन यह कल्पना भी तर्क पर आधारित होनी चाहिए। यदि कोई कथाकार अपना नायक टिटान पर उतारता है लेकिन टिटान को वृहस्पति का उपग्रह बताता है तो यह कथा एकदम गलत होगी क्योंकि टिटान वृहस्पति का नहीं अपितु शनि का उपग्रह है।

आज जब सारी दुनिया नये-नये वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण नए तरह के संकटों से जूझ रही है, विज्ञान कथाएं ही समाज को नई दिशा दे सकती है। हमारी धरती आज नाभिकीय हथियारों के ढेर पर रखी है। प्रदूषण पूरे वायुमण्डल, जलमण्डल और जैवमण्डल को तबाह कर रहा है। बेतहासा बढ़ती जनसंख्या, एड्स और कैंसर जैसी भयावह बीमारियां, अकाल, भुखमरी जैसी समस्याएं हमारे सामने मुंह बाए खड़ी हैं । इनसे बचने का रास्ता कौन सुझाएगा? निश्चय ही यह रास्ता हमें आज का लेखक और खासकर विज्ञान लेखक ही सुझा सकता है। इन समस्याओं के सम्बन्ध में तीव्र जनजागरण और जनमत तैयार करने के लिए विज्ञान कथाएं एक अच्छा माध्यम बन सकती हैं।

घूरपुर, इलाहाबाद-212110

तुलसी का मूल्यबोध : विश्वास, श्रद्धा और मंगल के साक्ष्य पर

—डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

विश्वास श्रद्धा और मंगल तुलसी साहित्य का सेतु भी है और हेतु भी। सेतु साधक का है और हेतु है.....रचनाकार का । यदि ये तीनों भाव किसी साधक के आचार तत्व बन जाएं तो वह तुलसी साहित्य का संतरण कर सकता है और जगत में शिवत्व की स्थापना भी। ''वर्ण, अर्थ, रस, छंद और मंगल का सम्मिलन ही काव्य है। सरस्वती और गणेश,.....शब्द अर्थ, भाव, छंद और मंगल के देवता है, इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने अद्‌भुत महाकाव्य, 'रामचरतिमानस, के मंगलाचरण के प्रथम छंद में वाणी और विनायक की वंदना की है।''[1]

तुलसी के मूल्यबोध की चर्चा के संदर्भ में जो मूल्य निर्धारण, स्वीकरण या ग्रहण की सामर्थ्य और प्रक्रिया है, प्रथमत: उसे समझना होगा। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी बहुत कम रचनाक़ार ऐसे हैं, जिन्होंने मूल्यों को ग्रहण करने और अपनी रचना के माध्यम से उन्हें समाज में पुन: प्रतिष्ठित करने की सामर्थ्य अर्जित की हो। तुलसी ने सामाजिक पक्षों से उत्पन्न होने वाले काल के निरंतर चले आने वाले निष्कर्षात्मक मूलभूत विचार को एक ऐसे रूप में स्वीकार किया है, जो विचार व्यक्ति की परिस्थिति और मन:स्थिति को पार करके आज भी खड़ा है। इसीलिए, तुलसी का मूल्यबोध चिरंतनता का मूल्यबोध है। उदाहरण के लिए कबीर को लें, सूर को लें और तुलसी को लें, इन दोनों में वैसी निरंतरता नहीं है, जैसी तुलसी में है। सूरदास की रचनाओं को सब लोग बड़े प्रेम से गाते हैं। कृष्ण के बहुत से चित्र सामने आते हैं। सूर ने उनके माध्यम से मन के भीतर की भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से अभिव्यक्त किया है। मगर सूर भी अपनी आंतरिक मनस्थिति के मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति के कारण कविता को निमित्त मानकर वे उसी में निरन्तर बने रहे। यहां प्रधान है व्यक्ति की समष्टिगत मूल्य के साथ स्थापना। अगर व्यक्ति अपने को अलग मानकर मूल्यों के साथ जुड़ने का प्रयत्न करता है, तब सूर और कबीर पैदा होते हैं। दूसरी ओर अपने को पूरी तरह से समाप्त करके और तात्कालिक परिस्थिति से ऊपर उठकर जब कोई व्यक्ति बात करता है तो उसके भीतर चिरंतन मूल्य बोध का जागरण होता है। जैसे गीता और उपनिषद चिरंतन मूल्य बोध के उदाहरण हैं। क्योंकि उसका रचनाकार जो भी हो, वक्ता जो भी हो, वह वक्ता भले ही कोई कथानक कह रहा है, कोई बात कर रहा है, वह चाहे अर्जुन कृष्ण का संवाद हो, चाहे उद्‌दालक का संवाद हो अथवा जाबालि का संवाद हो; इन सब के आधार पर बहुत बड़े मूल्यों की स्थापना होती है। तुलसी के मूल्यबोध की भी पहली विशेषता यही है कि उनके मूल्य बोध में तात्कालिक मनस्थिति और परिस्थिति विसर्जित हो जाती है। इस विसर्जन के बाद उसमें हजारों वर्षों का चिरन्तन चला आने वाला इतिहास जब कभी अपने को अभिव्यक्त

3899 H.A./2001—4A

करने का प्रयास करता है, तो उसके भीतर एक मूल्य बोध का जागरण होता है। यही तुलसी के मूल्यबोध की पीठिका है। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि तुलसी ने जिन मूल्यों को लिया और जिन मूल्यों के आधार पर पात्रों के चित्र उकेरे वही उनकी विशेषता बन पड़ी। उन मूल्यों में चार बातें सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। एक बात है मानवीय सभ्यता और संस्कृति के विकास के विविध चरण, जो वर्णानां अर्थसंघानां से लेकर वंदे वाणी विनायकों तक जाते हैं। अब इस आधार पर जहां काव्य की इतनी सुदीर्घ यात्रा दिखाई पड़ रही है, वह किसी मनुष्य मात्र अथवा देश विशेष की नहीं, अपितु संपूर्ण मानव की लंबी यात्रा है। मनुष्य मात्र की ऐसी लंबी यात्रा जिस कवि के सामने है और जो वाणी तथा उसके विनायकत्व को अथवा विकास को अपना परम मानता है, किसी व्यक्ति को नहीं, देव प्रतिमाओं को भी नहीं, उसके मन में अगर मूल्यों का प्राकट्य होगा, तब वे मूल्य कौन से होंगे ? वे मूल्य होंगे ----- विश्वास, श्रद्धा और मंगल। इन तीनों में हमें एक सातत्य एक क्रम प्राप्त होता है। जब गोस्वामी जी कहते हैं—— "जाने बिनु न होई परतीति। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीति। अब यह जो परतीति अथवा विश्वास है, वह ज्ञान के बाद प्रारम्भ होने वाली यात्रा है जो कि जाने बिन कह दिया पहले ही। अगर हम इसे दार्शनिक संदर्भ में लेते हैं तो ज्ञान के बाद प्रतीत आती है, प्रतीति के बाद श्रद्धा और श्रद्धा के बाद व्यक्ति मंगल के साम्राज्य में प्रवेश करता है। इस तरह से विश्वास प्रथम चरण पर आता है। यहीं से व्यक्ति अपने आप को आस्था के केन्द्र में प्रवेश कराने का प्रयत्न करता है। यहां पर भी वह व्यक्ति सापेक्ष्यता बनी रहती है क्योंकि विश्वास करने वाला और विश्वनीय से संबंध होने के लिए दोनों का होना आवश्यक है। इसके अभाव में विश्वास की स्थापना कदापि संभव नहीं हो सकती। यह बात श्रद्धा के लिए भी कही जा सकती है। लेकिन श्रद्धा और विश्वास का अंतर यह है कि विश्वास प्रथम चरण है और श्रद्धा उसके बाद गहराई का और अधिक बड़ा चरण है। जब हम विश्वास से श्रद्धा तक पहुंचते हैं तो श्रद्धा और भी धनीभूत हो जाती है। यही श्रद्धा जब संस्कार और परंपरा के साथ अनुस्यूत होकर एक रूप में मिल जाती है, तब उसका नाम होता है ——————— "मंगल"। श्रद्धा में श्रद्धास्पद और श्रद्धालु का विवेक बना रहता है। मंगल में कोई विवेक नहीं रह जाता। हमें एक अखंड मूल्य एवं तत्व मंगल के नाम से प्राप्त होता है। मंगल में आशीर्वाद देने वाले और आशीर्वाद लेने वाले दोनों ही उसके छोटे-छोटे पात्र बनते हैं। मंगल एक विराट ध्रुव है। हम इसी के प्रकाश में विश्वास और श्रद्धा को देख पाते हैं। मंगल उसका चरम फल है। तुलसी ने जो पूरा गायन किया है, वह विश्वास, श्रद्धा और मंगल का ही किया है। अब इनकी कुछ व्याख्याओं को ले सकते हैं। सबसे पहले यह विचार करें कि राम के जन्म के कुल कितने निमित हैं। जितने निमित हैं उसके दो पक्ष हैं। एक पक्ष है जो विश्वास खंडित करता है। दूसरा पक्ष है जो मंगलमय है। इस संदर्भ में नारद को ले सकते हैं। विष्णु को लें, जो स्वयं मंगलमय हैं। इसी तरह रावण, सुबाहु और मारीच को लें। इनमें ये सभी स्वयं के मूल विश्वास के विरूद्ध आचरण करते हैं। विश्वास और श्रद्धा के विरुद्ध आचरण करना दंडनीय अपराध है। क्योंकि किसी भी जाति की सत्ता श्रद्धा और विश्वास पर टिकी हुई है। अगर विश्वास और श्रद्धा नहीं हैं, जो जाति की मंगलमय की अवधारणा समाप्त हो जाएगी। हमारे यहां प्रभुमंगलमय है, हमारे यहां समुद्र मंगलमय है, हमारे यहां नदी मंगलमय है। हमारे यहां

3899 H.A./2001—4B

नक्षत्र मंगलमय है। नक्षत्र यदि राशि के अनुकूल होता है तो मंगल आता है और प्रतिकूल होता है तो अमंगल. । इसलिए भारतीय परंपरा में मंगल समूचे ब्रह्मांड के विभिन्न क्षेत्रों को निर्धारित करने वाला व्यक्ति के ऊपर भी नियंत्रित करने वाला एक महिमामंडित मूल्य के रूप में स्थापित है। हम यह देखते हैं कि विश्वास और श्रद्धा के सोपान से चढ़कर मंगल तक पहुंचने वाला क्रम उन लोगों द्वारा तोड़ दिया गया, जिनके कारण भगवान को अवतरित होना पड़ा। प्रत्येक पात्र इसी मन: स्थिति से गुजरकर उज्ज्वल बनाता है। मंगल बनता है। लक्ष्मण या सीता इनके उदाहरण हैं। राम और भरत आद्यंत एक रस रहते हैं क्योंकि वे पहले मंगल से अपना अभिन्न तादात्म स्थापित कर चुके हैं। ये दो उच्चतम मानक हैं। इसमें कुछ हद तक सीता भी आती है। किंतु सीता को उच्चतम रूप में बताने के लिए गोस्वामी जी को कोई न कोई अवांतर उपाय निकालना पड़ा है। लेकिन भरत को उच्चतम बनाने के लिए कोई उपाय नहीं निकालना पड़ा। इसी प्रकार राम को उच्चतम बताने के लिए कोई अवांतर उपाय निकालने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन सीता माया के रूप में रहें या माया रहित होकर रहें इसके लिए कोई न कोई उपाय निकालना पड़ा। तब वे जगदंबा सीता को मान पाए। सीता के उस मंगल रूप को प्राप्त करने के लिए उन्हें कोई न कोई व्याख्या परक उपाय खोजना पड़ा। जबकि प्राचीन वाङ् मय में हमें सीता का यह रूप (= अवांतार रूप से प्रस्तुत किया हुआ) प्राप्त नहीं होता। यदि बाल्मीकि रामायण तुलसी के सीता के कथानक की तुलना करे तो स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ता है। बाल्मीकि सीधी-सीधी बात कहते चलते हैं। गोस्वामी जी प्रत्येक बात के बारें में सावधान हैं। जब वे जरा सी बात जोड़ते हैं तो उसकी व्याख्या तो आज के बाद कभी भी देनी पड़ेगी। भले ही उन्होंने अपने मन में न सोचा हो पर एक बार जो उनके साथ मूल्यबोध की भूमिका अब तक कथानक में स्पष्ट हो गई उस भूमिका ने उनकी पूरी स्पष्ट रूपरेखा अपने आप खींच दी कि यहां यह है और यहां यह है। अगर इस रेखा के कक्ष में जो-जो पात्र अथवा व्यक्तित्व आते हैं तो उनके बारे में ये-ये बातें होनी चाहिए।

तीसरा एक और व्यक्तित्व है जो भरत और राम के सदृश है और वे हैं भगवान शिव। अगर इन तीन पात्रों को छोड़ दें तो चौथा कोई पात्र नहीं मिलेगा, जिसे हम कह सकें कि व मंगल का साक्षात विग्रह है। इसलिए विश्वास और श्रद्धा इन दोनों को पार करके मंगल तक पहुंचने की यात्रा, तुलसी का एक मात्र मूल्यबोध है। शेष सभी मूल्य इसी में पर्यवसित हो जाते हैं। लोकमंगल भी विश्वास के आस-पास खड़ा होता है। श्रेष्ठ नायक भी विश्वास और श्रद्धा के आस-पास खड़े होते हैं। लोकमंगल में लोक विशेषण मंगल का अवमूल्यन करता है। कारण कि मंगल इससे और ऊपरी कक्षा में प्रतिष्ठित है। तुलसी ने उसका सीधा-सादा रूप भी प्रस्तुत किया है। यह है—— ———— शिव, राम और भरत के स्वरूप की प्रस्तुति। श्रद्धा विश्वास सहसा पैदा हो सकते हैं पर मंगल सहसा पैदा नहीं हो सकता। मानव सभ्यता की सुदीर्घ परंपरा में हजारों वर्षों के इतिहास में निरंतर प्रत्यनों के परिणाम स्वरूप मंगल जैसे मूल्य की अभिव्यक्ति होती है। "मंगलानां च कतारा" में वाणी के माध्यम से मनुष्य के उदात्तीकरण का प्रत्यन किया गया है। यही विनायक है। यहां विनायक सामूहिक चेतना का प्रतीक है और मंगल का आधार (अर्थात् सत्व) भी। यहां जो

मंगल का निर्माण होता है, वह वर्ण, अर्थ, रस और छंद आदि के माध्यम से ही होता है। इन ललित उपदानों से हजारों वर्ष की लंबी परंपरा के बाद मानव सभ्यता ने जिस एक मात्र मूल्य की खोज की है, वह है मंगल। उस मूल्य के पहले के चरण हैं ———————— विश्वास और श्रद्धा। यहां एक प्रश्न यह उठता है कि शंकर को तो पहले विश्वास कह दिया, तो फिर उन्हें मंगल कैसे कह सकते हैं। इस संदर्भ में कहूंगा कि एक प्रारंभ है और एक अंत। हमारे यहां कहते हैं कि उसका न आदि है न अंत। इसलिए शिव भी मंगल है। तभी शिव का अर्थ ही कल्याण है। और शिव प्रारंभ में भी है। तो मूल्यों की यात्रा का प्रारंभ ही मंगल की छाया से है और समाप्ति भी मंगल की पूर्ण प्रतिष्ठा से है। इसलिए शिव विश्वास भी हैं और मंगल भी, कल्याणकारी तो हैं ही। यही राम का है। यही भरत का है। इसलिए राम, भरत और शिव विश्वास, श्रद्धा और मंगल के पर्याय हैं। कभी विश्वास, श्रद्धा और मंगल न तो एक दूसरे के विरूद्ध हैं और न ही एक दूसरे से अलग ही। पर एक दूसरे को अलग करके देखने की प्रवृति भी उसके क्रमिक विकास के प्रति न्याय नहीं होगा। इस क्रम से मंगल तक पहुंचने का प्रत्यन किया गया है। जहां-जहां यह प्रयत्न खण्डित हुआ है, वहां-वहां मंगल से राम से, भरत से शिव से, लोग दूर होते गए हैं। इसीलिए गोस्वामी जी ने विश्वास श्रद्धा और मंगल इन तीनों मूल्यों को स्थापित किया है। इन तीनों में शिखर है ———— मंगल। इनमें सबसे पहले आता है ————विश्वास। वि (उपसर्ग) पूवर्क श्वस प्राण ने धातु से "विश्वास" निष्पन्न होता है। उपसर्ग के योग से इसका प्रत्यय या प्रतीति अर्थ होता है। विश्वास अत्यंत जटिल भी है और सहज भी। जब तक उसकी पुष्टि अथवा सिद्धि नहीं हो जाती, तब तक वह जटिल रहता है और पुष्टि अथवा सिद्धि के पश्चात् वह सहज और एक रस हो जाता है। यह जीवन का सत्व भी है। कारण की जब तक यह बना रहता है तभी तक विश्वासी का सत्व विश्वासक के साथ है, जिस क्षण इसके साथ छल किया जाएगा, तत्क्षण यह घात में बदलकर प्रतिगामी हो जाता है। यह दो प्रकार का होता है। एक स्वानुभूत होता है दूसरा परानुभूत। रामचरितमानस में यह विश्वास के रूप में एक बार विस्वास के रूप में 14 बार विश्वास के रूप में ग्याहर बार, विस्वासू के रूप में दो बार, विश्वास के रूप में एक बार और अपने पर्याय परतीति के रूप में दो बार और परतीति के रूप में तीन प्रयुक्त हुआ है। सबसे पहले रचनाकारक लिखता है ———— "भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।" पार्वती श्रद्धा है और शंकर विश्वास। कारण कि पार्वती अपनी श्रद्धा के सहारे विश्वास अर्जन में प्रयत्नशील है। इसके लिए उन्हें बड़ी चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। सती कीन्ह सीता कर वैषा"। जिसके कारण विश्वास खंडित हुआ और विश्वास रूप शंकर को संकल्प करना पड़ा ———— **"सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं। यह तन सती भेंट अब नाहीं।"** विश्वास और श्रद्धा दोनों की एकत्र उपस्थिति में कार्य सिद्ध होता है नहीं तो **याभ्यां विनान पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थभीश्वरम्।** प्रयाग में एकत्र संत समाज में अटल विश्वास ही अक्षयवट है और शुभ कर्म ही उस तीर्थराज का समाज (परिकर) है। **"वटु विस्वास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा ॥1।2।11॥"** अपनी रचना के संबंध में तुलसी का अटल विश्वास है कि इसे सुनकर सज्जन सुख पाएंगे ——— **"भागछोट अभिलाषु बड़ करउँ एक विस्वास। पैहहिं सुख सुजन सब खल करिहहिं**

उपहास ।।1 ।8।। प्रतीति और विश्वास के बीच की एक कड़ी है ——————— प्रेम। तपश्चर्या के माध्यम से प्राप्त प्रेम और विश्वास का पार्वती के संदर्भ में शोभन प्रयोग हुआ है————— '' **हियँ हरषे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विस्वास** ।।1 ।90॥ **कभी-कभी विश्वास अनुचित पात्र अथवा चरित के साथ** जुड़कर दूषित भी हो जाता है। कपटी मुनि के संदर्भ से इसका प्रयोग छल परक कार्य के निमित्त किया गया है ————————**सहज प्रीति भूपति कै देखी। आपु विषय विस्वास विसेषी** ।1 ।161 ।6 विश्वास पात्र सापेक्ष्य है। कैकेयी का विश्वास करके दशरथ पश्चाताप करते हैं ————————''कवनें अवसर का भयउ गयउँनारि विश्वास ।।1 ।29 ।1 यहां विश्वास अनिष्ट कारक है, किन्तु दूसरी ओर शबरी के संदर्भ से तुलसी द्वारा भी राम के चरणों में प्रकट किया हुआ विश्वास शुभप्रद है —————————— ''**विस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू** ।। 3 ।36 **छंद**।। स्वयं श्रीराम द्वारा नारद के संदर्भ से उद्धृत विश्वास अखंड है और श्रद्धास्पद भी ———————— ''जन कंहूं कछु अदेह नहिं मोरे। **अस विस्वास तजहूँ जनि भोरें** ।। 3 ।42 ।5।। हनुमान का प्रेमयुक्त वचन सुनकर सीता के मन में विश्वास हो गया —————— कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा बन विस्वास ।5 ।13 इसमें ''वचन सप्रेम सुनि (= प्रेम युक्त वचन सुनकर) ही विश्वास का कारक है। यह एक निष्ठा विश्वास ही भवसागर के संतरण का आधार भी बनता है ———————— ''विश्वास करि सब आस परिहरि दास तब जे होइ रहे ।।13 ॥ छँद 3 ॥ विश्वास ही भक्ति का मूलधार है और भक्ति राम को द्रवित करने का साधन है ——————— **''बिनु विस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम''** ।।7 ।90। (क) विश्वास की पुष्टि कलियुग के संदर्भ में ——————— ''**कलिजुग सम जुग आन नहिं जौंनर कर विस्वास**।'' 7 ।103। (क) ऐसा केवल उनके लिए है, जो विश्वासी हैं। और फिर भी जो सत्य वचन पर भी विश्वास नहीं करते उनकी स्थिति होती है ——————— ''**सत्यवचन विस्वास न करहीं बायस इव सबहीं ते हुरहीं**। 7 ।112 ।14 ॥ जहां पर और जिसमें रामचरण में विश्वास होता है। उसकी स्थिति काकभुशुण्डि के शब्दों में ''**रिषि मम महत सीलता देखी। रामचरन विस्वास बिसेषी** ।7/113/4 ॥ इसके परिणाम स्वरूप ——————**सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई** ।।7 ।113 ।5 ॥ **इस सब का फलितार्थ यह हुआ कि** ———————— ''**मुनि दुर्लभ हरिभगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास। जो यह कथा निरंत सुनहिं मानि विस्वास** ।7 ।126।। इसमें चरित्र कथा श्रवण की निरंतरता और मन में दृढ़ विश्वास काम्य है। जैसा कि पार्वती की परीक्षा हेतु गए ऋषियों का वचन —————————— ''**तेहि कें वचन मानि विस्वासा। तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा** 1 79 ॥ ।5 ॥ **किंतु कभी-कभी अंत:करण की परिशुद्धि के अभाव में कपट-पूर्ण वचनों पर विश्वास हो जाता है, तो अनिष्ट ही होता है** ————— ''**जिमि तापस कथइ उदासा**। तिमि तिमि नृपहि-उपज विस्वास ।11 ।162 ।5 विश्वास को पंचम भक्ति भी माना गया है ————— **मंत्र जप मम दृढ़ विस्वासा। पंचम भगति सो वेद प्रकसा** ।3 ।36 ।2 और आगे कहते हैं ———— मोर दास कहाइ नर आसा। करइतौ कहहु कहा विस्वासा ।।7 ।46 ।3 यदि विश्वास उपज गया तो, भवनिधि से संतरण हो जाएगा ——————— **उपजा रामचरन विस्वासा। भव निधितरनगर बिनिंह प्रयासा।** ।7.55 ।9 ॥ बिना विश्वास

भगवान का कथन है कि जो जप, तप, व्रत, दम, संयम, और नियम में रत रहते हैं और गुरूगोविन्द तथा ब्राह्मण के चरणों में प्रेम रखते हैं उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, मुदिता और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है ———— श्रद्धा छमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया। 3 I46 I4 इन सबके केन्द्र में श्रद्धा ही है। कारण कि ———— श्रद्धा विनु धर्म नहिं होई। बिनु महि गंध कि पावइ कोई 7 I90 I4 उसमें सात्विक श्रद्धा का सार्वाधिक महत्व है, जो भगत्वकृपा से प्राप्त होती है ———— "सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौहरि कृपा हृदयँ बस आई। 7 I117 I9 श्रद्धा भक्ति की नियामिका भी है ———रघुपति भगति सुजीवन पूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी। 7 I122 I7 तुलसी का विश्वास और श्रद्धा से भी बड़ा मूल्य "मंगल" है। मंगल की व्युत्पत्ति "मंग" "मगि गतौ" धातु से हुई है। गति के चार अर्थ होते हैं क्षि गमन्, ज्ञान, मोक्ष और प्राप्ति "मंगल" में ये सभी अर्थ अनुस्यूत हैं। इस प्रकार इसकी व्युत्पत्ति होगी ———— मंगम् गतिं लाति, गृहणाति इति मंगल:। मानस मंगल-खानि है। इसमें मंगल की कुल एक सौ ग्यारह आवृत्तियां हुई हैं। यह संख्या भी मंगल का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त मंगलकारी दो बार, मंगलु एक बार, मंगलगान एक बार, मगलगाना एक बार, मगलचार एक बार,

मंगलदाता एक बार, मंगलदाय एक बार, मंगलमय आठ बार, मंगलमूरति एक बार, मंगलमूल एक बार, मंगलामूला एक बार, और मंगलं रूप एक बार प्रयुक्त हुआ है। इन सारे संदर्भों की मीमांसा करने पर "बाढ़इ कथा पार नहि लहऊँ। थोरेहूँ महि जानिहइ सयाने । ताते में संछेप बखानी ——— का आधार लेते हुए इसमें कुछ ही संदर्भों का उल्लेख किया गया है, शेष का अविकल संदर्भ देकर संतोष करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं हैं।

तुलसी ने मानस के प्रारंभ गुरु महाराज के चरण कमलों के रज की वंदना की है। यह रज सुकृति (पुष्पवान पुरुष) शिवजी के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुदंर, कल्याण तथा आनंद की जननी है। यही नहीं इसमें अपूर्व शक्ति है। यह भक्त के मन रूपी सुन्दर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है ———

सुकृत संभुतन विमल विभूति। मंजुल मंगल मोद प्रसूती I1 I1 I3

विष्णु और शंकर दैवी प्रभु सत्ता के उच्चतम प्रतीक हैं। इनकी कथा कल्याणप्रद है———

हरिहर कथा विराजति बेनी। सुनत सकल मुदमंगल देनी 1 I2 I10

सत्संगति आनंद और मंगल की जड़ है। सत्संग ही सिद्धि (प्राप्ति) का फल है और सब साधन तो फूल हैं ————

सतसंगत मुद मंगल मूला। सोई फल सिधि सब साधन फूला । 1 I3 I8

राम का नाम इसलिए मंगलमय है, क्योंकि वह वेद और पुराणों का सार है। इसलिए इस अमंगल हारी नाम को पार्वती जी सहित भगवान शिव जी सदा जपा करते हैं———

मंगलभवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी। 1 I10 I2

गोस्वामी जी भारती मनीषा की सहज शैली में यह स्वीकार करते हैं ———— "**भनिति भदेस वस्तु भलि करनी।** राम कथा जगमंगल करनी ।1।10।10॥ आगे लिखते है ———— मंगल करनि कलिमल हरिन तुलसी कथा रघुनाथ की ।1। छंद 9॥ इससे प्रयोजन स्पष्ट हो जाता है। मानस में मंगलमूल्य ने पत्र, देश, काल और यहां तक कि जड़ चेतन सभी की सीमाओं को अपने में अन्तर्मुक्त कर लिया है। इन्हीं भावभूमियों पर इसके अन्य अव्याख्यायित संदर्भ भी हैं,

सुकृति संभुतन विमल विभूति। मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥

हरि हर कथा विराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी॥

सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥

मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥

भनिति भदेस वस्तु भलि बसी। राम कथा जगमंगल करनी।।

मंगल करनि कलिमल हरिन तुलसी कथा रघुनाथ की।।

सो उमेस मेहि पर अनुकूला। करिहिं कथा मुद मंगल मूला॥

होइहहिं राचरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी॥

नामु सप्रेम जपत अन्यासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा॥

नाम प्रसाद संभु अविनासी। साजु अमंगल मंगल रासी॥

इन मूल्यों के अभाव में मानव जाति के संरक्षण की कल्पना असंभव है। विश्वास, श्रद्धा और मंगल के साक्ष्य पर तुलसी ने भारतीय मनीषा का जो एक समग्र चिंतन प्रस्तुत किया है वह मानवता को परम वैभव पर पहुंचने का एक सिद्ध एवं तप: पूत साधन है।

संदर्भ संकेत :—

1. तुलसीदास : चिन्तन अनुचिन्तन में प्रकाशित लेख "मानस मंगलाचरण : प्रथम श्लोक" डॉ० राम निरंजन पाण्डेय पृ. 8, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय कलकत्ता सं. 2037

2. रामचरितमानस गीता प्रेस, गोरखपुर

3. डॉ० त्रिभुवननाथ शुक्ल, रामचरितमानस शब्दों का अर्थतात्विक अध्ययन, स्मृति प्रकाशन, शहराराबाग, इलाहाबाद

56, अशोक नगर, साधारताल, जबलपुर-482004 (म०प्र०)

भारतीय ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य धरोहर वास्तु शास्त्र

—गणेश ताम्रकर

हमारे वेद, पुराण, उपनिषद् सहित संपूर्ण वैदिक वांगमय वैश्विक ज्ञान की अमूल्य धरोहर हैं। 'अनन्तौ वै वेदा:' अर्थात् वेद ज्ञान के रूप अन्नत हैं। इन्हीं के अंतर्गत वैदिक वांगमय का दर्शन वेदांग उपांग, ब्राह्मण, उपवेद, प्रतिशाख्य आदि के रूप में होता है। विभिन्न उपवेदों की शृंखला में गंधर्ववेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद के साथ ही स्थापत्यवेद, एक प्रमुख उपवेद है।

भवन निर्माण और शिल्प विज्ञान का नाम वास्तुकला या स्थापत्य है। वह ज्ञान के आदि स्वरूप वेद के छंद की अभिव्यंजना के रूप में स्थापत्यवेद के नाम से लोकहित एवं आत्मकल्याण की अजस्त्र धारा के रूप में जाना जाता है क्योंकि वैदिक वांगमय आत्म चेतना का स्पंदन है। वैदिक वांगमय प्रत्येक स्पन्द, चेतना का स्पन्दन है, आत्म की अभिव्यक्ति है, अष्यकृ आत्मा का व्यक्त रूप है।

भारतीय स्थापत्य कला का धार्मिक और लौकिक वैशिष्टय:

भारत में स्थापत्य या वास्तु को ललित कला माना गया है। चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य, संगीत नाट्य आदि मुख्य ललित कलायें हैं। संपूर्ण वैदिक वांगमय के अनुशीलन के ज्ञाता होता है कि भारतीय कला जहां एक ओर धार्मिक संस्कारों से अनुप्रमाणित है, वहीं सौंदर्य तथा आनंद के तत्त्वों से परिपूर्ण है। कलाकारों ने भारतीय शिल्प के विभिन्न अंगों को कल्पना द्वारा चारूत्व से मंडित किया है। मन के सूने प्रदेश को भावों से और लोक को मूर्त रूपों से भरना, यही कलात्मक सृष्टि है। उदयांचल से उठकर सूर्य जब अपना दूसरा पग उठाता है, तब उसका पूरा तेज आकाश को छा लेता है। कला का वैभव भी उसके दूसरे चरण अर्थात् भावों को ही मूर्त रूप देने में ही है। शिल्पी पहले अनगढ़ शिलाखंडों की धैर्य के साथ आराधना करता है, उसकी उस निष्ठा से वे पाषाण मानों द्रवित होकर श्री और सौन्दर्य के रूप में परिणत हो जाते हैं और अपने अंतस् में समेटे रहते हैं, स्थापत्यवेद के तात्विक सिद्धांतों का गूढ़ रहस्य और भारतीय दर्शन का तत्वज्ञान तथा उसे वही समझ पाते हैं जो उस भावधारा से तादात्म स्थापित कर लेते हैं।

भारतीय तत्वज्ञान को समझने के लिए आवश्यक दृष्टि :

पूर्व युग में आर्ट गैलरियां और म्यूजियम नहीं थे। कला और ज्ञान को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए मंदिर ही साधन थे। शिल्पी भी लोक प्रपंच को बताने के लिए मंदिर को साधन

रूप में गढ़ते थे। गांधी जी के जीवन की एक घटना है कि वे वेलूड़ के प्रसिद्ध मंदिर को देखते-देखते एक स्थान पर ठिठक कर खड़े हो गए। वहां अपने अधोवस्त्र को उतार फेंकती हुई, एक नारी की मूर्ति थी। गांधी जी के नयनों को सजल होता देख, उनके सचिव ने जब इसका कारण पूछा तो गांधीजी ने वस्त्र के कोने में चित्रित वृश्चिक को दिखाकर कहा कि—अधोवस्त्र का आवरण संसारी जीवन का प्रतीक है, जिसमें काम रूपी वृश्चिक छिपा है। यह नारी आत्मा है जो संसारी जीवन त्याग रही है और वैराग्योन्मुख और मोक्षानुगामिनी हो रही है। गांधीजी के हिंदू संस्कारी मन ने मूर्तिशिल्प में वैराग्य की व्यंजना को समझा लिया किन्तु सामान्य दर्शक केवल नग्नता को देखकर काम प्रलोभन मान बैठता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय वास्तु शिल्प की प्रत्येक कृति में ब्रह्मबोध अथवा आत्मज्ञान प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में रहता है जिसे समझने के लिए जिस भावभूमि एवं आत्मदृष्टि के आवश्यकता है, वह उक्त उदाहरण से स्पष्ट है।

भारतीय ज्ञान प्रवाह के दो तट हैं, सृष्टि विज्ञान और आत्मज्ञान। सृष्टि विज्ञान इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि, स्थिति तक प्रलय के सिद्धांत एवं क्रम का निरूपण करता है, साथ ही साथ यह बताया है कि इस सृष्टि से मानव और प्राणी जगत् का क्या संबंध है। सृष्टि विज्ञान की इस व्यवस्था को वैदिक वांगमय में 'ऋत्' कहा गया है। इसके तीन प्रमुख सिद्धांत हैं—संगठन, गति एवं नियति।

सृष्टि के सभी अंग यथा सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि का पशु, पक्षी और मनुष्य के साथ अन्योन्याश्रित संबंध है। उसके एक अंग में परिवर्तन होगा तो वह और भी अंगों को प्रभावति करेगा, जैसा कि हम देख रहे हैं कि पर्यावरण प्रदूषण प्रकृति के असंतुलित शोषण का ही परिणाम है। यह संगठन का स्वरूप है।

'गति' से तात्पर्य है कि सृष्टि में व्यवस्थित व क्रमबद्ध निरंतर परिवर्तन हो रहा है। सृष्टि के इस अनुशासन का पालन मानव को भी करना आवश्यक है। 'नियति' शब्द इस बात का द्योतक है कि सृष्टि का यह नियम ही उसकी नियति है और उसका नियंता सर्वशक्तिमान् ईश्वर है।

पंच महाभूत : मानव शरीर इस सृष्टि के ही अंगभूत पंच तत्वों यथा पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से बना है ।

इन्हीं से आजीवन उसकी वृद्धि तथा पुष्टि होती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी मानस (किष्किन्धाकांड) में लिखा है—

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम शरीर॥

(मानस 4, 11, 2)

मनुष्य के संपूर्ण जीवन में ये पंच महाभूत, नैसर्गिक अव्यक्त ऊर्जाओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका करते हैं। हम इस धरा पर कहीं भी निवास करें अपनी जीवनशैली को इन पांच

तत्वों एवम् नैसर्गिक ऊर्जाओं के अनुरूप संतुलित रूप में ढालना अनिवार्य है। तभी तो हमारे ऋषियों ने प्रातः बेला में प्रातः स्मरण का विधान बनाकर प्रतिदिन प्रकृति नमन् का संस्कार हमें दिया है।

पृथ्वी सगन्धासरसास्तथापः । स्पर्श च वायुर्ज्वलिनं च तेजः ॥

नभः सशब्दं महता सहैव। कुर्वन्तु सर्व मम सुप्रभातम् ॥

(वामन पु. 14.26)

खं वायुमहिन सलिलं महीं च जयोतींष सत्वानि दिशो द्रुमादीन।

सातत्समुद्रांश्च हरेः शरीरं भक्ति च भूर्त प्रणभेदमन्यः ॥

(श्रीमद्भागवत् 11.2.41)

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, नक्षत्र, प्राणी, दिशाएं, वृक्षादि, नदियां, समुद्र इत्यादि सब कुछ हरि का शरीर है तथा सबको अनन्य भाव से प्रणाम करना चाहिए।

प्रकृति के विभिन्न घटकों का उल्लेख श्रीमद्भावगत् गीता में इस प्रकार दिया है—

भूमिरापोऽ नलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।

अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिरष्टधा। (7.4)

इस तरह पृथ्वी पर जीवन के आधार हैं भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश अर्थात् पृथ्वी के ऊपर स्थित आकाश में व्याप्त पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण।

वास्तुशास्त्र

पंचमहाभूतों, ध्रुवीय चुम्बकत्व, गुरूत्वाकर्षण, सूर्य, चन्द्र आदि नैसर्गिक शक्तियों, दिशाओं, वृक्षों आदि के नैसर्गिक नियमों का पालन करते हुए वास्तु निर्माण करने की कला वास्तुशास्त्र कहलाती है।

'वास्तु' शब्द वस्तु से बना है। वस्तु का व्युत्पन्नात्मक अर्थ है 'जो है' अथवा जिसकी 'सत्ता है' वही वास्तु है और इससे संबंधित शास्त्र याने 'वास्तुशास्त्र'। वैसे तो वास्तुशास्त्र का विस्तारात्मक बोध पृथ्वी, भवन, सवारी आदि से है और मुख्यतः इसे भवन निर्माण की कला एवं विज्ञान (Science) ही माना जाता है।

वास्तुशास्त्र के अंतर्गत नगर नियोजन से लेकर गृह निर्माण औद्योगिक संरचना, व्यावसायिक स्थल का व्यवस्थापन आदि आ जाता है। इसे वास्तु, शिल्प अथवा वास्तुविज्ञान भी कहा जाता है।

अधिवैदिक विज्ञान और वास्तुशास्त्र :

भारतीय आधि दैविक विज्ञान के अनुसार संसार में जितने पिण्ड हैं, उनका अधिष्ठाता आत्मा भी अवश्य है। ये पिण्ड चाहे पार्थिव, तेजस् या वायवीय हों, सभी में अधिष्ठाता आत्मा है। विज्ञान अब वृक्षों में भी आत्मा या जीव होने की स्वीकृति देता है। इतना ही नहीं पर्वतों के घटने-बढ़ने से उनमें भी आत्मा की उपस्थिति अब वैज्ञानिकों के विचार का विषय है। इस तरह से ब्रह्माण्ड के घटक के रूप में मनुष्य और मकान आदि भी इन अव्यक्त ब्रह्माण्डीय शक्तियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। इसलिए भवन निर्माण ऐसा होना चाहिए कि इन सभी अदृश्य ऊर्जाओं से मानव लाभ उठा सके और यही सिद्धांत वास्तुशास्त्र का आधार है । इस प्रकार या यूं कहें कि वासुदेव हैं।

वैदिक ज्ञान का वैज्ञानिक स्वरूप :

आज प्रत्येक बात में विज्ञान (Science) के आधार को देखने की प्रवृत्ति पाश्चात्य दर्शन के अनुसार हो गई है। प्रयोगशाला में प्रत्येक बात को सिद्ध करने का—अपूर्णज्ञान की द्योतक जिज्ञासा रहती है, जबकि हमारा वैदिक ज्ञान एक जीवंत ज्ञान है, जिसकी परिसीमाएं प्रयोगशाला की सीमित परिधि से कहीं अधिक व्यापक है। आत्मानुभूति से सीधा जुड़ा हुआ है। पाश्चात्य जगत में 'विज्ञान' शब्द का जिस व्यापक अर्थ में प्रयोग होता है। वैसे हीं भारत में 'शास्त्र' शब्द अधिक व्यापक एवं सारगर्भित है। मानव जीवन के लिए जितने भी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान आवश्यक हैं, सभी का सम्यक् और परिपूर्ण विचार भारतीय शास्त्रों और वैदिक वांगमय में किया गया है। स्थापत्यवेद भी इसी लोक कल्याणकारी भाव से उद्भूत ज्ञान की अमूल्य धरोहर है, जिसका एक प्रमुख अंश वास्तुशास्त्र के रूप में जाना जाता है।

प्राचीन ग्रंथों में वास्तु शिल्प :

वास्तुशास्त्र का इतिहास वैदिक कालीन है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत की झलक है। भविष्य पुराण, अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण, वायुपुराण, पद्मपुराण, गर्ग संहिता, वराह संहिता आदि में वास्तुशास्त्र के साक्ष्य उल्लिखित हैं। जिससे पता चलता है कि हमारी संस्कृति के उन्नायकों के अनुभूत प्रयोगों के आधार पर अति प्राचीन काल से ही वास्तुशिल्प भारतीय जीवन शैली का अंग रहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पुरवसति (नगर नियोजन) का वर्णन वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ 'वृहत्संहिता' में 'वास्तुविद्याध्याय:' के अंतर्गत 125 श्लोकों में वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। पूर्णत: वास्तुशास्त्र पर लिख गए वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों के रूप में विश्वकर्मीय शिल्प, मानसार, विश्वकर्मा प्रकाश, समरांगण सूत्रधार आदि प्रमुख ग्रंथ हैं। वास्तुमुक्तावली, मुहर्त चिंतामणि आदि ग्रंथों में भी वास्तुशास्त्र का विवेचन है।

वास्तुशास्त्र का महत्व :

जिस प्रकार भारतीय मनीषियों ने 'शब्द' को ब्रह्म मानकर व्याकरण को दर्शन का स्तर प्रदान किया और इसी आधार पर काव्य रचना के गान को 'नादब्रह्म' कहकर संगीत को इहलौकिक पृष्ठभूमि से उठाकर पारलौकिक रूप प्रदान किया है, उसी प्रकार पाषाणमय प्रासाद में वास्तुब्रह्म की स्थापना करके वास्तुदेव अथवा वास्तुपुरुष को स्थापित किया गया। आजकल विज्ञान में व्यावहारिक विज्ञान (Applied Science) की बात की जाती है। वास्तव में वास्तुशास्त्र वैदिक ज्ञानं की ऐसी विभूति है जिसमें निराकार ब्रह्म को साकार ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वास्तुशास्त्र एक ऐसा क्रियात्मक विज्ञान है जिसमें सीमित भूमि रचना को अपरिमित वैश्विक शक्ति में परिवर्तित किया जाता है। इसका गणित इस तरह समझा जा सकता है—

स्थापत्यकला या भवनकला—वास्तु=शून्य

वास्तु के बिना भवन लोहा, सीमेंट, ईंट, रेत पत्थर का ढ़ांचा मात्र है।

जैसे—मनुष्य शरीर—आत्मा=शव

अतएवं भवन निर्माण सामग्री के ढ़ांचे स्वरूप शव को शिव बनाना है तो उसमें वास्तु रूपी आत्मा को प्रविष्ट कराना अति आवश्यक है और यह स्थापत्य वेद या वास्तुशास्त्र का महत्व प्रतिपादक बिंदू है। यही स्थापत्य कला का सत्य है।

इसी से कला या वास्तु में भव्यता के साथ दिव्यता आती है। शिव याने ब्रह्म की यह दिव्यता आती है तभी शिवत्व 'सर्व' मांग्ल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके' के रूप में प्रकट होता है। तुलसी की वाणी में—'मंगल भवन अमंगल हारी' होकर सुख, स्वास्थ्य, आरोग्य और संपदा कारक विधान का नियंता बनता है।

पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच चुम्बकीय बल धाराएं हैं जो पृथ्वी और सूर्य के बीच गति के कारण परिवर्तित होती हैं तथा मानव शरीर पर स्पष्ट प्रभाव डालती हैं। भूगोल, खगोल और पंच महाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की नैसर्गिक ऊर्जाओं का तन एवं मन पर बड़ा ही सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। इन्हीं सब प्रभावों को पहिचान कर उसके उचित अनुस्थापन का नाम है स्थापत्य वेद—वास्तुशास्त्र, जो भवन के भीतर सभी भौतिक और पराभौतिक तथा आध्यात्मिक प्रभाव के लाभों को उपलब्ध कराने का चेतनामय स्पंदन है और वास्तुपुरुष उसी सर्वव्यापी वैश्विक चेतना का प्रतिरूप है जिसमें सब कुछ बनता है और उसी में लय हो जाता है, व्यक्त और अव्यक्त, साकार और निराकार सब कुछ वही एक ब्रह्म है। उपनिषद् में कहा गया है—

'कस्मिन्भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति'

(मुण्डकोपनिषद् 1-1-3)

अर्थात् उस एक ब्रह्म को जान लेने से उन सबका ज्ञान अपने आप हो जाता है जो इस विश्व में है और नहीं है। अभ्युदय और नि:श्रेयस—भारतीय संस्कृति में दो शब्द हैं—अभ्युदय और नि:श्रेयस। इन दोनों की साधना का मंत्र है वास्तुशास्त्र। रहने के लिये झोपड़ी है या विशाल महल यह अभ्युदय अर्थात् लौकिक उन्नति का प्रतीक है और वास्तु अनुरूप भवन में निवास लौकिक उन्नति में सहायक के साथ ही मानसिक शांति और स्वास्थ्य देता है जो नि:श्रेयस् प्राप्ति की जिज्ञासा में सुगमता एवं अनुकूलता का दिग्दर्शन है। क्योंकि हमारी संस्कृति में कला और विज्ञान, आध्यात्म दर्शन या धर्म से अलग नहीं रखे गये हैं और न केवल निरा मनोरंजन के भाव हैं उद्भव हैं।

वस्तुरेववास्तु—साथ ही वास्तु विज्ञान, ऊर्जा के पदार्थ रूप में प्रकटीकरण अथवा अभिव्यक्ति का विज्ञान है। यह विज्ञान हैं सूक्ष्म ऊर्जा के सचेतन स्थूल परिवर्तन का। यह विज्ञान है निराकार ऊर्जा के साकार ऊर्जा में परिवर्धन का। यह विज्ञान है वस्तु के वास्तुरूप में आकार लेने का।

अर्थात्—वस्तु=वस्तु। 'वस्तुरेववास्तु'

सूक्ष्म ऊर्जा=पदार्थऊर्जा निराकार ऊर्जा=साकार ऊर्जा

यह आइंस्टीन के सूत्र $E=MC^2$ के समानांतर है—जिसमें E= शुद्ध ऊर्जा (वस्तु)=MC^2=पदार्थ ऊर्जा (वास्तु) है—जिसमें कहा गया है—'एकोऽहं बहुस्याम्', अहंब्रह्मास्मि और तत्वमसि (तुम ही वह हो) आदि।

सा कला या विमुक्तये :

वास्तु शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य देवशिल्पी विश्वकर्मा ने कहा है कि—

वास्तुशास्त्र प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया।

आरोग्य पुत्रलाभं च धनं धान्यं लभेन्नरः ॥

इतना ही नहीं तो विश्वकर्मा वास्तु प्रकाश के अध्याय 2 के 30वें श्लोक का उद्घोष है कि—

'चतुर्वर्ग फलप्राप्ति सलोकश्च भवेद्ध्रुवम्।

शिल्पशास्त्र परिज्ञानामर्त्योपि सुरतां वृजेत ॥'

वास्तु विज्ञान के ज्ञान से और तदनुरूप आचरण से मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह इसी लोक में देवत्व के भाव में पहुंच जाता है जो आत्म कल्याण के आगे लोक कल्याणकारी बन जाता है।

चतुर्वर्ग प्राप्ति के लिये शरीर, मन और बुद्धि की अनुकूलता अनिवार्य है। यदि भवन नैसर्गिक ऊर्जाओं को ध्यान में रखकर बनाया जायेगा तो शरीर, स्वस्थ्य होगा, मन स्थिर होगा और बुद्धि निर्मल होगी। भवन का एक अर्थ है भवन अर्थात् भवन वास्तुशास्त्र सम्मत है, प्रकृति के साथ तादात्मभाव स्थापित करते हुए बना है तो तन, मन और बुद्धि का सम्यक् समन्वय भव से मुक्ति का सोपान बनेगा। भवन सफल होगा तो भवन सिद्ध हो जाएगा। यही 'सा कला या विमुक्तये' की सार्थकता है।

अतएव वर्तमान में भी यह प्रासंगिक एवं नितांत आवश्यकता है कि वेद प्रणीत स्थापत्य कला अर्थात् वास्तुशास्त्र को अपनाकर अपने सुखी एवं सुरक्षित जीवन के साथ दिव्य व्यक्तित्व निर्माण के लिए, अपनी संस्कृति एवं जीवन शैली के साथ—सामूहिक राष्ट्रभावना को प्रखर बनाने के लिये मानव मात्र के कल्याण के लिए—वैश्विक शिवत्व की मंगल कामना के साथ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः, को साकार करें।

'वास्तुशुभम्' वास्तुशोध एवं परामर्श केन्द्र, एम/68 आनंद नगर, अधारताल, जबलपुर—482004 (म.प्र.)

लोक संगीत : लक्षण एवं स्वरूप

—डॉ. प्यारेलाल श्रीमाल ''सरस पंडित''

''लोक'' शब्द प्राचीन भारतीय वांगमय में प्रयुक्त हुआ है। वेद, उपनिषद् तथा गीता में इसका बहुलता से प्रयोग मिलता है। धार्मिक ग्रंथों में प्रयोग हुआ है, जड़ अर्थों में जबकि साहित्य एवं कला के संदर्भ में ''लोक'' शब्द से तात्पर्य उस मानव समाज से है जो अभिजात्य एवं शास्त्रविद् समाज से पृथक् अपनी परंपराओं तथा संस्कारों को लिए हुए जी रहा है। ऐसे मानव समाज द्वारा व्यवहृत परंपरागत संगीत को ''लोक संगीत'' की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में — लोक मानस की स्वर लयात्मक अभिव्यक्ति लोक संगीत है।[1]

''सामान्य लोक जीवन की पार्श्व भूमि में अचिंत्यरूप से अनायास ही फूट पड़ने वाली मनोभावों की लयात्मक अभिव्यक्ति लोकगीत कहलाती है।''[2] पेरी के अनुसार लोक गीत मानव का उल्लासमय संगीत है।

मानव आदिम काल से जीवन में संगीत का प्रयोग करता चला आ रहा है। ऋग्वेद की ऋचाएं गाई जाती थीं। ऋगवेद में गायक के लिए ''गाथन'' शब्द का प्रयोग किया गया है तथा विवाहोत्सव आदि अवसर के गीतों को रैमी, नाराशंसी एवं गाथा आदि नाम दिए गए हैं। ये गाथाएं ऋचाओं की भांति ही छंदोबद्ध हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वेद तथा लोकगीत दोनों को ही श्रुति मानते हैं, श्रीमद्भागवत में प्रयुक्त गाथाएं विवाह, यज्ञ आदि अवसरों पर गाई जाती थीं। राम जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले अवसर पर गाए जाने वाले लोक गीतों का महर्षि वाल्मिकी ने उल्लेख किया है। इसी प्रकार सम्राट हर्ष ने भी अपने ''नेषध चरित'' में स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले मधुर गीतों का उल्लेख किया है। इससे यह स्पष्ट है कि लोक संगीत की कल्याणकारी धारा अति प्राचीन काल से सुरसरि की भांति जनमानस को स्वरामृत का पान कराती हुई प्रवाहमान है।

---

1. नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीष्णों द्यो: सर्वतत

   पदभ्यां भूमिदिश: श्रोत्रांतया लोकां अकल्पयन। —ऋग्वेद पुरुष सूक्त

   बहुब्याहितों वा अयं बहुतो लोक :
   क एतद अस्य पुनरहितो आयात्। —जेमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण 3/28

   गुरूमहत्वा हि महानुभावान् श्रेयोभोवसुमैधमपीह लोके —3-3 गीता
   लोके अस्माद्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानप।

2. मालवी लोकगीत—एक विवेचनात्मक अध्यायन —डॉ. चिंतामणि उपाध्याय

"ग्रामगीत प्रकृति के उद्‌गार हैं। इनमें अलंकार नहीं केवल रस है, छंद नहीं केवल लय है, लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण स्त्री पुरुषों के मध्य में हृदय नामक स्थान पर बैठ कर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्राम गीत हैं ।"[1] लोक गीत हृदय की वाणी होने के साथ-साथ समाज की चेतना और अनुभूति पर आधारित हैं। जिनमें बुद्धि की अपेक्षा परंपरा का प्राधान्य होता है। इसलिए लोकगीतों में कलापक्ष का वह रूप नहीं मिलता जो कलात्मक साहित्य में दृष्टिगोचर होता है।"[2]

"Folk song is a spontaneous creation of music and lyrics dealing with the customs and activities of the people among whom it originates."[3]

लोक गीतों के तीन अंग होते हैं—भाव, शब्द एवं स्वर। भाव उसका अंतरंग है, जबकि शब्द और स्वर बहिरंग। लोकगीतों में शब्द और स्वर इस प्रकार अन्योन्याश्रित होते हैं कि एक को पृथक करने पर दूसरा पंगु हो जाता है। इस कारण प्रायः लोकगीत रचियता कवि भी होते हैं और गायक भी। लोक गीत का साहित्यिक दृष्टि से जितना मूल्य है उतना ही सांगीतिक दृष्टि से भी है।

रति और भय मानव के जन्मजात मूलभाव हैं जिनके कारण उससे आनंद एवं आत्मरक्षा की भावना का उद्रेक हुआ है। अतः मानव ने धुन के रूप में उन स्वरावलियों को निर्मित किया और ग्रहण किया जो मनोरंजन, श्रम-परिहार तथा चिंतामुक्त में सहायक बनीं।

'Folk Song is the active expression of a group that sings or plays for pleasures or to help itself along the road to happiness and freedomly making work easier, filling spare time, relating happiness and protesting those happenings.'[4]

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। कोई गांव ऐसा नहीं है जहां लोक संगीत के स्वर न गूंज रहे हों। प्रत्येक अंचल के अपने-अपने लोकगीत हैं, जैसे—मालवी, निमाड़ी, गुजराती, राजस्थानी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मैथिली, भोजपुरी आदि। "हिंदुओं का सामाजिक जीवन प्रारंभ से ही संगीतमय रहा है। उसके प्रत्येक मंगल कार्यों में संगीत को मुख्य स्थान दिया गया है। जन्म से लेकर मरण तक सभी संस्कारों के साथ उसका अविच्छिन्न संबंध है। त्यौहारों की तो बात ही क्या? कोई घर, कोई वन, कोई खेत, और कोई नदी तट ऐसा नहीं मिलेगा जो कभी गीतों की तान से गूंज न उठा हो"[5] लोकगीतों को मुख्य रूप से छः भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा।
2. कविता कौमुदी भाग 5—पृ. 2—पं. रामनरेश त्रिपाठी
3. The new wonder Book, Cyclopaedia of world knowledge—Page 1270.
4. International Press Philadelphia Toranto-Vol. VI Page—1270
5. बुंदेलखंडी लोकगीत—श्री शिवसहाय चतुर्वेदी

3899 H.A./2001—5A

1. धार्मिक—भजन, देवी देवताओं के तथा भक्ति भावना के गीत।

2. ओत्सविक—सोलह संस्कारों में जन्म, विवाह तथा मृत्यु ये तीन संस्कार प्रमुख हैं। इनसे संबंधित गीत जैसे सोहर, बंधावें, कुंआ पूजन, बनरा आदि। निमाड़ में मृत्यु के समय संत सिंगाजी गाए जाते हैं।

3. सामाजिक—बीरा, राई ख्याल, कहरवा, दादरा आदि तथा कृषकों द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीत।

4. सामयिक—फाग, हिंडोला, कजली, बारहमासा, मल्हार, लेद, रसिया आदि।

5. ऐतिहासिक—आल्हा, ढोला मारू, तेजाजी, हीड़, आदि ऐतिहासिक एवं वीर रस प्रधान गीत।

6. विविध—बाल गीत आदि।

बालक बालिकाओं के गीत लय प्रधान तथा पुरुष महिलाओं के गीत स्वर-प्रधान होते हैं। कथा गीत एवं ऐतिहासिक गीत पुरुष ही गाते हैं। ओत्सविक तथा सामाजिक लोकगीतों में प्रमुख रूप से भागीदारी महिलाओं की रहती है। पूरे देश में असंख्य लोकगीत प्रचलित हैं। जिनकी असंख्य धुनें हैं। ये धुनें संगीत की अमूल्य धरोहर हैं।

प्रचलित लोक संगीत का अध्ययन करके मैंने उसके दस लक्षण निर्धारित किए जो निम्न प्रकार हैं :—[1]

1. पारंपरिकता

2. स्वरकार का अज्ञात होना

3. अल्प स्वरों का प्रयोग

4. अंतरे का अनिवार्य न होना

5. संगीत के शास्त्रीय नियमों से मुक्त होना

6. सहजता

7. पुनरावृत्ति

8. लोकगीत का सहजन्मा होना

---

1. मालवी लोकगीतों का संगीतिक अनुशीलन (शोध प्रबंध) पृ. 20—डा. प्यारेलाल श्रीमाल

3899 H.A./2001—5B

9. निरर्थक शब्दों का प्रयोग

10. लोकरुचि की अनुकूलता

नर्मदा के प्रवाह में लुढ़कते-लुढ़कते पत्थर जैसे शालिग्राम बन जाते हैं, वैसे ही पीढ़ी दर पीढ़ी कंठों से गुजरी लोक धुनें अत्यन्त मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी हो जाती हैं। यह पारंपरिकता का प्रभाव है। किसी भी धुन को लोकधुन बनने के लिए समय अवश्य चाहिए। प्रचलित लोकधुनें कब से व्यवहार में हैं और इनके रचनाकार कौन थे कुछ पता नहीं चलता।

अधिकांश लोकगीतों में तीन, चार अथवा पांच स्वरों का ही प्रयोग मिलता है तथा वे सप्तक के पूर्वांग में ही गाए जाते हैं। उदाहरण के लिए बुंदेलखंड में यह भजन नि सा रे केवल इन तीन स्वरों में गाया जाता है। स्थायी तथा अंतरे में इन्हीं तीन स्वरों का प्रयोग है। देर तक गाया जाने वाला यह भजन ऐसा समां बांधता है कि सुनने वाला चित्र लिखित सा रह जाता है।

शंकर भोलेनाथ परबत पे बगिया लगाईयो।

कोने लगाई तेरी बेला चमेली, कोना ने अनार। परबत.....

माली लगाई तेरी बेला चमेली, मालन ने अनार। परबत.....

काय के सींसो तेरी बेला चमेली, काय को अनार। परबत.....

दुदवन से सींसो तेरी बेला चमेली, अमृत से अनार। परबत.....

वैदिक काल में सामगान भी उदात्त, अनुदात्त और त्वरित इन तीन स्वरों में गाया जाता था। ये स्वर अवरोही होते थे तथा कोई अंतरा नहीं होता था। आदिवासियों में प्रचलित तीन से पांच स्वरों की धुनें ऐसी हैं जो अवरोही हैं। बंशी पर बजाकर वे लोग उसके साथ घंटों तक नृत्य करते रहते हैं। भरत काल तक सप्तक ने आरोही रूप ले लिया था। अत: तीन से अधिक स्वरों वाले तथा आरोही स्वरूप वाले गीतों की रचना वैदिक काल के पश्चात हुई होगी, यह अनुमान किया जा सकता है। अंतरे का प्रयोग भी बाद की उपज होनी चाहिए। यही कारण है कि लोकगीत अंतरे वाले और बिना अंतरे वाले दोनों प्रकार के प्रचलन में हैं।

लोकधुनें शास्त्रीय नियमों से मुक्त होती हैं, इस कारण सहज होती हैं और लोक मानस द्वारा ग्रहण कर ली जाती हैं। उनके गायकों के लिए भी राग-ताल का विधिवत् ज्ञाता होना आवश्यक नहीं होता फिर भी वे राग और ताल का समुचित प्रयोग करते हैं। भाव की रक्षा के लिए गायक भले ही एक बार शब्दों में तोड़ मरोड़ कर लेता है, किन्तु स्वर और ताल के संबंध में वह पूर्ण संयम से काम लेता है। प्रेम तथा शृंगार के लोकगीत मध्य एवं द्रुत लय वाली कहरवा, दादरा,

खेमटा आदि तालों पर तथा करुण गीत विलंबित लयवाली दीपचंदी ताल पर आधारित हैं। राग विशेष में धुन का निर्माण अनिवार्य न होने पर भी कई धुनों में रागों की उपस्थिति पाई जाती है। भैरव, बिलावल, खमाज और काफी के स्वरों वाले लोकगीत बहुतायत से पाए जाते हैं। वस्तुतः लोक धुन ही रागों की जननी हैं। "राग बनाए नहीं जाते। हम लोक धुनों में रागों को छुपा हुआ पाते हैं। उन्हें पकड़ कर जब प्रकट कर देते हैं तो शास्त्रीय पक्ष सामने आ जाता है। लोक धुनें निसर्ग निर्मित हैं इसलिए निसर्ग की तरह वे पूर्ण होते हैं"।[1]

लोक गीतों में विशेषकर अंतरा रहित गीतों में धुन की पुनरावृत्ति होती है। वैसे उपरिनिर्दिष्ट बुन्देली भजन में अंतरा होते हुए भी धुन की पुनरावृत्ति हुई है। यह गीत इसं लक्षण को भी स्पष्ट करता है कि इसका गीत-संगीत सहजन्मा है। वैसे संगीत की अन्य विधाओं में प्रथम काव्य रचना होती है, तदुपरांत भावानुकूल स्वर रचना।

प्रायः लोकगीतों में रे, री, अरे, अरी, ओ, हो, अजी, एजी, हांजी आदि निरर्थक शब्दों का जो प्रयोग पाया जाता है वह काव्य से कम किन्तु संगीत से अधिक संबंध रखता है। भावाभिव्यक्ति, ध्वनि माधुर्य तथा लय पूर्ति के अभिप्राय से ये शब्द बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। षड्ज अथवा अन्य किसी स्वर पर इन शब्दों के सहारे देर तक न्यास करने से शांत रस की सृष्टि होती है। उदाहरण के लिए कई निर्गुणी पदों में "जी" शब्द का प्रयोग द्रष्टव्य है।

लोक संगीत का अंतिम लक्षण है लोक रुचि की अनुकूलता। आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक आदि कई कारणों से लोकरुचि का निर्माण होता है। यही कारण है कि अचंल विशेष के लोग अपनी ही भाषा में रचे गीतों में रुचि रखते हैं। प्रत्येक प्रदेश के लोक संगीत में इसी कारण विविधता पाई जाती है।

समूचे लोकगीत लय-तालबद्ध होते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि सभी की संगत में वाद्यों का प्रयोग हो। महिलाओं के अधिकांश गीतों में वादकों को सहयोग अपेक्षित नहीं रहता। पुरुष मण्डलियों द्वारा गाए जाने वाले गीतों के साथ नाना प्रकार के वाद्य बजाए जाते हैं। गीत के भावानुकूल वाद्यों का प्रयोग किया जाता है जैसे—फाग के साथ चंग, और भजन के साथ झांझ, करताल आदि। "लोक वाद्यों में सुलभता सर्वत्र व्याप्त है। इनकी उपलब्धि के लिए किसी विशेष प्रयत्नशील नहीं होना पड़ता है। लोक जीवन की परिधि में यत्र तत्र फैले हुए पदार्थ लोक वाद्यों के रूप में प्रयुक्त होते हुए देखे गए हैं। भिक्षुक दो लकड़ियों की चिमटी को बजाकर अपने भिक्षा गीत को सरस बना लेते हैं। धोबी समाज में सूप और गागर आदि बजाई जाती है। पारसी लोग एक लम्बा बांस बजाते हैं जबकि अहीर दो लंबी छड़ियों को बजाकर अपने दिवारी नृत्य को अधिक

[1] भारतीय संगीत का मूलाधार लोक संगीत (आलेख)—सम्मेलन पत्रिका लोक संस्कृति अंक सं. 2010—कुमार गंधर्व

संगीतमय एवं आकर्षक बना लेते हैं। चमारों के नृत्य में ढोलक के साथ कटोरों को भी बजाया जाता है। कहीं कहीं पर कुम्हार लोग मटके भी बजाते है।"[1] वैसे लोकगीतों के साथ बजाए जाने वाले वाद्यों में इकतारा, सारंगी, कंकड़िया, कसावरी, अलगोंजा बंसी, ढोलक, नगड़िया, झांझ, झींका, मंजीरा, करताल, चंग, डफ, मृदंग, खंजरी, हारमोनियम आदि प्रमुख हैं। तात्पर्य कि तत, वितत, सुषिर और घन इन चारों प्रकार के वाद्यों का लोक संगीत में प्रयोग होता है।

———*———

[1] बुन्देलखंड के लोकवाद्य—प्रो. श्रीचंद जैन

रंगमहल, नई पेठ, उज्जैन (म.प्र.)-456006

जीव और प्राणी के उद्‌भव और विकास में पर्यावरण का योगदान

—दीपक कुमार अज्ञात

वनस्पति जगत के पेड़-पौधे और लता-गुल्म आदि जीव हैं विज्ञान की परिभाषा में और, कृमि-कीट से लेकर सभी प्रकार के हिंसक-अहिंसक जानवर-पशु से मनुष्य तक प्राणी। इन सभी का उद्‌गम—विकास और अवसान का स्थान-परिवेश है पर्यावरण।

पर्यावरण के विश्लेषण के क्रम में यह कहना है कि इस भूमंडल का कोई भी वह भाग जहां जीव-प्राणी के उद्‌गम के लिए फिर उसके विकास के लिए बीज-वपण होता है—मानव द्वारा या प्रकृति द्वारा, उस भाग की समस्त भौतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियां-संस्थितियां ही पर्यावरण हैं जिसमें जलवायु, प्रकाश वायुमंडल की उष्मा एवं शोर एवं शान्ति-प्रशान्ति सभी सम्मिलित हैं जिस कारण भूमंडल के विभिन्न भागों के जीव एवं प्राणी में भौतिक आकार-प्रकार, उसकी आदत-अभ्यास एवं प्रकृति-मानसिकता में विभिन्नताएं स्पष्ट परिलक्षित हैं।

यही कारण है कि विश्व के अनेक देश तो क्या एक ही देश के विभिन्न भागों में उत्पन्न जीव-प्राणी के प्राकृतिक स्वरूप एवं रंग-रूप और स्वभाव-रहन-सहन में अन्तर और विभेद है।

पर्यावरण के प्राकृतिक स्वरूप में परिवर्तन तो मानव के वश के बाहर की बात है किन्तु उसके भौतिक रूप में परिवर्तन-नियंत्रण पूरी तरह मनुष्य की सामूहिक इच्छा-शक्ति पर निर्भर है।

यद्यपि मानव सभ्यता के विकास ने पर्यावरण के भौतिक परिवर्तन पर भी नियंत्रण अपने वश से खोसा दिया है तथापि अभी बहुत कुछ संभव है।

मानव ने अपनी भौतिक सभ्यता के परिवर्द्धन के क्रम में इतने संसाधन इकट्‌ठे कर लिए कि उसे अब लगता है कि इन सुविधाओं के बिना उसके विकास का काम स्थगित-सा हो जाएगा। किन्तु यह पूरी तरह सच नहीं है।

संपूर्ण रूप से स्वस्थ एवं विकसित मानव निर्माण में भौतिक संसाधनों के उपयोग की अनिवार्यता अपरिहार्य है किन्तु उसे अति से बचना ही पड़ेगा जो उसे विनाश के प्रशस्त पथ पर अग्रसर करवा चुका है।

अत्यधिक भौतिक संसाधनों के प्रयोग ने (दुरूपयोग के स्तर पर) पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है।

मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं हैं—भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा और शिक्षा।

मनुष्य प्रकृति से अनुकरणशील प्राणी है। यही इसके सर्वतोमुखी विकास की मूल प्रवृत्ति है।

किन्तु बाहरी-शान शौकत, प्रदर्शन की प्रवृत्ति और भौतिकतावादी या आधिभौतिकता संस्कृति की प्रतिस्पर्द्धा में विजयी हो जाने की कामना से सम्मिलित अन्धी दौड़ ने उसके भोजन-वस्त्रादि के क्षेत्र में इतना प्रभाव डाला है कि वह अब अंधानुकरणवादी हो जाने में ही गौरवान्वित अनुभव करता है, जिससे उसका भौतिक एवं मानसिक स्वास्थ्य विकृत हो गया है।

अब इस विकृत स्वास्थ्य को लेकर ही प्रगति की दौड़ में विजयी हो जाना चाहता है और, यह संभव नहीं है।

उपरांकित संश्लिष्ट व्याख्याओं के अनन्तर हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचने में सक्षम हो जाना चाहिए कि जीव और प्राणी के उद्‌भव-उन्नयन एवं शान्तिपूर्ण अवसान में पर्यावरण का योगदान अन्यतम है।

मानव प्रगति के साथ अन्य प्राणी एवं जीव (हानिकारक कृमि कीटों-मच्छरों के व्यकलित करते हुए) की उन्नति भी अन्योनाश्रित है।

मलमूत्र, कूड़े-कचरे आदि का जमाव, अत्यधिक शोर आदि पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। यह पर्यावरण-प्रदूषण मानव की प्रगति-संस्थिति का विनाशक है।

किन्तु यह भी सच है कि मनुष्य की ही अपनी अनियमित जीवन-प्रणाली, अपनी अशम्य भौतिकवादी-सुविधावादी-भोगवादी पिपासा से उत्पन्न है यह प्रदूषण। जो प्रदूषण अब उसके अस्तित्व की स्थिति की सुरक्षा-संरक्षा में अपराजेय विराट प्रश्नचिह्न के रूप में उसके समक्ष अवस्थित है। लेकिन अभी भी यह अपराजेय नहीं है।

यह सतत् स्मरणीय है कि स्वस्थ मानव संस्थिति निर्मल पर्यावरण पर ही निर्भर है और, निर्मल पर्यावरण की संस्थिति प्रदूषण उन्मूलन पर। उन्मूलन मनुष्य की भोगवादी संस्कृति के नियंत्रण एवं स्थगन और निर्मूलन की इच्छा शक्ति पर।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O. यानी World Health Organisation) का प्रतिवेदन है कि पचहत्तर प्रतिशत बीमारियों का कारण है जल प्रदूषण और शेष पच्चीस प्रतिशत में वायु प्रदूषण और शोर प्रदूषण।

इतने कारखाने खुले कि उनके त्याज्य पदार्थों के निष्कासन से जल प्रदूषित हो गया।

विश्व के मात्र चार देश पचहत्तर प्रतिशत कार्बन डायऑक्साइड उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी हैं। अत्यधिक वाहनों की संख्या एवं कारखाने वायु प्रदूषण के जिम्मेदार हैं। कार्बन डायऑक्साइड के कारण ओजोन मंडल में दरार हो गया जिस कारण सूर्य की किरणों का विकिरण (RADIATION) अपेक्षित परिमाण में नहीं हो पाता। जिस कारण वायुमंडल का तापमान भी लगभग बारह-तेरह डिग्री सेल्सियस बढ़ गया, जिसका व्यापक प्रभाव मानव एवं जन्तुओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। दूसरा परिणाम है चर्म रोगों का बढ़ना।

विलासी प्रकार के भोजन से मनुष्य का स्वास्थ्य भी खराब और रोग ग्रस्त होता है और प्रदूषण उत्पन्न होता है। शहरों-गावों में मनुष्य द्वारा खाये भोजन के अवशेष के रूप में मांस की हड्डियां, मछली के कांटे, अंडों के छिलके आप कहीं भी अम्बार (लघु अम्बार) के रूप में या बिखरे देख सकते हैं जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को आघात पहुंचाते हैं।

मैने बम्बई-पटना-दिल्ली तो क्या छोटे-छोटे पांच-दस परिवारों के टोले-टपरे गांवों में देखा है, पौलिथीन, सिन्थेटिक कपड़ों, चूड़ी, कलमें आदि के ढेर कचरों के रूप में। ये मनुष्य-प्राणी घाती कृमि-कीटों-मच्छरों के आश्रय स्थल हैं।

सिनेमा उद्योग एवं दूर-दर्शन प्रसारण में विकृत मनोरंजन ने मानव जाति को पूरी तरह, लफंगा-लुच्चा, चरित्रहीन, भ्रष्ट, दिशाहीन और निकम्मा बना दिया है जो मानव-जाति के विनाश का स्पष्ट पूर्वाभास है। एक पच्चीस रुपये दैनिक कमाने वाला लड़का-बच्चा भी कोई-न-कोई टेपरिकार्डर जैसा बाजा कान में लगाकर, जेब में रखकर सुनता रहता है। पान की दुकान से लेकर बड़े प्रतिष्ठान तक पैदल-साईकिल सवार से लेकर बस ट्रेन तक में अनेक-बाजे-गाजे बजते रहते हैं जो भावी मानव पीढ़ी को संभवत: श्रवण-शक्ति की शून्यता से भर दे। आंख और हृदय की बीमारियां दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं।

भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से स्वतंत्रता मिलने के बाद देश में उद्योगों का विकेन्द्रीकरण नहीं किए जाने पर रोजगार के लिए शहरों की आबादी बढ़ी। प्रदूषण फैले। नियंत्रण की आवश्यकता महसूस की गई प्रदूषण पर तिरपन वर्ष बाद।

जनवरी दो हजार एक में दिल्ली में फैक्टरियों को सील किया गया। लाखों मजदूरों का प्रत्यावर्तन गांव की ओर हो रहा है। बेरोजगार हो जाने के परिणामस्वरूप प्रदूषण नियंत्रण-उन्मूलन के दृष्टिकोण से फैक्टरियां बन्द हुईं। यह एक शुभ लक्षण है।

किन्तु यह अशुभ लक्षण भी है कि लाखों सर्वहारा मजदूर बेरोजगार हुए। भारत के स्वार्थी नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण कि उन्होंने शहरों में उद्योगों का केन्द्रीकरण किया।

औद्योगिक संस्थानों-कारखानों का विस्थापन-स्थान परिवर्तन एक लम्बा समय और आर्थिक क्षति लेगा। तब जो नए विकल्प बनेंगे, वे मुद्रास्फीति को जन्म देंगे, जिसका अवांछित भार भारत के जन-जन को अनावश्यक-अनपेक्षित रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वहन करना पड़ेगा जिसका मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण और जनसंख्या-विस्फोट, शिक्षा के बिना अनियमित जीवन प्रणाली एवं प्रदूषित पदार्थों के उत्सर्जन-निष्कासन की व्यवस्था के अभाव हैं। परिणाम पर्यावरण प्रदूषण।

अन्ततः हमें इस तथ्य पर भी आश्वस्त हो ही जाना चाहिए कि इस कृत्रिम, आयातित भोगवादी-सुविधावादी-आधिभौतिकतावादी संस्कृति की जीवन दृष्टि से अनुप्राणित हो जो जीवन के हर क्षेत्र में उपभोग-दुरुपयोग कर रहे हैं। इससे हमारा शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य तो विकृत होता ही है और अपने स्वयं के लिए ही विकास पर प्रश्न चिह्न लगाते जा रहे हैं और उसका एक भीषणतम क्रूरतम दुष्परिणाम यह है कि हम पूंजीवाद को समृद्ध करने में अपना प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समर्थन दे रहे हैं जो पूंजीवाद विश्व समतामूलक समाज की प्रतिष्ठापना का एक मात्र शत्रु है और विश्व समतामूलक समाज की प्रतिष्पना की संकल्प के स्वप्न के अभाव में मानवता सुख-शान्ति समृद्धि के लिए आदिकाल से विकल्पों के जंगल में भटकती रही है और भटकती रहेगी·····पूंजीवादी व्यवस्था ही प्रदूषण की जननी है।

पोखरिया, पूर्णिया-854326, बिहार

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कालीकट्ट की अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 4-5-2001 को समिति के अध्यक्ष एवं स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर, कालिकट्ट के उपमहाप्रबंधक श्री टी. रमेश बाबू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। समिति द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ''निष्ठा'' का विमोचन भी किया गया।

2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 46वीं बैठक दिनांक 10 मई, 2001 को केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क तथा समिति के अध्यक्ष श्री सी. सेन की अध्यक्षता में हुई। राजभाषा हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 3 सदस्य कार्यालयों यथा इंडियन एयरलाइंस= प्रथम पुरस्कार, केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र=द्वितीय पुरस्कार और इफको=तृतीय पुरस्कर से सम्मानित किया गया और उन्हें प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए गए।

3. नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, कटक की 17वीं बैठक दिनांक 23-5-2001 को उत्कल चैम्बर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज लि. कटक में आकाशवाणी कटक एवं समिति के अध्यक्ष श्री अभय कुमार पाड़ी की अध्यक्षतां में सम्पन्न हुई।

4. नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, तिरशूर की 27वीं बैठक लघु उद्योग सेवा संस्थान, त्रिशुर के निदेशक तथा समिति के अध्यक्ष श्री जगेश चंद्र पांडे की अध्यक्षता में 25-5-2001 को सम्पन्न हुई। श्री पांडे ने सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यन्वयन में नराकास बैठकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

5. दिनांक 7 जून, 2001 को क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जम्मू में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की छमाही बैठक प्रयोगशाला के निदेशक और समिति के अध्यक्ष डा. जी.एन. काज़ी की अध्यक्षता में हुई।

6. दिनांक 15 जून, 2001 को बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सभाकक्ष में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 27वीं बैठक मुद्रणालय के महाप्रबंधक और समिति के अध्यक्ष श्री एम.डी. सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

7. बैंक नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, पुणे की 23वीं बैठक भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा समिति के अध्यक्ष श्री वि.वि. करन्दीकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने समिति सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक बैंक का यह दायित्व बनता है कि वे हिंदी के माध्यम से ग्राहक सेवा को और अधिक स्वीकारें और सरल बनाने का प्रयास करें।

8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बोंगई गांव की तीसरी बैठक बोंगई गांव रिफाइनरी एवं पेट्रो केमिकल्स लि. के निदेशक तथा समिति अध्यक्ष श्री बी.के. गोगोई की अध्यक्षता में 28 जून, 2001 को सम्पन्न हुई। श्री गोगोई ने इस अवसर पर समिति के वार्षिक समाचार-पत्र का विमोचन भी किया।

9. दिनांक 12 जुलाई 2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर की 38वीं बैठक अपर मंडल रेल प्रबंधक तथा समिति के उपाध्यक्ष श्री बदरी लाल मीना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में वर्ष 2000-01 की राजभाषा शील्ड दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लि. को प्रदान की गई।

10. दिनांक 13 जुलाई, 2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तूतीकोरिन (तमिलनाडु) की 7वीं बैठक भारी पानी संयंत्र (परमाणु ऊर्जा विभाग) के महाप्रबंधक तथा समिति अध्यक्ष श्री डब्ल्यू.एस.ए. कानतैया की अध्यक्षता में हुई।

11. 16 जुलाई, 2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हासन की 13वीं बैठक इनसेट-एम.सी.एफ के निदेशक तथा समिति के अध्यक्ष श्री वाई.एम. प्रसाद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों को अधिक से अधिक हिंदी पत्राचार करने की अपील की।

12. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर की नवीं बैठक आयुध निर्माणी बोर्ड के सदस्य एवं अपर महानिदेशक और समिति के अध्यक्ष श्री बी.के. शर्मा की अध्यक्षता में 17 जुलाई, 2001 को कानुपर में हुई।

13. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर द्वारा केनरा बैंक क्षेत्रीय कार्यालय के कांफ्रेंस हाल में दिनांक 20 जुलाई, 2001 को राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में समिति के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2001-02 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम की प्रत्येक मद में दिए गए लक्ष्यों पर विस्तृत चर्चा की गई।

14. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बड़ोदरा की 37वीं बैठक 27 जुलाई, 2001 को केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क आयुक्त तथा समिति के अध्यक्ष श्री के.सी. ममगैन की अध्यक्षता में हुई। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति के संचार एवं संप्रेषण का एक सरल सशक्त एवं सक्षम माध्यम रहा है। इसलिए इसका प्रयोग केवल सरकारी कामकाज तक ही सीमित न रखकर जीवन के हर क्षेत्र में किया जाना चाहिए।

15. दिनांक 27 जुलाई, 2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पादन शुल्क उपायुक्त श्री आर. मंगवाडु की अध्यक्षता में हुई। बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय बेंगलूर की सहायक निदेशक श्रीमती मधु ऊषा आर. पंडित

उपस्थित थी। अध्यक्षीय भाषण में श्री मंगवाडु ने दैनंदिन कार्यालीन कार्य में अधिकाधिक कार्य करने के लिए सभी सदस्यों का आह्वान किया।

16. दिनांक 27 जुलाई, 2001 को मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रवीण कुमार की अध्यक्षता में गुंतकल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई। बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय मंगलूर के अनुसंधान अधिकारी श्री रामलाल शर्मा ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व किया।

17. दिनांक 30-7-2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हुगली की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता दक्षिण मध्य रेलवे हुगली के मंडल रेल प्रबंधक तथा समिति के अध्यक्ष यू.सी. दादस श्रेणी ने की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक कार्यालय में हिंदी में यथा संभव अधिक से अधिक कार्य किया जाना चाहिए।

18. बेंगलूर (बैंक) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक दिनांक 30 जुलाई, 2001 को हुई। बैठक की अध्यक्षता सिंडिकेट बैंक के महाप्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष श्री एच.आर. राव ने की। बैठक में विभिन्न बैंकों के लगभग 75 कार्यालय प्रमुख/प्रतिनिधि उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न नियमों का अनुपालन करें और दैनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें।

हिंदी कार्यशालाएं

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली

दिनांक 16 से 20 अप्रैल, 2001 तक वैज्ञानिक एवं तक़नीकी स्टाफ हेतु 5 कार्य दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन केन्द्र के उप महानिदेशक भारतेन्दू कुमार गैरोला द्वारा किया गया। कार्यशाला में 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर केन्द्र के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री जैल सिंह भी उपस्थित थे। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री गैरोला ने यह आशा व्यक्त की कि कार्यशाला राजभाषा हिंदी में कामकाज में आ रही कठिनाइयों और समस्याओं को दूर करने में बहुत हद तक उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करना हमारा सांविधिक दायित्व है जिसका निर्वाह हमें हर हालत में करना चाहिए। कार्यशाला में प्रतिभागियों को प्रशासनिक टिप्पण और प्रारूपण लिखने का अभ्यास कराया गया।

पूर्वी भंडार प्रभाग (ग्रेफ), द्वारा 99 सेना डाकघर

25 से 28 मई 2001 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन लेफ्टिनेंट कर्नल आर.एन.रैना, कमान अधिकारी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि भंडार प्रभाग एक प्रकार का तकनीकी भंडार है। सभी वाहनों के पार्ट्स और पुर्जों आदि का नाम हिंदी में लिखने और पढ़ने की आदत बनी हुई है। उन्होंने कहा कि इन सभी पुर्जों के नामों को देवनागरी में लिखने की आदत बनाने के लिए इस कार्यशाला का अत्यधिक महत्व है। कार्यशाला में प्रभाग के 17 अधिकारियों ने भाग लिया।

सशस्त्र चिकित्सा सामान, कांदीवली (पूर्व)

18 और 19 जून, 2001 को 2 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कार्यालयी हिंदी, हिंदी शिक्षण योजना, प्रोत्साहन योजनाओं, व्याख्यान तथा टिप्पण और प्रारूप लेखन आदि का अभ्यास अभ्यार्थियों को कराया गया।

एन.सी.सी. निदेशालय, सैक्टर-9ए चण्डीगढ़

19 जून, 2001 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रतिभागियों को हिंदी शब्द ज्ञान की जानकारी दी गई।

जल एवं विद्युत परामर्शी सेवाएं (भारत) मर्यादित

दिनांक 26 जून, 2001 को कार्यालय परिसर में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रशासन एवं वित्त स्कंध के कार्मिकों के अलावा पर्यावरण प्रभाग के तकनीकी अधिकारियों एवं

वैज्ञानिकों ने भाग लिया। जल संसाधन मंत्रालय के निदेशक श्री निशेन्दु ओझा ने प्रतिभागियों को हिंदी की संवैधानिक स्थिति संबंधी जानकारी दी। कार्यशाला में 28 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्पोरेशन बैंक, निशातगंज, लखनऊ

22-23 जून, 2001 को लिपिकों के लिए द्वि-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश उत्तरांचल, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में स्थित बैंकों की शाखाओं के लिपिकों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन डा० रमेश कुन्तल ''मेघ'' ने किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिंग व्यवसाय के विस्तार हेतु हिंदी भाषा एक सशक्त माध्यम है। इससे बैंक का ग्राहक आधार बढ़ेगा। बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री एच.एस.सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को साथ लेकर ही हम हिंदी का विकास कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में हिंदी भाषा को बैंकिंग कारोबार की भाषा बनाकर हम अपने कारोबार में आशातीत वृद्धि कर सकते हैं।

आवास एवं नगर विकास लिमिटेड, हडको भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली

कलकत्ता स्थित पूर्वांचल कार्यालय में 5-6 जुलाई, 2001 को आंचलिक स्तन पर दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पूर्वांचल और उत्तर पूर्वांचल स्थित हडको के सभी कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्षों, नोडल अधिकारियों तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यकारी निदेशक श्री पी.आर. दास ने कार्यशाला की अध्यक्षता की। मुख्यालय के प्रमुख (राजभाषा) श्री सोम प्रकाश सेठी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों का ध्यान वर्ष 2001-02 के वार्षिक कार्यक्रम की ओर आकृष्ठ करते हुए सभी को इन निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का अनुरोध किया। प्रतिभागियों को राजभाषा नीति नियम/अधिनियम की जानकारी दी गई। रोजमर्रा के काम में इस्तेमाल होने वाली कुछ टिप्पणियां लिखवाई गई और प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण किया गया और इसी प्रकार की कार्यशाला का आयोजन क्रमशः 11-12-13 जुलाई को देहरादून 6 जुलाई, 2001 को पश्चिम आंचलिक कार्यालय, मुम्बई में भी किया गया।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, भगवान दास रोड, जयपुर

9 से 10 जुलाई, 2001 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ लेखा परीक्षकों को लेखा परीक्षकों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को हिंदी में लेखा परीक्षा टिप्पणियां लिखना, कंप्यूटर पर कार्य करना, सरकारी कार्य हिंदी में करने का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया।

कल्याण एवं उपकर आयुक्त का कार्यालय दक्षिण सिविल लाईन्स, जबलपुर

9 से 13 जुलाई, 2001 तक पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कल्याण आयुक्त श्री शफ़ीक अहमद ने किया। उन्होंने कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया। प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, मानक हिंदी, वर्तनी, पत्राचार के विविध रूपों, टिप्पण, आलेखन, हिंदी में तार सहित हिंदी कार्यशाला के लिए मानक पाठों का अभ्यास कराया गया। कार्यशाला में 20 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

आकाशवाणी, चैन्नई

24 से 26 जुलाई, 2001 तक कार्यशाला का आयोजन किया है जिसका उद्घाटन केन्द्र निदेशक श्री बा.रा. कुमार ने किया। प्रतिभागियों को हिंदी टिप्पण, कार्यालयीन हिंदी, हिंदी व्याकरण का सामान्य ज्ञान, राजभाषा हिंदी, प्रशासनिक और पारिभाषिक शब्दावली पर प्रतिभागियों को जानकारी दी गई और अभ्यास कराया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक नोट मुद्रणालय, देवास)

समिति के तत्वावधान में दिनांक 24 से 26 जुलाई, 2001 तक 3 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुद्रणालय के वित्त सलाहकार एवं वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री एस.पी. सिंह ने सरकारी कामकाज में हिंदी की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रशिक्षणार्थियों को अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक (राजभाषा) डा. आलोक कुमार रस्तोगी ने किया।

यूरेनियम कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, सिंहभूमि (पूर्व) झारखंड

कार्पोरेशन के अधिकारियों और कर्मचारियों के दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से 25 से 27 जुलाई, 2001 तक 3 दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्घाटन मुख्य प्रबंधक (कल्याण एवं प्रशा.) श्री के. महाली ने किया। प्रतिभागियों को हिंदी टिप्पण, प्रारूप लेखन, हिंदी में लिखने और छोटे-छोटे वाक्यांश हिंदी में बनाने का अभ्यास कराया गया।

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे

अवर श्रेणी लिपिकों के लिए हिंदी साफ्टवेयर आईलिप दिनांक 27 जुलाई, 2001 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अनुसंधान अधिकारी डा. विद्या प्रसाद शुक्ल ने वर्तमान में प्रयोग में आने वाले साफ्टवेयर शब्दरत्न, अक्षर तथा विन्डोज वातावरण पर आधारित आईलिप साफ्टवेयर के बारे में विस्तृत जानकारी अधिकारियों को दी।

3899 H.A./2001—6A

स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड,जवाहर लाल नेहरू रोड, कलकत्ता

दिनांक 2 जुलाई, 2001 को पूर्वी क्षेत्र कलकत्ता में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन क्षेत्रीय प्रबंधक श्री वी.के. अमेटा ने किया। मुख्य कार्मिक प्रबंधक श्री बर्मन ने राजभाषा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि अधिकारीगण, सभी कर्मचारियों को हिंदी में काम शुरू कर देना चाहिए।

इंडियन ओवरसीज बैंक, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता

9 अगस्त, 2001 को क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न शाखाओं के 17 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन उप महाप्रबंधक श्री बी.बी. पटनायक ने किया। उन्होंने सभी सदस्यों से बैंकिंग कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आग्रह किया। सहायक महाप्रबंधक (महानगर) श्री रंजीत कुमार साहा ने कहा कि ग्राहक की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को जानने के लिए उससे उसकी भाषा में सम्पर्क करना जरूरी है।

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, सैक्टर 30-सी, चण्डीगढ़

27 और 28 अगस्त, 2001 को 2 अर्द्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन तथा सूक्ष्म जीव प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ के 34 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन सूक्ष्म जीव प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डा. अमित. घोष ने किया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डा. मीरा गौतम ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज हिंदी प्रौद्योगिकी से जुड़ रही है। विभिन्न प्रकार की तकनीकी सुविधाएं सुलभ हैं। इस स्थिति में हिंदी में कार्य करने की विवशता नहीं होनी चाहिए। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया। हिंदी सीखने के लिए एक रस्म, एक रिवाज, एक परीक्षा के सीमित दायरे से निकल कर हिंदी को जीवन में उतारना होगा। कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, हिंदी टिप्पण और प्रारूपण आदि विषयों पर जानकारी दी गई और अभ्यास कराया गया।

भारी पानी संयंत्र (ऊर्जा विभाग) तूतीकोरिन,

24 और 25 सितम्बर, 2001 को संयंत्र के 17 कर्मचारियों के लिए 22वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को भाषा संरचना, व्याकरण हिंदी शिक्षण योजना, प्रोत्साहन योजनाओं तथा राजभाषा अधिनियम/नियम आदि की जानकारी दी गई। उप महाप्रबंधक श्री एस. सुंद्रेशन ने प्रतिभागियों को अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया।

3899 H.A./2001—6B

लीला-हिंदी-प्रवीण साफ्टवेयर का प्रमोचन

14 सितम्बर, 2001 को हिंदी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा लीला-हिंदी-प्रवीण साफ्टवेयर का प्रमोचन किया गया। इस अवसर पर गृह राज्य मंत्री श्री आई.डी. स्वामी, मंत्रिमंडल सचिव श्री टी.आर. प्रसाद तथा गृह सचिव श्री कमल पांडे के अलावा केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, जाने-माने विद्वान और साहित्यकार तथा हिंदी सेवी उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गृह मंत्री जी ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रसार ने मानव समाज के सभी पहलुओं को प्रभावित किया है। भाषा उनमें से एक है। आज कम्प्यूटर तकनीकी के विकास और इंटरनेट के प्रसार से भाषा वैज्ञानिकों का एक ऐसा वर्ग उभरा है जो भाषा में तो निपुण है ही, साथ ही तकनीक में भी दक्ष है। भारत सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व शक्ति के रूप में उभरा है। आज का युग डिजिटल क्रांति का युग कहा जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति सूचना प्रौद्योगिकी के साथ-साथ हिंदी में भी प्रवीणता रखता है तो वह इस क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए सक्षम सिद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि हमें सामाजिक स्तर पर एकता के लिए भाषाई स्तर पर भी एकता के लिए पूरे प्रयास करने चाहिए। भाषाओं की विविधता वाले इस देश में सभी भाषाएं एक मजबूत कड़ी के रूप में आपस में राजभाषा हिंदी के साथ जुड़ जाती हैं। राजभाषा हिंदी का यही विशेष महत्व है।

इससे पूर्व माननीय गृह मंत्री जी और गृह राज्य मंत्री जी का स्वागत करते हुए गृह सचिव श्री कमल पांडे ने यह विश्वास जताया कि सारा सरकारी कामकाज हिंदी में करना संभव भी है और समाज हित में भी है। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक तंत्र और आधारभूत ढांचा चूंकि अंग्रेजीमुखी है इसीलिए अधिकारी अक्सर अंग्रेजी के प्रयोग की ओर मुड़ जाते हैं। साथ ही अधिकारियों और कर्मचारियों के मन में एक अबूझ झिझक उसे हिंदी का प्रयोग करने से रोकती है। आवश्यकता इस दुविधा पर विजय पाने की है।

गृह राज्य मंत्री श्री आई.डी. स्वामी ने अपने सम्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान तथा राष्ट्रीय चिह्न की भांति राजभाषा हिंदी भी देश की गरिमा और गौरव का प्रतीक बन गई है। हिंदी को समृद्ध करने और विश्व की प्रमुख भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है कि इसे ज्ञान-विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाए। उन्होंने संघ व राज्यों में प्रयोग की जाने वाली राजभाषा हिंदी के शब्दों में एकरूपता लाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। लीला-हिंदी-प्रवीण साफ्टवेयर तैयार करने के लिए उन्होंने राजभाषा विभाग को बधाई देते कहा कि हिंदी के प्रशिक्षण में कम्पयूटर और मल्टी मीडिया टैक्नालॉजी की आधुनातन उपलब्धियों का भरपूर उपयोग संभव हो जाएगा।

गृह राज्य मंत्री ने कहा कि लीला-हिंदी-प्रवीण साफ्टवेयर स्वयं शिक्षक साफ्टवेयर विकास श्रृंखला की दूसरी कड़ी है। इस श्रृंखला की प्रथम कड़ी में दो वर्ष पूर्व राजभाषा हिंदी के स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति जी ने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की उपस्थिति में इसी भवन में लीला-हिंदी-प्रबोध नामक साफ्टवेयर का प्रमोचन किया था। उन्होंने कहा कि इस साफ्टवेयर से हिंदी सीखने वाले प्रशिक्षणार्थियों, पर्यटकों तथा व्यापारियों को सुविधा होगी।

सी-डैक, पुणे के कार्यपालक निदेशक श्री आर.के. अरोड़ा ने यह बताया कि हिंदी में साफ्टवेयर निर्माण श्रृंखला की तीसरी कड़ी के रूप में लीला-हिंदी-प्राज्ञ नामक साफ्टवेयर साफ्टवेयर के निर्माण का कार्य भी चल रहा है। कृत्रिम बुद्धि प्रणाली पर आधारित कई महत्वपूर्ण अनुप्रयोग भी विकसित किए गए हैं जिनमें सबसे प्रमुख है राजभाषा विभाग के सहयोग से विकसित अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद प्रणाली मंत्रा, जो इस समय नियुक्ति, तबादला आदि से संबंधित अधिसूचनाओं का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री मदन लाल गुप्ता ने विभाग द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक विधाओं पर हिंदी में स्तरीय पुस्तक लेखन को बढ़ावा लेने के लिए एक पुरस्कार लेखन योजना शुरू की गई है जिसमें प्रथम पुरस्कार राशि एक लाख रूपए है। समय की मांग को देखते हुए विभाग द्वारा कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

विज्ञान भवन के सभागार में गंधर्व महाविद्यालय के कलाकारों द्वारा द्वारा वृंदगान और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अन्त में, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री मदन लाल गुप्ता ने समारोह में उपस्थित सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

राजभाषा संगोष्ठी

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा दिनांक 13-8-2001, 16-8-2001 तथा 18-8-2001 को तीन कार्यदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें नराकास के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री सुरेश चंद्र जैन, उपनिदेशक श्री बागीश तिवारी, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि ने ''संकलन-पुस्तिका'' का लोकार्पण किया। मुख्य अतिथि श्री जैन ने ''कार्यालयीन कामकाज और राजभाषा की स्थिति व भूमिका'' विषय पर अपने लम्बे अनुभवों तथा गहन ज्ञान के आधार पर कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा की भूमिका, अपेक्षाओं, संवैधानिक व विधिक प्रावधानों को बड़े ही सरस रूप में व्यक्त करते हुए अंग्रेजी के प्रति मोहग्रस्त होने के विविध ऐतिहासिक, सामाजिक व अन्य कारणों की व्याख्या करते हुए वर्तमान स्थिति का गहन विश्लेषण किया तथा सभी प्रतिभागी अधिकारियों से इस कार्य को राष्ट्रीय महत्व के कार्य के

समान महत्व देते हुए अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति में अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करने का भरपूर प्रयास करने की अपील की।

वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक ने संगोष्ठी के आयोजन तथा ''संकलन पुस्तिका'' के संपादन, संयोजन तथा प्रस्तुति में सहायक प्रबंधक (हिंदी) की निष्ठा व समर्पण के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत में आज के माहौल में संगोष्ठी का आयोजन निश्चित रूप से एक पुनीत प्रयास है। लेकिन प्रतिभागी अधिकारियों द्वारा अधिकतम काम हिंदी में करने से ही इसकी सार्थकता है। उन्होंने विभिन्न देशों में राजभाषा की स्थिति व गरिमा के साथ उनकी उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए आशा व्यक्त की कि राष्ट्र के कर्णधार अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति व दूरदर्शिता का परिचय देते हुए इस दिशा में उल्लेखनीय, ठोस, सार्थक व सकारात्मक कदम उठाएं ताकि विश्व मंच पर राष्ट्र की गरिमा कलंकित न हो।

दिनांक 16-8-2001 को द्वितीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का संचालन करते हुए श्री मथुरा सिंह, सहायक प्रबंधक (हिंदी) ने विस्तार से ''राजभाषा के स्वरूप'' के संबंध में प्रतिभागी अधिकारियों को अवगत कराया तथा ''हिंदी के मानक वर्तनी व मौलिक व्याकरण'' के मूल बिन्दुओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया।

दिनांक 18-8-2001 को तृतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. चौरसिया ने ''मानव और भाषा'' के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए हर परिस्थिति-स्थान-काल-पात्र के अनुसार भाषागत परिवर्तन को बड़े प्रभावशाली ढंग से पेश करते हुए यह कहा कि अंग्रेजी के स्थान पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग कर वास्तव में हम राष्ट्र की सेवा करते हैं।

शांति-निकेतन में 14वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राष्ट्रीय महात्मा गांधी की 172वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, रूपाम्बरा द्वारा विश्व भारती, शान्ति निकेतन में 2 से 4 अक्तूबर को 14वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन नौवहन राज्य परिवहन मंत्री श्री हुक्मदेव नारायण यादव ने किया। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने सम्मेलन स्मारिका ''रूपाम्बरा'' तथा हिंदी के विकास यात्रा का विमोचन किया। सम्मेलन में मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों आदि के कार्यपालकों/अधिकारियों/सुप्रसिद्ध साहित्यकारों/विद्वानों तथा गणमान्य अतिथियों ने भाग लिया। मंत्री महोदय ने कहा कि राष्ट्रीय हिंदी अकादमी ने राजभाषा सम्मेलनों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जो कार्य किया है वे सचमुच ही प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में प्रस्तावित सुझावों/प्रस्तावों और संकल्पों को राजभाषा विभाग के अनुदेशों के तहत भारत सरकार के सभी मंत्रालयों में क्रियान्वित भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी की प्रगति में कोई रोक या विरोध नहीं बल्कि अवरोध है जिसके निदान के लिए आत्मचिन्तन की आवश्यकता है। अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए अपने स्वार्थ को त्यागना होगा।

प्रतिनिधियों, अतिथियों, साहित्यकारों का सम्मेलन में स्वागत करते हुए अकादमी ने कहा कि अध्यक्ष श्री स्वदेश भारती ने कहा कि मनुष्य भाषा के संस्कार से सुख शान्ति और राष्ट्रीय प्रेम की धारा प्रवाहित करता है। भाषा ही मनुष्य को संस्कार देती है। भाषा ही जन मन को राष्ट्र के प्रति प्रेरित करती है। उन्होंने बताया कि पहली बार जब गांधी जी शान्ति निकेतन पधारे थे तो रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने ''आइए महात्मा'' कहकर उनका स्वागत किया था। गांधी जी उसी दिन से ''महात्मा'' कहलाए। उत्तर में गांधी जी ने रवीन्द्र नाथ ठाकुर को ''कविगुरू'' कह कर संबोधित किया था उसी दिन से रवीन्द्रनाथ ठाकुर ''कविगुरू'' कहलाये। इन दोनों विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए यह सम्मेलन शान्ति निकेतन में आयोजित किया है।

इस अवसर पर ''आवारा मसीहा'' के चर्चित रचनाकार श्री विष्णु प्रभाकर को ''शरतचंद्र राष्ट्रीय साहित्य सम्मान'' से अलंकृत किया गया। बंगला की प्रख्यात लेखिका कवयित्री नवनीता देव सेन को महादेवी वर्मा राष्ट्रीय साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। डा. भोलानाथ मिश्र तथा श्री पृथ्वीनाथ शास्त्री को राष्ट्रभाषा रत्न प्रदान किया गया।

अकादमी के मानद अध्यक्ष डा. रत्नाकर पाण्डेय ने कहा कि जब तक हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया नहीं जाता, तब तक हमारी आजादी मुकम्मल नहीं हो सकती। विश्व भारती के अध्यक्ष प्रो. रामेश्वर मिश्र ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि जिस स्थान पर यह राष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा है, उसी स्थान पर, मूर्धन्य साहित्यकार, विद्वान, आलोचक डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लगभग 30 वर्ष से अधिक समय तक हिंदी सेवा की। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रेरणा से हिंदी भवन की स्थापना की, जिसका उद्घाटन पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने किया। डा. अमित्र सूदन भट्टाचार्य, अध्यक्ष, विद्या भवन ने हिंदी में बोलते हुए कहा कि यह विश्व भारती का परम सौभाग्य है कि राष्ट्रीय हिंदी अकादमी का इतना बड़ा सम्मेलन इस पवित्र भूमि पर आयोजित किया जा रहा है और यह उम्मीद व्यक्त की कि ऐसे कार्यों से सभी भारतीय भाषाओं को एकसूत्र में बांधा जा सकेगा। डा. रुकमाजी राव ''अमर'', निदेशक, राष्ट्रीय हिंदी अकादमी ने प्रतिनिधियों एवं अतिथियों के प्रति अभार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय हिंदी अकादमी भारतीय भाषाओं के बीच सौहार्द स्थापित करने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। हम सिर्फ हिंदी का प्रचार-प्रसार ही नहीं करते हैं, बल्कि बंगला, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि भाषाओं के साहित्यकारों के उन्नयन का काम भी कर रहे हैं। अकादमी ने अब तक भारतीय भाषाओं के लगभग 70 विशिष्ट साहित्यकारों को सम्मानित किया है। डा. महेन्द्र कार्तिकेय ने कहा कि हिंदी राष्ट्रभाषा तभी बनेगी, जब हम राष्ट्रीय धारा के प्रति समर्पित और आस्थावान होंगे।

अकादमी के मानद अध्यक्ष डा. रत्नाकर पाण्डेय ने कहा कि आजादी के बाद हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया जाता तो राष्ट्रीयता, एकता और अखण्डता के लिए इतने संघर्ष झेलने नहीं पड़ते। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि हिंदी राष्ट्रभाषा और राष्ट्रसंघ की भाषा बन कर रहेगी।

हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन तथा राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार केन्द्र विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/राष्ट्रीकृत बैंकों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों द्वारा 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कुछ कार्यालयों ने हिंदी सप्ताह और पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया। जिन कार्यालयों ने इन समारोहों का आयोजन किया उनका नाम नीचे दिए गए है :—

आयकर आयुक्त का कार्यालय, लुधियाना।

प्रसार भारती, आकाशवाणी, चेन्नई

दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, इलाहाबाद।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल।

मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, नागपुर।

सहायक भविष्य निधि आयुक्त का कार्यालय, कड़प्पा।

आकाशवाणी, चण्डीगढ़।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय, रायपुर।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, चण्डीगढ़।

आकाशवाणी, कट्टक।

भारी पानी संयंत्र, तालचेर (उड़ीसा)।

प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र, इन्दौर।

आकाशवाणी, इलाहाबाद।

मुख्य आयुक्त का कार्यालय, वड़ोदरा।

पश्चिम रेलवे, मंडल कार्यालय, रतलाम।

आकाशवाणी, तुरा।

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, जोधपुर।

दूरदर्शन केन्द्र, नई दिल्ली।

आकाशवाणी केन्द्र, अगरतला।

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, गृह मंत्रालय, कांडला, गुजरात।

तार निदेशालय, कृषि मंत्रालय, पूसा, नई दिल्ली।

आकाशवाणी आलप्पुषा।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, लखनऊ।

रक्षा लेखा नियंत्रक का कार्यालय, पुणे।

भारत संचार निगम लिमिटेड, दूरसंचार जिला, लखनऊ।

भारत सरकार दूरसंचार जिला, बरेली।

भारत संचार निगम लिमिटेड, नासिक।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पुणे।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कानपुर।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन लि., रंगीत नगर, सिक्किम।

केन्द्रीय मत्सय नौचाल, एवं इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान, कोचीन।

बैस्टन कोलफील्डस लिमिटेड, नागपुर।

इंडियन ड्रग्स एंड फार्मेस्टिकल लिमिटेड, हैदराबाद

भारतीय खाद्य निगम, कोलकाता।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, दरीबा (राजस्थान)।

इंडियन आइल कार्पोरेशन, हल्दिया।

भारत हैवी इलैक्ट्रिकल लिमिटेड, भोपाल।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापन, बेंगलूर।

भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम, कानपुर।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (पश्चिम बंगाल)।

केन्द्रीय जालमा कुष्ठ रोग संस्थान, ताजगंज, आगरा।

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे।

भारत हैवी प्लेट एंड वैसल्ज लिमिटेड, विशाखापट्टनम।

केन्द्रीय इलैक्ट्रानिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी, राजस्थान।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्कोदगामा।

विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान, काक्कुड्डी, तमिलनाडु।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे।

दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।

आई.डी.बी.आई. भुवनेश्वर।

इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ।

बैंक आफ महाराष्ट्र, पुणे।

पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली।

इलाहाबाद बैंक, बुद्ध मार्ग, पटना।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा।

सैन्ट्रल बैंक, आंचलिक कार्यालय, दिल्ली।

इंटरनेट साइट में हिंदी भाषा का प्रसार

—विजय प्रभाकर adolanr@vsnl.com

सूचना प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश में हिंदी भाषा ने अपना स्थान धीरे-धीरे प्राप्त कर लिया है। आज हमारी मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत है। आधुनिकीकरण के दौर में भाषा भी अपना स्थान ग्रहण कर लेती है। हिंदी की उपादेयता पर कोई भी प्रश्नचिह्न लगा नहीं सकता। लेकिन संकुचित स्वार्थ के कारण भारतीय भाषाओं को नकारना हमारी मानसिक गुलामी की निशानी है।

आज भले ही चीन, जापान, रूस, जर्मनी, अरब आदि अंग्रेज़ीतर देशों ने अपनी भाषा में विकास किया हो, लेकिन भारत में अगर राजभाषा, संपर्क भाषा, लोकभाषा को हम विकसित नहीं कर पाए तो यह हमारी हार होगी। जिस देश के नवयुवकों ने कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रणाली को विकसित किया है, उसी देश की जनता को विदेश की ओर मुंह ताकना पड़ता है। इस स्थिति में बदलाव लाने की जरूरत है। भाषा का संबंध जिस तरह मन, बुद्धि से होता है, उसी तरह उसका संबंध हर व्यक्ति के रोजी-रोटी तथा पारिवारिक विकास से भी जुड़ा होता है। इसीलिए सूचना प्रौद्योगिकी के नए तंत्र को समझ लेना चाहिए।

निम्नलिखित इंटरनेट साइट पर हिंदी सहित प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त संपर्क सूत्र, ई-मेल, सॉफ्टवेयर आदि की जानकारी उपलब्ध है—

1. www.dol.nic.in

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की इस साइट पर राजभाषा हिंदी संबंधित नियम, अधिनियम, वार्षिक कार्यक्रम, तिमाही, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक विवरण, हिंदी सीखने के लिए लिला-प्रबोध पैकेज आदि महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है। इस साइट पर उपलब्ध जानकारी सभी सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, उद्यमों के लिए उपयुक्त है।

2. www.rajbhasha.com

इस साइट पर राजभाषा हिंदी सम्बन्धित नियम, साहित्य, व्याकरण, शब्दकोश, पत्रकारिता, तकनीकी सेवा, हिंदी संसार, पूजा-अर्चना, हिंदी सीखें आदि संपर्क सूत्र उपलब्ध हैं।

3. www.indianlanguages.com

इस साइट पर हिंदी सहित सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए साहित्य, समाचार-पत्र, ई-मेल, सर्च-इंजन आदि महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

4. www.tdil.gov.in

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (Technology Development for Indian Languages) नामक इस साइट पर राजभाषा हिंदी विकास संबंधित तकनीकी जानकारी, सॉफ्टवेयर अनुसंधानरत संगठनों की जानकारी, भारत सरकार की योजना-भाषा-2010 आदि उपलब्ध है। इस साइट की इलेक्ट्रॉनिक पत्रिका "विश्व भारत" अत्यंत उपयोगी है।

5. www.cdacindia.com

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के लिए इस साइट पर सॉफ्टवेयर, तकनीकी विकास संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। हिंदी, मराठी, संस्कृत और कोंकणी भाषाओं के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

6. www.dictionary.com

इस साइट पर विश्व की प्रमुख भाषाओं के शब्दकोश, अनुवाद समानार्थी शब्दकोश, वैब, डिरेक्टरी, वायरलेस मोबाइल शब्दकोश तथा व्याकरण संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

7. भारतीय वैब सर्च इंजन—

1. www.searchindia.com
2. www.jadoo.com
3. www.khoj.com
4. www.iloveindia.com
5. www.123india.com
6. www.samilan.com
7. www.samachar.com
8. www.search.asiaco.com
9. www.rekha.com
10. www.sholay.com
11. www.locateindia.com.
12. www.mapsofindia.com
13. www.webdunia.com
14. www.netjal.com

8. www.rosettastone.com

इस साइट पर हिंदी सहित विश्व की सभी भाषाओं को सीखने के लिए इलेक्ट्रॉनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। विश्व की 80 भाषाओं का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु पर्यटकों के लिए Gold Partner V6 नामक डिजिटल डायरी उपलब्ध है।

9. www.wordanywhere.com

इस साइट पर किसी भी अंग्रेजी शब्द का हिंदी समानार्थी शब्द तथा किसी हिंदी शब्द का अंग्रेजी समानार्थी शब्द प्राप्त किया जा सकता है।

10. हिंदी में ई-मेल की सुविधाएं—

1. **www.epatr.com**
2. **www.mailjol.com**
3. **www.langoo.com**
4. **www.cdacindia.com**
5. **www.bharatmail.com**
6. **www.rediffmail.com**
7. **www.webdunia.com**
8. **www.danikjagran.com**

11. www.bharatdarshan.co.nz

न्यूजीलैण्ड में बसे मूल भारतीय लोगों ने इस साइट पर हिंदी साहित्य, कविताएं, लघुकथाएं, व्याकरण आदि सामग्री प्रस्तुत की है।

12. www.boloji.org

पारिवारिक रंगारंग पत्रिका जिसमें हिंदी साहित्य, कला, संस्कृति आदि संबंधित संकलन उपलब्ध हैं।

13. www.unl.ias.unu.edu

टोक्यो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस साइट पर हिंदी सहित विश्व की 15 भाषाओं के विकास के लिए अनुसंधान कार्य जारी है। इस योजना का नाम *Universal Net Working Languages* रखा गया है, जिसमें सभी शब्दकोश तथा अनुवाद-कार्य के सहारे विश्व शांति एवं एकता स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

14. www.hindinet.com

इस साइट पर हिंदी भाषा सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी, संपर्क-सूत्र उपलब्ध है।

15. www.microsoft.com/india/hindi2000

विश्वप्रसिद्ध माइक्रोसॉफ्ट कंपनी ने हिंदी भाषा के लिए एम एस ऑफिस-2000 पैकेज विकसित किया है। इसमें चैटिंग (गपशप), समाचार-पत्र आदि सुविधाएं हैं।

16. www.cstt.nic.in

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा विकसित इस साइट पर प्रशासनिक शब्दकोश सहित अनेक विषयों के तकनीकी शब्दकोश प्रस्तुत किए गए हैं। हिंदी, अंग्रेजी के लिए उपलब्ध शब्दकोश कार्यालयों के लिए काफी उपयोगी हैं।

17. www.ciil.org

केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, भारत सरकार ने सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए इस साइट का निर्माण किया है। सभी भारतीय भाषाओं में पारस्परिक आदान-प्रदान बढ़ाने के लिए यह संस्थान विशेष कार्य कर रहा है।

18. www.gadnet.org

इस साइट पर हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी की कविताएं, गीत आदि साहित्य उपलब्ध है।

19. www.nidatrans.org

इस साइट पर हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, भाषाओं के लिए अनुवाद डीटीपी आदि सेवा उपलब्ध है।

20. www.shamema.com

इस साइट पर हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, पश्तु, पख्तु, पश्तो भाषाओं के लिए समानार्थी शब्द प्राप्त किए जा सकते हैं।

21. www.hindibhasha.com

इस साइट पर हिंदी भाषा के लिए उपयुक्त जानकारी उपलब्ध है।

संपर्क : प्रभात कालोनी,
कलानगर, गुलमोहर मार्ग,
अहमदनगर-414004
(महाराष्ट्र)

आदेश-अनुदेश

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) का दिनांक 19 अक्तूबर, 2001 का कार्यालय ज्ञापन सं. 14034/36/2001/रा.भा. (प्रशि.)

विषय :—अहिंदी भाषी राज्यों में मैट्रिक स्तर तक की हिंदी का ज्ञान प्राप्त केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी के सेवा-कालीन प्रशिक्षण की अनिवार्यता।

केंद्र सरकार के जिन कर्मचारियों ने 30 मई, 1988 से पूर्व अहिन्दी भाषी राज्यों से मैट्रिक तक हिंदी तीसरी भाषा के रूप में पढ़ी है, उनके लिए प्राज्ञ का प्रशिक्षण अनिवार्य है अथवा नहीं, इस संबंध में विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, केन्द्रीय कार्यालयों आदि से समय-समय पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए अनुरोध प्राप्त होते रहे हैं। इस मामले पर पुन:विचार किया गया तथा इस विभाग के दिनांक 30-5-1988, 10-3-1989, 11-4-1989 एवं 3-4-1990 के कार्यालय ज्ञापन सं. 14013/1/85-रा.भा.(घ) का अधिक्रमण करते हुए अब निम्नलिखित निर्णय लिए गए हैं:—

1. केंद्रीय सरकार के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अहिंदी भाषी राज्य/संघ शासित क्षेत्रों से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है तथा हिंदी में 33 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किए हैं, उनके संबंध में यह माना जाएगा कि उन्हें हिंदी के प्रबोध स्तर का ज्ञान प्राप्त है, ऐसे कर्मचारियों को हिंदी के प्रवीण स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा तथा उन्हें प्रवीण पाठ्यक्रम में तभी दाखिला दिया जा सकता है, यदि पात्रता के अनुसार उनके लिए प्रवीण का पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम हो। यद्यपि इन्हें प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर व्यैक्तिक वेतन देय नहीं है, परन्तु वे इस विभाग के दिनांक 14-5-1969 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 15/1/69 एच-1 और दिनांक 29-10-1984 के कार्यालय ज्ञापन संख्या-12011/5/83-रा.भा.(घ) में विहित शर्तें पूरी करने पर नकद पुरस्कार एवं एकमुश्त पुरस्कार पाने के पात्र हैं।

2. केंद्रीय सरकार के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अहिंदी भाषी राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है तथा हिंदी में 33 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं, उनके संबंध में यह माना जाएगा कि उन्हें हिंदी के प्रवीण स्तर का ज्ञान प्राप्त है। ऐसे कर्मचारियों को हिंदी के प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा तथा उन्हें प्राज्ञ पाठ्यक्रम में तभी दाखिला दिया जा सकता है, यदि पात्रता के अनुसार उनके लिए प्राज्ञ का पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम हो। प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को इस विभाग के

दिनांक 2-9-1976 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12014/2/76-रा.भा. (डी) और दिनांक 14-2-1979 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12014/1/78-रा.भा. (डी) में की गई व्यवस्था के अनुसार वैयक्तिक वेतन देय होगा और वे दिनांक 14-5-1969 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 15/1/69-एच-1 एवं दिनांक 29-10-1984 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12011/5/83-रा.भा. (घ) में विहित शर्तें पूरी करने पर क्रमशः नकद व एकमुश्त पुरस्कार के भी पात्र होंगे।

3. यदि किसी अधिकारी/कर्मचारी ने अहिंदी भाषी राज्य/संघ शासित क्षेत्र से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है और उसके पश्चात् बी.ए. की परीक्षा हिंदी विषय के साथ पास की है तो ऐसे अधिकारी/कर्मचारी को हिंदी का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता नहीं है।

4. यदि कोई अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा नियम 10 (1)(ख) के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में यह घोषित करता है कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके लिए हिंदी के प्रवीण अथवा प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य नहीं होगा।

यह आदेश केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/अधीनस्थ एवं संबद्ध कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों/निकायों इत्यादि के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों पर लागू होंगे जो वर्तमान में सरकारी सेवा में हैं, भले ही वे दिनांक 30-5-1988 से पूर्व भर्ती हुए हों।

पाठकों के पत्र

इससे पूर्व कि कुछ और कहूं, सर्वप्रथम आपके सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका ''राजभाषा भारती'' अंक-94 (जुलाई-सितम्बर, 2001) के उत्कृष्ट एवं उच्च कोटि के सम्पादन के लिए हमारी ओर से बधाई स्वीकार करें।

पूर्व की भांति हिंदी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों के समाचारों की औपचारिकताओं से अलग उक्त पत्रिका में वह सभी कुछ है जो किसी आदर्श एवं श्रेष्ठ पत्रिका में होना चाहिए। भारतीय बाङ्मय में काल निर्णय लेख इतना अच्छा है कि मानस पटल पर इसकी गूढ़ता और बहुमूल्यता को बैठाने के लिए बार-बार पढ़ने को मन करता है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में कैंसर एक जानलेवा रोग एवं अन्य लेख भी ज्ञानवर्धक एवं जानकारीप्रद है। अन्ततः पत्रिका की सफलता पर बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपके सानिध्य में पत्रिका उत्तरोत्तर सफलता की ओर अग्रसर रहेगी।

श्री म.प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक-रा.भा. कार्यान्वयन, सी.एम.सी. लिमिटेड, 1, रिंग रोड, किलोकरी, नई दिल्ली-110014.

आप द्वारा प्रेषित पत्रिका प्राप्त हुई, धन्यवाद। नित्यप्रति आपके निर्देशन में ''राजभाषा भारती'' के अंक विशेषांकों की भी सज्जा लिए होते हैं। अपने उर्वर रचनाकर्मियों को जोड़कर एवं

पत्रिका के कलेवर में रचनात्मक परिवर्तन कर अपनी कुशल संपादकीय सूझबूझ का परिचय दिया है। ऐसे रचनात्मक कार्यों से जहां भाषा का विकास संभव है वहीं दैनिक कार्य व्यवहार में भी इसकी भूमिका सराही जाएगी। इसी कार्य के लिए ''विकल्प'' परिवार की ओर से सभी सहकर्मियों को साधुवाद।

डा. दिनेश चमोला, संपादक ''विकल्प'', भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्) हरिद्वार रोड, मोहकमपुर, देहरादून-248005.

माह जनवरी अंक में डा. श्याम नारायण शुक्ल, भूदेव शर्मा, डा. शशि तिवारी, डा. सुरेन्द्र अरोड़ा द्वारा लिखित लेखों में अमेरिका व इंग्लैंड में निवास कर रहे अप्रवासी भारतीयों के गौरव व प्रतिभा के बारे में जानकर हृदय गद्‌गद हो उठा। डा. विश्वम्भर प्रसाद ''गुप्तबंधु'' द्वारा लिखित लेख ''तकनीकी शिक्षा का माध्यम और भारतीय भाषाएं'' में यह उद्‌गार स्पन्दित कर गया कि विश्व का सबसे पहला विश्वविद्यालय ईसा से 700 वर्ष पूर्व तक्षशिला में विद्यमान था तथा जिसमें विश्व भर के 10,500 छात्र अध्ययनरत थे। नि:संदेह हमारा देश जगत गुरू रहा है और भविष्य में भी यही विश्व का मार्गदर्शन करेगा। आज के परिप्रेक्ष्य में हमें भी नोतन लाल द्वारा लिखित लेख राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार-सरदार पटेल जैसे नेताओं की नितान्त आवश्यकता है।

श्री गुलशन लाल चोपड़ा, हिंदी अधिकारी, आसूचना ब्यूरो, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।

प्र.भा.स.मु.रिं.रों.न.दि.—3899 एच.ए./2001—2000.